राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अक्टूबर - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

शारदीय नवरात्रि...

पूजा और आराधना के लिए समर्पित पर्व

तिरुमाला लड्डू...

प्रसादम विवाद

'महात्मा पुरस्कार' ...

से सम्मानित प्रो. अच्युत सामंत जी

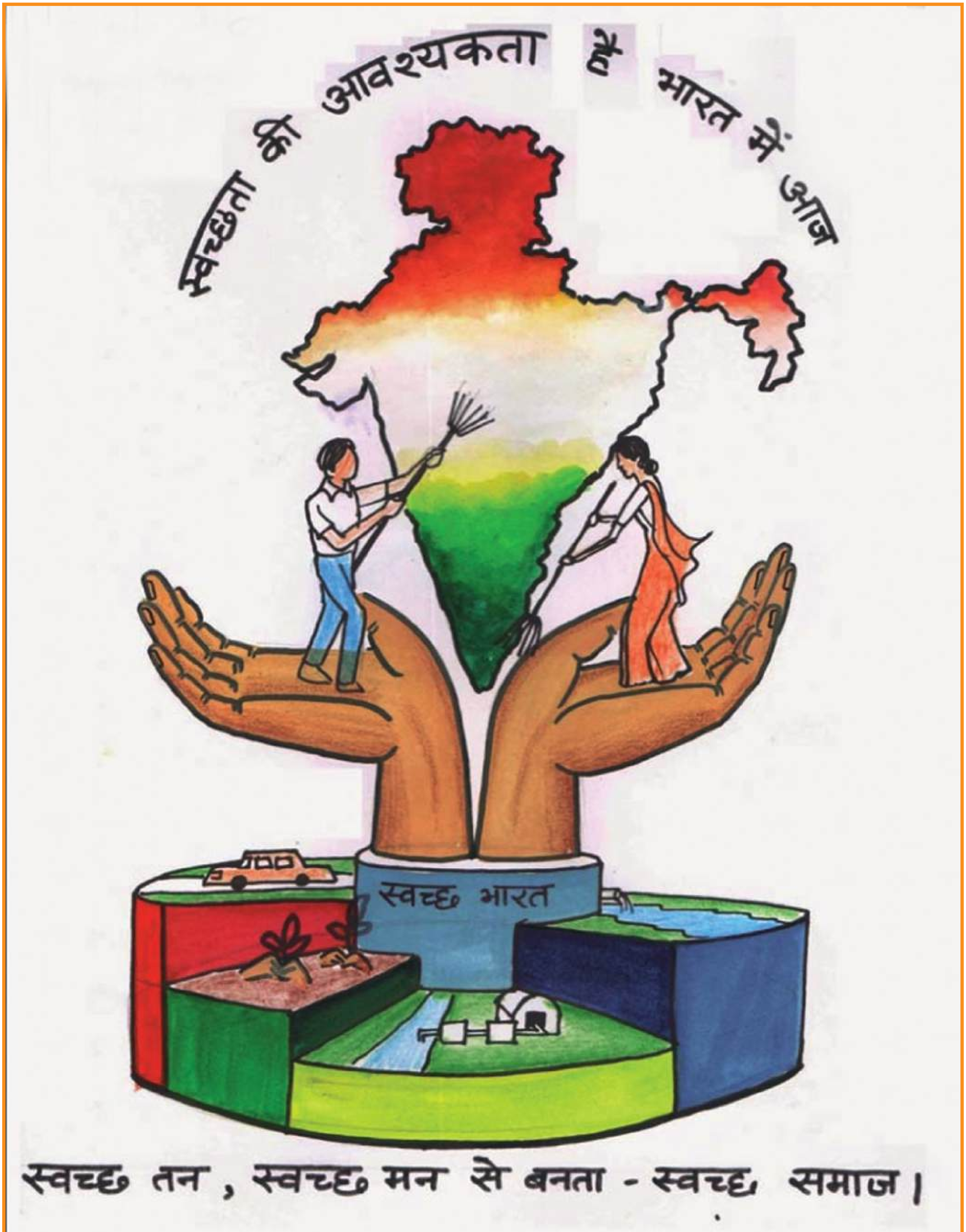
स्वच्छता की आवश्यकता है भारत में आज
स्वच्छ भारत
स्वच्छ तन , स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
• वर्ष : 9 • अंकः 07 • मुंबई • अक्टूबर-2024

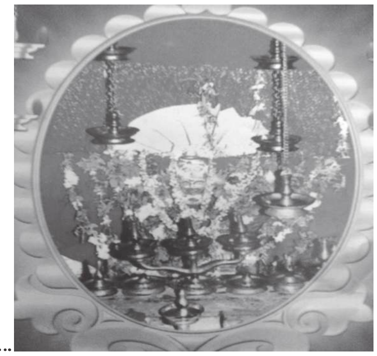

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला, संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय
Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

देवी दुर्गा की पूजा और आराधना ..	06
पितृ पक्ष का महत्व	11
विवादों में तिरुपति मंदिर का लड्डू	14
पकवान	20
राशिफल	24
सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक महाकालेश्वर मंदिर...	26
सिनेमा	29
पेरिस ओलंपिक और पैरालिंपिक में भाग लेने वाले KIIT एथलीटों ...	30
देश-दुनिया	32
विविधा	34
पैरासिटामॉल सहित ५३ दवाएं क्वालिटी टेस्ट में फेल...'	37
उपहार ..	40
एक छोटा-सा मज़ाक	43
दूसरी नाकी ...	46
'फसलों की रानी'	56

सुविचारः

सादगी से बड़ा कोई श्रृंगार नहीं है और विनम्रता से बड़ा कोई व्यवहार नहीं है।' -अशोक पाण्डेय

इलेक्ट्रिक कारों के लिए रियायतें...

इलेक्ट्रिक कारों पर दी जाने वाली रियायतों पर परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के विचार से कोई भी सहमत होगा। केंद्र सरकार में होने के बावजूद नितिनभाई के विचार हमेशा वास्तविकता के करीब होते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उन्हें व्यक्त करने में संकोच नहीं करते हैं। चाहे वह वर्तमान शासन के बारे में हो या चिकित्सा बीमा पर कर लगाने के बारे में। नितिनभाई चुप नहीं रहते, उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि कोई क्या सोचेगा। वे जोर से बोलते हैं। अब भी, उन्होंने इलेक्ट्रिक कारों को दी जाने वाली रियायतों के बारे में इसी तरह की टिप्पणी की। मौका था वर्ल्ड इलेक्ट्रिसिटी मोटर डे का। यह एक वास्तविक दिन-प्रतिदिन का मामला है, और विश्व इलेक्ट्रिक मोटर दिवस (ईवी) दिवस उनमें से एक है। इस मौके पर गडकरी ने सवाल किया कि वह कब तक इन इलेक्ट्रिक कारों को रियायतें देते रहेंगे। यह बहुत ही उचित है। इसका सीधा सा आर्थिक कारण यह है कि सामान्य अनुभव यह है कि यह क्षेत्र, जो ऐसी रियायतों के बल पर विस्तार करता है, रियायतें वापस लेने पर सिकुड़ जाता है। इस बात का कोई आश्वासन नहीं हो सकता है कि वह इसके साथ नहीं आएगा। इसलिए, रियायती क्षेत्र का विकास कृत्रिम है। दिवाली या क्रिसमस पर बड़े-बड़े दुकानदार डिस्काउंट की बौछार कर ग्राहकों को आकर्षित करते हैं। जब ये त्योहार खत्म हो जाते हैं, तो खरीद-बिक्री का लेन-देन बंद हो जाता है। इसलिए, इस तरह की रियायती वृद्धि अस्थायी और भ्रामक है। गडकरी के बयान का यही मतलब है। बेशक, वह यह भी स्पष्ट करता है कि उसे यह तय करने का अधिकार नहीं है कि रियायतों को जारी रखना है या बंद करना है। इसलिए उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर टिप्पणी करने से पहले, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इलेक्ट्रिक कारों के लिए रियायतें हैं।

वाहनों से कार्बन उत्सर्जन पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं; वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को विकसित करने के विचार के साथ, केंद्र सरकार ने इलेक्ट्रिक कारों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए एक योजना की घोषणा की। इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण का फास्टर एडॉप्शन उर्फ फेम २०१५ में लॉन्च किया गया था। इनमें इलेक्ट्रिक कारों के निर्माताओं के लिए पूंजी निवेश पर प्रोत्साहन, कर छूट, वित्तीय सब्सिडी आदि शामिल थे। फेम १ ने इलेक्ट्रिक मोटर्स की नींव रखी। यह आवश्यक था। हालांकि, उद्योग के लिए वास्तविक गति प्रसिद्धि -२ के दूसरे चरण में थी, जो २०१९ में रिलीज हुई थी। ओला, ईथर, बजाज आदि जैसे निर्माताओं ने इन छूटों के आधार पर इलेक्ट्रिक वाहनों का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया। इस समय के आसपास ईथर जैसी एक पूरी नई कंपनी उभरी। इस दूसरी रियायत अवधि में, मोटर निर्माताओं के साथ कारों में स्पेयर पार्ट्स (यानी ओईएम) के निर्माताओं के लिए एक मजबूत आर्थिक प्रोत्साहन था। नतीजतन, इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माताओं को अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था।

हालांकि, वाहन निर्माताओं को भी इस बहने वाली छूट पर साथ मिला। जब उन्हें इलेक्ट्रिक कार के लिए आवश्यक चार्जर मुफ्त में उपलब्ध कराने थे, तो उन्होंने ग्राहकों से पैसे भी वसूले। यानी उन्होंने वह उत्पाद लिया जिसके लिए इन निर्माताओं को केंद्र सरकार ने रियायतें दी थीं; लेकिन इसने चार्जर भी बेच दिए। सरकार के पास ऐसी कई शिकायतें आने के बाद इन रियायतों पर पुनर्विचार किया गया। तो हुआ यह कि इस साल मार्च से सरकार ने फेम-२ रियायतों पर स्टैंड लेना शुरू कर दिया। वह सही था। इनमें से कुछ छूट उपभोक्ताओं के साथ थी, जैसा कि निर्माता थे। इसका मतलब है कि वाहन पंजीकरण छूट, आदि। कुछ राज्यों ने इसे वापस लेना भी शुरू कर दिया और केंद्र ने भी इस पर आंखें मूंद लीं। इस समय तक, इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग बढ़ रही थी और इसलिए रियायतें देने की आवश्यकता थी। यह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खींचा गया था। लेकिन नतीजा यह हुआ कि इस साल मार्च से इन कारों की बिक्री में तेजी से गिरावट आई। इन छूटों को रद्द करने या कम करने का काम अघोषित रूप से किया गया था। इससे इन मोटर निर्माताओं में घबराहट पैदा हो गई और बिक्री प्रभावित हुई। यह गिरावट कितनी होनी चाहिए? इस साल मार्च में देशभर में २,१३,०३६ इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री हुई। इस महीने के अंत में छूट पकड़ ली, और अगले महीने बिक्री गिरकर ११५,८५० हो गई। मई में गिरावट १४०,००० और जून में १३९,००० थी। अगले जुलाई में इन वाहनों की बिक्री में १७८,००० की मामूली गिरावट देखी गई, और अगस्त में फिर से लगभग २०,००० की गिरावट देखी गई।

यह आज हमारे इलेक्ट्रिक वाहनों की वास्तविकता है। आज स्थिति यह है कि शहरों में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स की बिक्री में काफी बढ़ोतरी होती दिख रही है। इसी समय, खाद्य वितरण प्रदाताओं, ग्रॉसर्स आदि के रूप में वाहनों की संख्या में वृद्धि हुई, इलेक्ट्रिक वाहनों से संपर्क किया। हालांकि, यात्री वाहनों की प्रतिक्रिया इतनी उत्साहजनक नहीं रही है। यह स्वाभाविक है। इसकी वजह वाहनों को 'चार्ज' करने की सुविधाओं की कमी और उन सुविधाओं के प्रमाणन की कमी है। साथ ही, इस अवधि के दौरान प्राकृतिक गैस आधारित वाहनों की बिक्री में काफी वृद्धि हुई और इन गैसों को भरने की सुविधाएं भी बढ़ीं, जिससे ये वाहन उपभोक्ताओं के लिए अधिक आकर्षक हो गए। बजाज जैसी पारंपरिक दोपहिया वाहन निर्माताओं ने दुनिया में पहली बार प्राकृतिक गैस से चलने वाली मोटरसाइकिल लॉन्च की। तो ऐसे माहौल में अगर बाजार को न सिर्फ जिंदा रखना है बल्कि फलना-फूलना है तो इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए प्रतियोगिता और भी कठिन हो गई।

यह सच है। इसके मद्देनजर गडकरी उद्योग को दी जाने वाली रियायतों को खत्म करने की मांग कर रहे हैं। उनके मुताबिक इन गाड़ियों के 'प्रसार' को देखते हुए इनकी कीमतें भी पेट्रोल और डीजल गाड़ियों के स्तर पर आ जानी चाहिए और अगर ऐसा होता है तो इस सेक्टर में रियायतें जारी रखने की जरूरत नहीं है। हालांकि, अगर गडकरी का सुझाव वास्तविकता बन जाता है, तो यह निश्चित है कि इन वाहनों की मांग कम हो जाएगी। इसकी वजह इन वाहनों का फैलाव है। सरकारी प्रचार इतना तीव्र था कि जो लोग इस पर विश्वास करते थे '... अब पारंपरिक ईंधन पर कारें सेट हो गई हैं', ऐसा लगता है। उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि यह वास्तविकता कितनी 'सच' है। इस सब प्रचार के बावजूद, ये कारें पारंपरिक वाहनों का १० प्रतिशत भी नहीं हैं। इसके कई कारण हैं। यह इलेक्ट्रिक वाहनों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने और अत्यधिक प्रदूषित तरीके से कोयला जलाने का एक पक्षपात है। जितनी जल्दी इस पर ध्यान दिया जाए, पर्यावरण के लिए उतना ही अच्छा है। इसके लिए इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माताओं को छूट की मार झेलनी होगी। ■

महाराष्ट्र में २६ नवंबर से पहले होंगे विधानसभा चुनाव

मुंबई, मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के नेतृत्व में चुनाव आयोग की टीम ने महाराष्ट्र के दो दिवसीय दौरे को सफलतापूर्वक समाप्त किया। इस दौरे के दौरान आयोग ने प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें कीं और विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। महाराष्ट्र में २६ नवंबर से पहले होंगे विधानसभा चुनाव. मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर जानकारी दी।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने बताया महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव २६ नवंबर से पहले कराए जाएंगे, क्योंकि वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल तब समाप्त हो रहा है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने बताया कि लोकतंत्र में सभी नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए महाराष्ट्र में १,८६,००० मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा, 'महाराष्ट्र में पंजीकृत मतदाताओं की कुल संख्या ९.५९ करोड़ है।'

राजीव कुमार ने आगे बताया कि महिला मतदाताओं की संख्या में २२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा, 'हम शहरी क्षेत्रों में १००इ मतदान केंद्रों पर ण्ण्ऊ्न कवरेज सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ५०इ से अधिक केंद्रों को कवर करने की योजना है।' उन्होंने बताया कि इस बार विधानसभा की २८८ सीटों के लिए ९.५९ करोड़ मतदाता होंगे, जिनमें से ४९,०३९ मतदाता सौ साल से अधिक उम्र के हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त ने यह भी बताया कि ३५० मतदान केंद्रों का प्रबंधन युवा करेंगे, २९९ का प्रबंधन दिव्यांगों के द्वारा होगा, और ३८८ केंद्रों का प्रबंधन केवल महिलाओं द्वारा किया जाएगा।

महाराष्ट्र में पुणे मेट्रो का उद्घाटन, ११,२०० करोड़ रुपये की है परियोजना

उद्घाटन की जाने वाली प्रमुख परियोजनाओं में जिला न्यायालय से स्वारगेट तक पुणे मेट्रो खंड है, जो पुणे मेट्रो रेल परियोजना (चरण -१) के पूरा होने का प्रतीक है। इस परियोजना के भूमिगत खंड, जिसकी लागत लगभग ₹१,८१० करोड़ है, से पुणे में शहरी परिवहन में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी २९ सितंबर को लगभग १२:३० बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से महाराष्ट्र में ११,२०० करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करने के लिए तैयार हैं। उद्घाटन की जाने वाली प्रमुख परियोजनाओं में जिला न्यायालय से स्वारगेट तक पुणे मेट्रो खंड है, जो पुणे मेट्रो रेल परियोजना (चरण -१) के पूरा होने का प्रतीक है। इस परियोजना के भूमिगत खंड, जिसकी लागत लगभग ₹१,८१० करोड़ है, से पुणे में शहरी परिवहन में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है।

इसके अतिरिक्त, प्रधान मंत्री बिडकिन औद्योगिक क्षेत्र को समर्पित करेंगे और नए सोलापुर हवाई अड्डे का उद्घाटन करेंगे, जिससे महाराष्ट्र में बुनियादी ढांचे और आर्थिक विकास को और बढ़ावा मिलेगा। पीएम कार्यालय ने कहा कि इन परियोजनाओं का उद्देश्य कनेक्टिविटी में सुधार करना और राज्य में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना है। इससे पहले गुरुवार को, पीएम मोदी की पुणे की योजनाबद्ध यात्रा शहर में भारी बारिश के कारण रद्द कर दी गई थी। वह गुरुवार को मेट्रो कॉरिडोर को हरी झंडी दिखाने और २२,६०० करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करने वाले थे। भारी बारिश ने एसपी कॉलेज मैदान में तैयारियों को भी प्रभावित किया, जिसे कार्यक्रम स्थल के रूप में नामित किया गया था। इस परियोजना से पुणे की बढ़ती शहरी आबादी को काफी लाभ होने की उम्मीद है।

देवी दुर्गा की पूजा और आराधना के लिए समर्पित पर्व नवरात्रि...

हिंदू धर्म में देवी-देवताओं और त्योहारों का विशेष महत्व होता है। नवरात्रि का त्योहार भी ऐसे ही खास अवसरों में से एक है। नवरात्रि के त्योहार में नौ दिनों तक लगातार मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। साल में चार बार नवरात्रि का त्योहार आता है। हालांकि इसमें सबसे ज्यादा महत्व शारदीय नवरात्रि का होता है। यह अश्विन माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाई जाती है। इस विशेष पर्व पर मां के सभी भक्त पूरे नौ दिनों तक माता की पूजा करते हैं, उपवास रखते हैं और नौवें दिन कन्या पूजन करते हैं। इन नौ दिनों में मां दुर्गा अपने सभी भक्तों की प्रार्थना सुनती हैं और भक्तों को अपना आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

शारदीय नवरात्रि का प्रारंभ पितृ पक्ष के समापन के बाद यानी आश्विन आमवस्या के बाद ही होता है. आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को कलश स्थापना के साथ शारदीय नवरात्रि का शुभारंभ होता है. यह नवरात्रि शरद ऋतु में आती है, इसलिए इसे शारदीय नवरात्रि कहते हैं. एक नवरात्रि चैत्र माह में आती है, उसे चैत्र नवरात्रि के नाम से जानते हैं. इन दो नवरात्रि के अलावा दो गुप्त नवरात्रि भी होती हैं. शारदीय नवरात्रि के समय में कोलकाता में प्रसिद्ध दुर्गा पूजा का आयोजन होता है. शारदीय नवरात्रि के ९ दिनों में मां दुर्गा के ९ स्वरूपों की विधि विधान से पूजा करते हैं. दुर्गा अष्टमी या महा अष्टमी के

शारदीय नवरात्रि २०२४ कैलेंडर

शारदीय नवरात्रि का पहला दिनः ३ अक्टूबर, गुरुवारः घटस्थापना, शैलपुत्री पूजा
शारदीय नवरात्रि का दूसरा दिनः ४ अक्टूबर, शुक्रवारः ब्रह्मचारिणी पूजा
शारदीय नवरात्रि का तीसरा दिनः ५ अक्टूबर, शनिवारः चंद्रघंटा पूजा
शारदीय नवरात्रि का चौथा दिनः ६ अक्टूबर, रविवारः विनायक चतुर्थी
शारदीय नवरात्रि का पांचवा दिनः ७ अक्टूबर, सोमवारः कूष्मांडा पूजा
शारदीय नवरात्रि का छठा दिनः ८ अक्टूबर, मंगलवारः स्कंदमाता पूजा
शारदीय नवरात्रि का सातवां दिनः ९ अक्टूबर, बुधवारः कात्यायनी पूजा
शारदीय नवरात्रि का आठवां दिनः १० अक्टूबर, गुरुवारः कालरात्रि पूजा
शारदीय नवरात्रि का नौवां दिनः ११ अक्टूबर, शुक्रवारः दुर्गा अष्टमी, महागौरी पूजा
शारदीय नवरात्रि का दसवां दिनः १२ अक्टूबर, शनिवारः नवमी हवन, दुर्गा विसर्जन, विजयादशमी, दशहरा, शस्त्र पूजा

दिन कन्या पूजा, नवमी को हवन और दशमी के दिन शारदीय नवरात्रि का समापन हो जाता है.

शारदीय नवरात्रि २०२४ का शुभारंभ

वैदिक पंचांग के अनुसार, इस साल आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि का प्रारंभ २ अक्टूबर को देर रात १२:१८ बजे से होगा. यह तिथि ४ अक्टूबर को तड़के ०२:५८ बजे तक मान्य रहेगी. ऐसे में उदयातिथि के आधार पर इस साल शारदीय नवरात्रि का प्रारंभ ३ अक्टूबर दिन गुरुवार से हो रहा है. ३ अक्टूबर से शुरू हो रहे शारदीय नवरात्रि का कलश स्थापना करने के लिए दो शुभ मुहूर्त प्राप्त हो रहे हैं. कलश स्थापना के लिए सुबह में शुभ मुहूर्त ६ बजकर १५ मिनट से सुबह ७ बजकर २२ मिनट तक है. सुबह में घट स्थापना के लिए आपको १ घंटा ६ मिनट का समय प्राप्त होगा. इसके अलावा दोपहर में भी कलश स्थापना का मुहूर्त है. यह सबसे अच्छा समय माना जाता है. दिन में आप ११ बजकर ४६ मिनट से दोपहर १२ बजकर ३३ मिनट के बीच कभी भी कलश स्थापना कर सकते हैं. दोपहर में आपको ४७ मिनट का शुभ समय प्राप्त होगा. दुर्गा अष्टमी आश्विन शुक्ल अष्टमी तिथि को मनाई जाती है. इस साल दुर्गा अष्टमी ११ अक्टूबर दिन शुक्रवार को है. उस दिन कन्या पूजा की जाएगी. इस साल महा नवमी भी ११ अक्टूबर को ही है. महानवमी का हवन १२ अक्टूबर शनिवार को होगा.

कब करें शारदीय नवरात्रि में घटस्थापना ?

शारदीय नवरात्रि में कलश स्थापना करना, सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में से एक होता है। घटस्थापना नवरात्रों की शुरुआत का प्रतीक है। यह अनुष्ठान प्रतिपदा तिथि अर्थात नवरात्र के शुरुआती दिन पर किया जाता है। साल २०२४ में कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त ०३ अक्टूबर २०२४, सुबह ०६ बजकर १९ मिनट से दोपहर ०७ बजकर २३ मिनट तक है।

सबसे पहले सुबह उठकर ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करें और साफ़ वस्त्र पहनें। पूरे घर को शुद्ध करने के बाद मुख्य द्वार की चौखट पर आम के पत्तों का तोरण लगाएं। पूजा के स्थान को साफ करें और गंगाजल से पवित्र कर लें। अब वहां चौकी लगाएं और माता की प्रतिमा स्थापित करें। इसके बाद उत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा में कलश की स्थापना करें। कलश स्थापना के लिए पहले एक मिट्टी के बर्तन में जौ के बीज बोएं। फिर एक तांबे के कलश में पानी और गंगाजल डालें। कलश पर कलावा बांधें और आम के पत्तों के साथ उसे सजाएं। इसके बाद उसमें दूब, अक्षत और सुपारी डालें। उसी कलश पर चुनरी और मौली बांध कर एक नारियल रख दें। सामग्री का उपयोग करते हुए विधि-विधान से मां दुर्गा का पूजन करें।

दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। अंत में मां दुर्गा की आरती करें और प्रसाद का वितरण करें।

शारदीय नवरात्रि पूजा सामग्री

शारदीय नवरात्रि में दुर्गा मां के अलग-अलग रूपों की विधि-विधान के साथ पूजा की जाती है। पूजा सामग्री के रूप में कुमकुम, फूल, देवी की मूर्ती या फोटो, जल से भरा कलश, मिट्टी का बर्तन, जौ, लाल चुनरी, लाल वस्त्र, मौली, नारियल, साफ चावल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, बताशे या मिसरी, कपूर, श्रृंगार का सामान, दीपक, घी / तेल, धूप, फल-मिठाई व कलावा आदि शामिल है।

शारदीय नवरात्रि का महत्व

शारदीय नवरात्रि को महानवरात्रि या अश्विन नवरात्रि के रूप में भी जाना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, जब भगवान राम, माता सीता और अपने भाई लक्ष्मण के साथ १४ साल के लिए वनवास गए थे, तो वहां रावण ने धोखे से माता सीता का हरण कर लिया था। इसके बाद भगवान राम ने माता सीता की रक्षा के लिए रावण से युद्ध किया और उस पर विजय प्राप्त की। तभी से इस दिन को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाने लगा। इसके पीछे एक और पौराणिक कथा भी मौजूद है। जिसके अनुसार, मां दुर्गा ने नौ दिनों तक दुष्ट राक्षस महिसासुर से युद्ध किया था और दसवें दिन उसे पराजित किया था। इसलिए लगातार नौ दिनों तक भक्त माता की उपासना करते हैं और उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस समय पूरी श्रद्धा से मां दुर्गा की पूजा करने से आपके सभी कष्ट दूर हो सकते हैं और आप एक समृद्ध जीवन की शुरुआत कर सकते हैं।

चैत्र और शारदीय नवरात्रि में क्या अंतर होता है ?

चैत्र और शारदीय नवरात्रि दो प्रमुख हिन्दू त्योहार हैं, जो भारत में विशेष धार्मिक महत्व रखते हैं। हर साल चैत्र नवरात्रि (मार्च-अप्रैल) और शारदीय नवरात्रि (सितंबर-अक्टूबर) मास में मनाए जाते हैं। इस प्रकार चैत्र नवरात्रि वसंत ऋतु में मनाई जाती है, जबकि शारदीय नवरात्रि शरद ऋतु के आगमन को दर्शाती है। चैत्र नवरात्रि के दौरान, हम नौ दिनों तक मां दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं। फिर, नौवें दिन, राम नवमी मनाते हैं। वहीं शारदीय नवरात्रि में हम दुर्गा महानवमी और विजयदशमी के साथ नवरात्रों का समापन करते हैं।

नवरात्रि के नौ रंग ...

नवरात्रि के त्योहार में रंगों का भी विशेष महत्व होता है। इन नौ दिनों के लिए नौ अलग-अलग रंगों को चुना जाता है। अगर आप नौ दिनों तक इन रंगों को पहनते हैं और देवी मां की पूजा करते हैं तो यह आपको बेहद शुभ परिणाम देता है।

पहले दिन- साल २०२४ में नवरात्रि के पहले दिन आपको नारंगी रंग के कपड़े पहनने चाहिए। नारंगी रंग को पहन कर पूजा करने से आपको बहुत सकारात्मक महसूस होगा।

दूसरे दिन- इस दिन सफ़ेद रंग के वस्त्र धारण करें। यह रंग आपको आत्मशांति और बेहतर महसूस करवाने में सहयोग करेगा।

तीसरे दिन- नवरात्रि के तीसरे दिन लाल रंग को दिनचर्या में जरूर शामिल करें। आप इस रंग का प्रयोग माता की पूजा के लिए भी कर सकते हैं क्योंकि लाल रंग माता को अतिप्रिय होता है।

चौथे दिन- गहरा नीला रंग नवरात्रि के चौथे दिन सबसे शुभ रहेगा। नीला रंग समृद्धि और शान्ति लाता है। इस रंग के वस्त्र पहनें और माता का ध्यान करें।

पांचवे दिन- पीले रंग के कपड़े पहनने से आप खुश और सकारात्मक महसूस कर सकते हैं। पीला एक नर्म और मन को खुशी देने वाला रंग है। यह आपका दिन अच्छा बनाएगा।

छठवें दिन- नवरात्रि के छठवें दिन हरा रंग पहनें। हरा रंग प्रकृति से जुड़ा होता है, यह सभी चीज़ों के फलदायी, शांतिपूर्ण और स्थिर होने का संकेत देता है। देवी की प्रार्थना करते समय हरा रंग पहनना, आपको शांति महसूस करवा सकता है।

सातवें दिन- इस दिन स्लेटी रंग पहनें। यह आपकी सोच को संतुलित करने में मदद करेगा। इसकी ऊर्जा से आप अधिक व्यावहारिक हो सकते हैं।

आठवें दिन- नवदुर्गा पूजा के दौरान आठवें दिन बैंगनी रंग का उपयोग करें। इससे आपको समृद्धि और सफलता प्राप्त हो सकती है। इसलिए, अगर आप देवी मां का आशीर्वाद चाहते हैं, तो यह रंग अवश्य चुनें।

नौवें दिन- नवरात्रि के नौवें दिन आपको मोर वाला हरा रंग पहनना चाहिए। यह हरे और नीले रंग से मिल कर बनता है। यह रंग समृद्धि से जुड़ा होता है।

शारदीय नवरात्रि के दौरान, अगर आप पूरी श्रद्धा के साथ ऊपर दिए हुए नियमों का पालन करेंगे तो आपको मां दुर्गा का आशीर्वाद जरूर प्राप्त होगा। मां दुर्गा इन नौ दिनों तक सभी भक्तों की प्रार्थना सुनती हैं और उनके कष्ट दूर करती हैं। तो आइए इन नौ दिनों के त्योहार को अपने परिवार के साथ मिलकर मनाएं और मां दुर्गा से सभी के सुखी जीवन की कामना करें।

नवरात्रि विशेष

३ अक्तूबर से शारदीय नवरात्रि की शुरुआत हो रही है, जिसका समापन ११ अक्तूबर २०२४ को नवमी के दिन होगा। वहीं १२ अक्तूबर को विजयदशमी का पर्व मनाया जाएगा। ये नौ दिनों की अवधी माता रानी की पूजा अर्चना को पूरी तरह से समर्पित है। इस दौरान देवी दुर्गा के ९ अलग-अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है, जिनमें शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, और सिद्धिदात्री माता का नाम शामिल है। शारदीय नवरात्रि में न केवल घरों में बल्कि मंदिरों से लेकर पूजा पंडाल में माता रानी का भव्य स्वागत किया जाता है। इस दौरान देवी की आराधना करने से हर मनोकामनाएं पूरी होती हैं, और जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है। वहीं इस बार गुरुवार से शारदीय नवरात्रि की शुरुआत होने के कारण माता का आगमन पालकी में होगा। देवीपुराण के अनुसार गुरुवार से नवरात्रि की शुरुआत होने पर देवी का आगमन पालकी में होता है। इस दौरान कुछ खास बातों का ध्यान रखा जाता है, जिससे व्रत और पूजा का संपूर्ण फल मिलता है।

माता को ऐसे करें प्रसन्न...

३ अक्तूबर से माता रानी के शारदीय नवरात्रि का श्रीगणेश हो रहा है. शारदीय नवरात्रि का समापन ११ अक्तूबर को नवमी तिथी पर होगा. नवमी तिथी के अगल् ही दिन विजयदशमी यानी दशहरा का पर्व मनाया जाएगा. विजयदशमी यानी दशहरा का पर्व १२ अक्तूबर को मनाया जाएगा. शारदीय नवरात्रि का पर्व विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है. प. बंगाल में माता रानी के भव्य पांडाल सजते है. ९ दिनों तक धार्मिक कार्यक्रम और अनुष्ठान होते है. ये नौ दिनों की अवधी माता रानी की पूजा अर्चना को पूरी तरह से समर्पित है. इन नौ दिनों में शक्ति की पूजा की जाती है. नवरात्रि के नौ दिनों के दौरान माता रानी के भक्त उपवास करते है और देवी के नौ स्वरूपों की पूजा करते हैं.

माता रानी का भव्य स्वागत और पूजा की विशेष बातें

शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर हर साल घरों, मंदिरों और पूजा पंडालों में माता रानी का भव्य स्वागत किया जाता है. इस शुभ समय में देवी दुर्गा की आराधना से हर मनोकामना पूरी होती है, और जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है. इस बार नवरात्रि की शुरुआत गुरुवार से हो रही है, जिससे देवी का आगमन पालकी में होने की मान्यता है.

देवीपुराण के अनुसार, जब नवरात्रि का आरंभ गुरुवार से होता है, तो माता रानी पालकी पर सवार होकर पधारती हैं. इस दौरान पूजा और व्रत का संपूर्ण फल प्राप्त करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है.

स्वच्छता का ध्यान रखें

शारदीय नवरात्रि के दिनों में घर के कौने-कौने की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए. इस दौरान कही भी धूल व गंदगी को इकट्ठा न होने दें. मान्यता है कि जिस घर में गंदगी होती हैं, वहां धन की देवी मां लक्ष्मी का वास नहीं होता है. इसलिए स्वच्छता का खास ध्यान रखें.

घर को खाली न छोड़े

यदि आप नवरात्रि में कलश स्थापना के साथ-साथ अखंड ज्योत जा रहे हैं, तो भूलकर भी घर को खाली ना छोड़ें. इस दौरान घर में किसी न किसी सदस्य का मौजूद होना बेहद जरूरी होता है।

बाल ना कटवाएं

शास्त्रों के अनुसार नवरात्रि के दिनों में बाल और दाढ़ी नहीं कटवानी चाहिए. इस दौरान नाखून भी न काटे. ऐसा करने से आपको अशुभ परिणामों की प्राप्ति हो सकती हैं.

सात्विक भोजन करें

नवरात्रि के दिनों में सात्विक भोजन का सेवन करना चाहिए. इस दौरान घर में लहसुन-प्याज का उपयोग न करें. साथ ही परिवार में भी किसी को इसका सेवन नहीं करना चाहिए.

दिन में नहीं सोना चाहिए

व्रत रख रहे लोगों को दिन में नहीं सोना चाहिए. इसके अलावा किसी की बुराई और मन में नकारात्मक विचारों को लाने से बचना चाहिए. मान्यता है कि इससे व्रत खंडित हो सकता है.

पितृ पक्ष का महत्व

गयाजी में ही क्यों किया जाता है पिंडदान?

पितृ पक्ष हिंदुओं के लिए अपने पूर्वजों को सम्मान देने और परिवार की भलाई और समृद्धि के लिए उनका आशीर्वाद लेने का समय है। ऐसा माना जाता है कि इस अवधि के दौरान अनुष्ठान करने और प्रसाद चढ़ाने से पूर्वजों की आत्माओं को शांति और मुक्ति मिलती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे अपने वंशजों को खुशी और सफलता का आशीर्वाद देते हैं। पितृ पक्ष के इन दिनों में पूर्वजों की रुचि के भोजन, फल, मिष्ठान आदि का दान कर उन्हें प्रसन्न किया जाता है. उनका आशीर्वाद मिलने पर पितृ दोष तक से मुक्ति संभव है. ऐसा माना जाता है कि श्राद्ध तीन पीढ़ी तक किए जा सकते हैं और इन्हें करने का अधिकार पुत्र, पौत्र, भतीजे और भांजे को है. इस बार किसी तिथि का क्षय नहीं है. इसलिए सभी सोलह दिन तर्पण-अर्पण किया जा सकता है. इन दिनों में पितृ अपने परिजनों के घर आते हैं और अपने घर-परिवार के लोगों को आशीर्वाद देते हैं.

हर साल पितृ पक्ष का प्रारंभ भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि से होता है. पितृ पक्ष के १५ से १६ दिनों में पितरों के लिए तर्पण, श्राद्ध, पिंडदान आदि किया जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पितृ पक्ष के समय में पितरों का निवास धरती पर होता है. जो पितर तृप्त या अतृप्त होते हैं, सब के लिए ही तर्पण, श्राद्ध आदि किए जाते हैं. जिन लोगों पर पितृ दोष होता है, वे भी पितृ पक्ष में उससे मुक्ति के उपाय कर सकते हैं. अपने नाराज पितरों को खुश कर सकते हैं. पितृ पक्ष में तर्पण, श्राद्ध आदि के लिए १६ तिथियां होती हैं. हर पितर की अपनी एक निश्चित तिथि होती है, उस तिथि पर उनके लिए तर्पण, श्राद्ध आदि करते हैं. जिनकी तिथि मालूम नहीं होती है, उनके लिए भी व्यवस्था है. वैसे आप पितृ पक्ष में सभी दिन आप अपने पितर को तर्पण दे सकते हैं. इस साल पितृ पक्ष की शुरूआत १७ सितंबर को भाद्रपद पूर्णिमा तिथि से हो रहा है. उस दिन श्राद्ध की पूर्णिमा तिथि होगी. पितृ पक्ष का समापन २ अक्टूबर को सर्व पितृ अमावस्या यानी आश्विन अमावस्या के दिन होगा.

किसका कब होता है श्राद्ध

पितृ पक्ष में भाद्रपद पूर्णिमा से लेकर आश्विन अमावस्या तक १६ तिथियां होती हैं. पुरी के ज्योतिषाचार्य डॉ. गणेश मिश्र के अनुसार जिस व्यक्ति का निधन जिस तिथि को हुआ होता है, उसका तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ पक्ष की उसी तिथि पर होता है. जैसे किसी व्यक्ति का निधन सावन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को हुआ है, तो उस व्यक्ति के लिए तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ पक्ष में श्राद्ध चतुर्थी तिथि को होगा.

जिसके निधन की तिथि न हो पता तो कैसे करें श्राद्ध?

यदि किसी भी व्यक्ति के निधन की तिथि पता न हो तो उस व्यक्ति के लिए भी पितृ पक्ष में व्यवस्था की गई है. यदि वह पुरुष है तो उसका श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान आदि सर्व पितृ अमावस्या के दिन करना चाहिए. यदि वह महिला है तो उसका श्राद्ध, तर्पण आदि मातृ नवमी यानी पितृ पक्ष में श्राद्ध की नवमी तिथि को करना चाहिए.

पितृ पक्ष २०२४ श्राद्ध की १६ तिथियां

पूर्णिमा श्राद्धः १७ सितंबर, मंगलवार
भाद्रपद पूर्णिमा तिथिः १७ सितंबर को ११:४४ ए एम से १८ सितंबर को ०८:०४ ए एम तक

प्रतिपदा श्राद्धः १८ सितंबर, बुधवार
आश्विन कृष्ण प्रतिपदा तिथिः १८ सितंबर को ०८:०४ ए एम से १९ सितंबर को ०४:१९ ए एम तक

द्वितीया श्राद्धः १९ सितंबर, गुरुवार
आश्विन कृष्ण द्वितीया तिथिः १९ सितंबर को ०४:१९ ए एम से २० सितंबर को १२:३९ ए एम तक

तृतीया श्राद्धः २० सितंबर, शुक्रवार
आश्विन कृष्ण तृतीया तिथिः २० सितंबर को १२:३९ ए एम से ०९:१५ पी एम तक

चतुर्थी श्राद्ध, महाभरणीः २१ सितंबर, शनिवार
आश्विन कृष्ण चतुर्थी तिथिः २० सितंबर को ०९:१५ पी एम से २१ सितंबर को ६:१३ पी एम तक

पंचमी श्राद्धः २२ सितंबर, रविवार
आश्विन कृष्ण पंचमी तिथिः २१ सितंबर को ६:१३ पी एम से २२ सितंबर को ०३:४३ पी एम तक

षष्ठी श्राद्ध और सप्तमी श्राद्धः २३ सितंबर, सोमवार
आश्विन कृष्ण षष्ठी तिथिः २२ सितंबर को ०३:४३ पी एम से २३ सितंबर को ०१:५० पी एम तक

अष्टमी श्राद्धः २४ सितंबर, मंगलवार
आश्विन कृष्ण सप्तमी तिथिः २३ सितंबर को ०१:५० से २४ सितंबर को १२:३८ पी एम तक
आश्विन कृष्ण अष्टमी तिथिः २४ सितंबर को १२:३८ पी एम से २५ सितंबर को १२:१० पी एम तक

नवमी श्राद्ध, मातृ नवमीः २५ सितंबर, बुधवार
आश्विन कृष्ण नवमी तिथिः २५ सितंबर को १२:१० पी एम से २६ सितंबर को १२:२५ पी एम तक

दशमी श्राद्धः २६ सितंबर, गुरुवार
आश्विन कृष्ण दशमी तिथिः २६ सितंबर को १२:२५ पी एम से २७ सितंबर को ०१:२० पी एम तक

एकादशी श्राद्धः २७ सितंबर, शुक्रवार
आश्विन कृष्ण एकादशी तिथिः २७ सितंबर को ०१:२० पी एम से २८ सितंबर को ०२:४९ पी एम तक

द्वादशी श्राद्ध, मघा श्राद्धः २९ सितंबर, रविवार
आश्विन कृष्ण द्वादशी तिथिः २८ सितंबर को ०२:४९ पी एम से २९ सितंबर को ०४:४७ पी एम तक

त्रयोदशी श्राद्धः ३० सितंबर, सोमवार
आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथिः २९ सितंबर को ०४:४७ पी एम से ३० सितंबर को ०७:०६ पी एम तक

चतुर्दशी श्राद्धः १ अक्टूबर, मंगलवार
आश्विन कृष्ण चतुर्दशी तिथिः ३० सितंबर को ०७:०६ पी एम से १ अक्टूबर को ०९:३९ पी एम तक

सर्व पितृ अमावस्या, अमावस्या श्राद्धः २ अक्टूबर, बुधवार
आश्विन कृष्ण अमावस्या तिथिः १ अक्टूबर को ०९:३९ पी एम से ३ अक्टूबर को १२:१८ ए एम तक

बिहार का गया जिला, जिसको लोग बहुत ही आदरपूर्वक 'गयाजी' के नाम से पुकारते हैं. गया जिले को धार्मिक नगरी के नाम से भी जाना जाता है. यहां हर कोने-कोने पर मंदिर हैं, जिनमें स्थापित मूर्तियां प्राचीन काल की बताई जाती हैं. हालांकि, सभी की मान्यताएं अलग-अलग हैं. मान्यता है कि भगवान राम, सीता और लक्ष्मण गया की धरती पर पधारे थे और यहां पिंडदान किया था. तभी से यहां पिंडदान करने की महत्ता शुरू हो गई थी. गयाजी में पिंडदान करने से पूर्वजों की मोक्ष की प्राप्ति होती है. यहां देश-विदेश से भी अब लोग अपने पूर्वजों की मोक्ष की कामना के लिए पिंडदान करने आते हैं. भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष के १५ दिनों को ही पितृपक्ष कहा जाता है. गरुड़ पुराण के मुताबिक, गयाजी में होने वाले पिंडदान की शुरुआत भगवान राम ने की थी. बताया जाता है कि भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने यहां आकर पिता राजा दशरथ को पिंडदान किया था. बताया यह भी गया कि यदि इस स्थान पर पितृ पक्ष में पिंडदान किया जाए तो पितरों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है. धार्मिक मान्यता है कि भगवान श्री हरि यहां पर पितृ देवता के रूप में विराजमान रहते हैं. इसीलिए इसे पितृ तीर्थ भी कहा जाता है. बता दें कि, गया के इसी महत्व के चलते यहां लाखों लोग हर साल अपने पूर्वजों का पिंडदान करने आते हैं. पितृपक्ष में देश-विदेश से तीर्थयात्री पिंडदान व तर्पण करने के लिए गयाजी आते हैं. मान्यता है कि गयाजी में पिंडदान करने से १०८ कुल और ७ पीढ़ियों का उद्धार होता है और उन्हें सीधे मोक्ष की प्राप्ति होती है. ऐसा करने से उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलता है.

वैदिक परंपरा और हिंदू मान्यताओं के अनुसार सनातन काल से 'श्राद्ध' की परंपरा चली आ रही है। माना जाता है प्रत्येक मनुष्य पर देव ऋण, गुरुगु ऋण और पितृ (माता-पिता) ऋण होतेहैं। पितृण सेमुक्ति तभी मिलती है, जब माता-पिता के मरणोपरांत पितृपक्ष में उनके लिए विधिवत श्राद्ध किया जाए। आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा सेआश्विन महीने के अमावस्या तक को 'पितृपक्ष' या 'महालया पक्ष' कहा गया है। मान्यता के अनुसार पिंडदान मोक्ष प्राप्ति का सहज और सरल मार्ग है। पितरों के लिए खास पितृपक्ष में मोक्षधाम गयाजी आकर पिंडदान एवं तर्पण करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और माता-पिता समेत सात पीढ़ियों का उद्धार होता है।

गया को विष्णुका नगर माना गया है। यह मोक्ष की भूमि कहलाती है। विष्णुपुराण और वायुपुराण में भी इसकी चर्चा की गई है। विष्णुपुराण के मुताबिक, गया में पिंडदान करने से पूर्वजों को मोक्ष मिल जाता है और वे स्वर्ग चले जाते हैं। माना जाता है कि स्वयं विष्णु यहां पितृदेवता के रूप में मौजूद है, इसलिए इसे 'पितृतीर्थ' भी कहा जाता है।

गयावाल पंडा समाज के शिव कुमार पांडे आईएएनएस सेकहा कि वायुपुराण में फल्गु नदी की महत्ता का वर्णन करतेहुए फल्गु तीर्थकहा गया है तथा गंगा नदी से भी ज्यादा पवित्र माना गया है।

लोक मान्यता है कि फल्गु नदी के तट पर पिंडदान एवं तर्पण करने से पितरों को सबसे उत्तम गति के साथ मोक्ष की प्राप्ति होती है एवं माता-पिता समेत कुल की सात पीढ़ियों का उद्धार होता है। साथ ही पिंडदान कर्तास्वयं भी परमगति को प्राप्त करते है।

देश में श्रादघ के लिए ५५ स्थानों को महत्वपूर्ण माना गया है जिसमें बिहार के गया का स्थान सर्वोपरि है। पवित्र फल्गु नदी के तट पर बसे प्राचीन गया शहर की देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पितृपक्ष और पिंडदान को लेकर अलग पहचान है। पितृपक्ष के साथ साथ तकरीबन पूरे वर्ष लोग अपने पूर्वजों के लिए मोक्ष की कामना लेकर यहां पहुंचते हैं और फल्गु नदी के तट पर पिंडदान और तर्पण आदि करते हैं। गया शहर के पूर्वी छोर पर पवित्र फल्गु नदी बहती है। माता सीता के श्राप के कारण यह नदी अन्य नदियों के तरह नहीं बह कर भूमि के अंदर बहती है, इसलिए इसे 'अंतः सलिला' भी कहते हैं।

महाभारत के वनपर्व में भीष्म पितामह और पांडवों द्वारा भी पिंडदान किए जानेका उल्लेख है। विद्वानों के मुताबिक, किसी वस्तुके गोलाकर रूप को पिंड कहा जाता है। प्रतीकात्मक रूप में शरीर को भी पिंड कहा जाता है। पिंडदान के समय मृतक की आत्मा को अर्पित करने के लिए जौ या चावल के आटे को गूंथकर गूं बनाई गई गोलात्ति को पिंड कहते हैं।

श्राद्ध की मुख्य विधि मेंमुख्य रूप से तीन कार्य होते हैं, पिंडदान, तर्पण और ब्राह्मण भोज। दक्षिणाविमुख होकर आचमन कर अपने जनेऊ को दाएं कंधेपर रखकर चावल, गाय के दूध, घी, शक्कर एवं शहद को मिलाकर बने पिंडों को श्रद्घा भाव के साथ अपने पितरों को अर्पित करना पिंडदान कहलाता है। जल में काले तिल, जौ, कुशा एवं सफेद फूल मिलाकर उससे विधिपूर्वक तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि इससे पितर तृप्त होते हैं। इसके बाद ब्राह्मण भोज कराया जाता है। पंडों के मुताबिक, शास्त्रों में पितरों का स्थान बहुत ऊंचा बताया गया है। उन्हें चंद्रमा से भी दूर और देवताओं से भी ऊंचेस्थान पर रहनेवाला बताया गया है। पितरों की श्रेणी में मृत पूर्वजों, माता, पिता, दादा, दादी, नाना, नानी सहित सभी पूर्वज शामिल होते हैं। व्यापक दृष्टि से मृत गुरुगु और आचार्य भी पितरों की श्रेणी में आते हैं।

गया के पंडे राजकिशोर कहते हैं कि फल्गु नदी के तट पर पिंडदान सबसे अच्छा माना जाता है। पिंडदान की प्रक्रिया पुनपुन नदी के किनारे से प्रारंभ होती है।

कहा जाता है कि गया में पहले विभिन्न नामों के ३६० वेदियां थी जहां पिंडदान किया जाता था। इनमें से अब ४८ ही बची है। वैसे कई धार्मिक संस्थाएं उन पुरानी वेदियों की खोज की मांग कर रही है। वर्तमान समय में इन्हीं वेदियों पर लोग पितरों का तर्पण और पिंडदान करते हैं। यहां की वेदियों में विष्णुपद मंदिर, फल्गु नदी के किनारे और अक्षयवट पर पिंडदान करना जरूरी माना जाता है। इसके अतिरिक्त वैतरणी, प्रेतशिला, सीताकुंड, नागकुंड, पांडुशिला, रामशिला, मंगलागौरी, कागबलि आदि भी पिंडदान के लिए प्रमुख हैं।

मध्य प्रदेश सेअपनेपूर्वजों का पिंडदान करनेआए मंगत अग्रवाल का मानना हैकि यदि पितरों की आत्मा को मोक्ष नहीं मिला है तो उनकी आत्मा भटकती रहती है। इससे उनकी संतानों के जीवन में भी कई बाधाएं आती हैं, इसलिए गया जी आकर पितरों का पिंडदान अवश्य करना चाहिए।

विवाद

विवादों में तिरुपति मंदिर का लड्डू

इस लड्डू को बनाने का पेटेंट सिर्फ मंदिर ट्रस्ट यानी तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के ही पास है। यहां मिलने वाले लड्डू कई प्रकार के होते हैं। सबसे छोटे लड्डू को 'प्रोक्तम' कहा जाता है। इसका वजन ४० ग्राम होता है। यह दर्शन करने वाले सभी श्रद्धालुओं को मंदिर की ओर से दिए जाते हैं। दूसरे प्रकार का लड्डू 'अस्थानम' है। जिसके एक लड्डू का वजन १७५ ग्राम का होता है। यह किसी त्योहार या खास मौके पर तैयार किया जाता है। इसका मुल्य ५० रूपये है। तीसरा, कल्याणोत्सवम लड्डू है, जिसकी मांग सबसे ज्यादा होती है। इसकी खासियत यह है कि यह लड्डू १५ दिनों तक खराब नहीं होता है। इसका वजन ७५० ग्राम होता है, जिसकी कीमत २०० रुपये है

'सनातन धर्म रक्षण बोर्ड' बनाने की मांग...

तिरुमाला के लड्डू प्रसादम विवाद को लेकर बवाल मचा हुआ है। वहीं, आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने ट्वीट कर राष्ट्रीय स्तर सनातन धर्म रक्षण बोर्ड बनाने की मांग कर दी है। यह मुद्दा उन दावों के बाद और बढ़ गया है कि तिरुमाला मंदिर में चढ़ाए जाने वाले पवित्र 'प्रसादम' में मछली का तेल, सूअर का मांस और गोमांस की चर्बी सहित पशु वसा मिलाया गया था। एक्स पर एक पोस्ट में, जन सेना पार्टी प्रमुख ने अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि तिरुपति बालाजी प्रसाद में कथित तौर पर पशु वसा पाए जाने के रहस्योद्घाटन से हम सभी बहुत परेशान हैं।

पवन कल्याण ने आगे लिखा कि टीटीडी बोर्ड द्वारा कई प्रश्न अनुत्तरित हैं, जिसका गठन पिछल ी वाईसीपी सरकार द्वारा किया गया था। कल्याण ने यह भी आश्वासन दिया कि आंध्र प्रदेश सरकार निष्कर्षों के जवाब में कड़ी कार्रवाई करेगी। उन्होंने पूरे भारत में मंदिर संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए 'सनातन धर्म रक्षण बोर्ड' के गठन की वकालत करते हुए राष्ट्रीय स्तर की कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'भारत में सभी मंदिर मामलों को देखने के लिए एक बोर्ड स्थापित करने का समय आ गया है,' उन्होंने कहा कि स्थिति नीति निर्माताओं, धार्मिक नेताओं, न्यायपालिका, नागरिकों और मीडिया को शामिल करते हुए व्यापक बहस की मांग करती है।

जन सेना पार्टी प्रमुख ने कहा कि प्रसाद की गुणवत्ता हमेशा काफी बेहतर होती है और अगर आपको एक छोटी सी बाइट भी मिल जाए तो यह हर किसी के लिए महाप्रसाद के समान है। यह बड़ी श्रद्धा से किया गया। उन्होंने कहा कि प्रसाद के लिए चुनी गई सामग्री बहुत विश्वसनीय समूहों/कंपनियों से प्राप्त की जाती है। हर चीज बहुत अच्छी तरह से संरचित तरीके से प्राप्त की जाती है। किसी ने भी उस हिस्से का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं की, बदलने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने कहा कि प्रसाद बनाने के लिए आपको प्रतिदिन १५,००० किलोग्राम घी की आवश्यकता होती है। उनका दावा है कि उन्होंने विक्रेताओं को बदल दिया क्योंकि यह १००० रुपये से अधिक है और उन्होंने इसे बदल दिया और इसे कम कर दिया।

कल्याण ने कहा कि उन्होंने बताया कि उन्हें ३६०-४०० रुपये में सप्लाई दी जाती थी। घी ऊंचे दाम पर बनता है। तो, वे इतना सस्ता घी कैसे प्राप्त कर सकते थे?... लोग नियमित रूप से उस गंध के बारे में शिकायत कर रहे थे जो प्रसाद के साथ सामान्य नहीं है। मैंने सोचा कि कोई भी इस प्रकार की शिकायतों का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं करेगा लेकिन मैं टीटीडी में अन्य चीजों पर विचार कर रहा था। उन्होंने कहा कि हम प्रसाद की गुणवत्ता और टीटीडी की कार्यप्रणाली को लेकर चिंताएं जताते रहे हैं। जब हमने सरकार बनाई और कहा कि हम टीटीडी को पुनर्जीवित करना चाहते हैं और नमूने भेजे, तो हमें एहसास हुआ कि पशु वसा, मछली का तेल, गोमांस वसा और सुअर वसा वहां थे। हम आहत और स्तब्ध हैं।

अभिनेता से नेता बने कल्याण ने कहा कि जब लोग मंदिर की पवित्रता के प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं रखते, कोई मूल्य नहीं रखते और कोई सम्मान नहीं करते, अगर वे कार्यभार संभालते हैं तो यही होता है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ प्रसाद के बारे में नहीं है, शायद शराब और नॉन-वेज की आपूर्ति की गई थी, लोग वहां पार्टियां कर रहे थे। ये सभी बातें सामने आईं। उन्होंने कहा कि जब सरकारें और बोर्ड अच्छा काम नहीं कर रहे हैं, तो भारत में कोई अन्य निगरानी तंत्र होना चाहिए। अगर किसी भी प्रकार की मूर्तियों का अपमान होता है, मंदिर की पवित्रता बरकरार नहीं रहती है तो सनातन धर्म परिरक्षण बोर्ड आज की जरूरत है।

तिरुपति लड्डू विवाद पर पूर्व सीएम जगन मोहन रेड्डी की भी प्रतिक्रिया सामने आई है। वाईएसआरसीपी प्रमुख और आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी ने कहा कि निविदा प्रक्रिया हर छह महीने में होती है और योग्यता मानदंड दशकों से नहीं बदले हैं। आपूर्तिकर्ताओं को एनएबीएल प्रमाणपत्र और उत्पाद गुणवत्ता प्रमाणपत्र प्रदान करना होगा। टीटीडी घी से नमूने एकत्र करता है और केवल प्रमाणन पास करने वाले उत्पादों का ही उपयोग किया जाता है। हमने अपने शासन में १८ बार उत्पादों को खारिज किया है। जगन मोहन और उनकी पार्टी वाईएसआर कांग्रेस ने इस विवाद पर आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट का रुख किया। वाईएसआर कांग्रेस ने हाई कोर्ट से एन चंद्रबाबू नायडू और टीडीपी के आरोपों की जांच के लिए एक ज्यूडिशियल कमेटी गठित करने की मांग की है।

तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के कार्यकारी अधिकारी शमाला राव ने कहा कि जब मैंने टीटीडी के कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला, तो सीएम ने खरीदे गए घी और लड्डू की गुणवत्ता पर चिंता व्यक्त की, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है और प्रसादम के रूप में चढ़ाया जाता है। गुणवत्ता में कोई भी विचलन 'अपवित्रम' का कारण होगा। हमने शुरू किया। उस पर काम करना। हमने पाया कि हमारे पास घी में मिलावट की जांच करने के लिए कोई आंतरिक प्रयोगशाला नहीं है। बाहरी प्रयोगशालाओं में भी घी की गुणवत्ता की जांच करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

निविदाकर्ताओं द्वारा उद्धृत दरें अव्यवहारिक हैं, वे इतनी कम हैं कि कोई भी कह सकता है कि शुद्ध गाय का घी इतना कम खर्च नहीं हो सकता। हमने सभी आपूर्तिकर्ताओं को चेतावनी दी है, कि यदि आपूर्ति किया गया घी लैब टेस्ट में पास नहीं होता है तो उन्हें ब्लैकलिस्ट कर दिया जाएगा। प्रसाद में पशु की चर्बी का मामला सामने आया है उसको लेकर सियासत गरम हो गई है।

विवाद

विवाद के बावजूद तिरुपति लड्डू की बिक्री में कोई कमी नहीं, ४ दिनों में १४ लाख लड्डू बिके...

तिरुपति बालाजी मंदिर में प्रतिदिन ३ लाख से अधिक लड्डू तैयार किए जाते हैं। जिन्हें भक्त बड़ी संख्या में खरीदते हैं और अपने परिवार तथा दोस्तों के साथ प्रसाद के रूप में साझा करते हैं। हाल ही में लड्डू बनाने में जानवरों की चर्बी के इस्तेमाल को लेकर विवाद खड़ा हुआ। लेकिन इसके बावजूद मंदिर की यह पारंपरिक पाक विधि अप्रभावित रही। एनडीटीवी की रिपोर्ट के मुताबिक आंध्र प्रदेश की राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद श्री वेंकटेश्वर मंदिर में लड्डू की मांग निरंतर बढ़ रही है और प्रतिदिन ६०,००० से अधिक भक्त दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। विवाद के बावजूद तिरुपति लड्डू की बिक्री में कोई कमी नहीं आई है। चार दिनों के भीतर ही १.४ मिलियन से अधिक लड्डू बेचे गए।

१९ से २२ सितंबर के बीच ३५९,०००, ३१७,०००, ३६७,००० और ३६०,००० लड्डू बिके हैं। जो भक्तों की इस पवित्र प्रसाद में अटूट आस्था और उत्साह को दर्शाता है। इन लड्डुओं को बनाने में पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। जिसमें बंगाल चना, गाय का घी, चीनी, काजू, किशमिश और बादाम शामिल हैं। मंदिर प्रतिदिन १५,००० किलोग्राम गाय के घी का उपयोग करता है। जो वर्षों से इस प्रसाद की भक्ति और परंपरा का प्रतीक है।

FSSAI ने AR डेयरी के खिलाफ जारी किया नोटिस, मिलावट के आरोपों पर विवाद आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने आरोप लगाया कि पूर्व सरकार ने लड्डू में इस्तेमाल होने वाले घी में पशु वसा मिलाकर इसकी शुद्धता से समझौता किया है। इस आरोप के बाद राज्य सरकार ने मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल का गठन किया। दूसरी ओर वाईएसआर कांग्रेस पार्टी ने नायडू के इन आरोपों को धार्मिक भावनाओं और प्रथाओं का राजनीतिकरण बताते हुए सत्तारूढ़ पार्टी की कड़ी आलोचना की। भक्तों की चिंताओं को दूर करने के लिए और मंदिर की पवित्रता को बहाल करने के उद्देश्य से शांति होमम पंचगव्य प्रोक्षण नामक शुद्धिकरण अनुष्ठान आयोजित किया गया। यह अनुष्ठान चार घंटे तक चला और इसे मंदिर के पुजारियों ने वैखानस आगम परंपराओं के अनुसार संपन्न किया।

इस दौरान वास्तु शुद्धि और कुंभजला संप्रोक्षण भी किया गया। जिससे लड्डू और अन्य नैवेद्यम की पवित्रता फिर से स्थापित की गई। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के कार्यकारी अधिकारी जे श्यामला राव ने स्पष्ट किया कि शुद्धिकरण अनुष्ठान के बाद मंदिर के प्रसाद की पवित्रता बहाल हो गई है और भक्तों को किसी भी तरह की शंका नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह अनुष्ठान मंदिर की प्रथाओं और इसकी आध्यात्मिक अखंडता को बनाए रखने का एक हिस्सा है। तिरुपति लड्डू की पवित्रता और परंपरा को लेकर मंदिर प्रशासन की प्रतिबद्धता स्पष्ट है। लगातार उच्च बिक्री और प्रतिदिन ३ लाख से अधिक लड्डुओं का उत्पादन यह दर्शाता है कि तीर्थयात्रियों की भक्ति अडिग है और वे मंदिर के प्रसाद की पवित्रता पर पूर्ण विश्वास करते हैं। हालिया विवाद के बावजूद तिरुपति लड्डू भक्तों के बीच आस्था और परंपरा का प्रतीक बना हुआ

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

विवाद

तिरुपति मंदिर के लड्डुओं को लेकर विवाद सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है। इस संबंध में २ याचिकाएं लगाई जा चुकी है...

आंध्र प्रदेश के श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर (तिरुपति मंदिर) के लड्डू में जानवरों की चर्बी मिलाए जाने के आरोपों के बीच अब तंबाकू मिलने का दावा किया गया है। तेलंगाना की एक महिला ने आरोप लगाया है कि उसे लड्डू के अंदर कागज में लिपटे तंबाकू के टुकड़े मिले हैं। उसने इसका वीडियो भी जारी किया है।

आरोप लगाने वाली डोंथु पद्मावती खम्मम जिले के गोल्लागुडेम की रहने वाली हैं। वे १९ सितंबर को तिरुमाला मंदिर गई थीं। वहां से लाए गए लड्डू प्रसादम में कागज और उसमें लिपटे तंबाकू का वीडियो दिखाया। इसे कुछ न्यूज चैनलों समेत कुछ सोशल मीडिया अकाउंट्स से शेयर किया गया है। हालांकि दैनिक भास्कर इस वीडियो की पुष्टि नहीं करता।

इससे पहले आंध्र प्रदेश के CM चंद्रबाबू नायडू ने १८ सितंबर को आरोप लगाया था कि राज्य में YSR कांग्रेस सरकार में तिरुपति मंदिर के लड्डू (प्रसादम्) में जानवरों की चर्बी वाला वनस्पति तेल और फिश ऑयल मिलाया गया था। इसके अगले दिन TDP ने एक लैब रिपोर्ट दिखाकर अपने आरोपों की पुष्टि होने का दावा किया था।

प्रसादम विवाद पर अब तक के अपडेट्स

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने ४ कंपनियों के घी सैंपल मंगवाए। इनमें से एक कंपनी एआर डेयरी फूड्स का घी क्वालिटी टेस्ट में फेल हो गया। सरकार ने कंपनी को कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई है। स्वामी ने प्रसादम में एनिमल फैट के इस्तेमाल के खिलाफ कोर्ट की निगरानी में जांच की मांग की है।

राज्यसभा के सदस्य और देवस्थानम (TTD) के पूर्व अध्यक्ष वाई.वी. सुब्बा रेड्डी ने भी सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज की अध्यक्षता वाली समिति से मामले की जांच करने की मांग की है।

श्री ललिता पीठम में विश्व हिंदू परिषद की बैठक हुई। विहिप ने सुप्रीम कोर्ट से तिरुपति लड्डू में मिलावट के आरोपों पर एक्शन लेने और दोषियों की पहचान के लिए जांच शुरू करने की अपील की है।

आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी और अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। हैदराबाद के सैदाबाद पुलिस स्टेशन में एक वकील ने यह शिकायत दर्ज कराई है।

YSR कांग्रेस पार्टी ने लड्डू में चर्बी विवाद पर आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट में याचिका लगाई है, सुनवाई २५ सितंबर को होगी।

पांच सप्लायर में से एक का घी जांच में फेल कर्नाटक कोऑपरेटिव मिल्क फेडरेशन (KMF) पिछले ५० साल से रियायती दरों पर ट्रस्ट को घी दे रहा था। तिरुपति मंदिर में हर छह महीने में १४०० टन घी लगता है। जुलाई २०२३ में कंपनी ने कम रेट में सप्लाई देने से मना कर दिया, जिसके बाद जगन सरकार (YSRCP) ने ५ फर्म को सप्लाई का काम दिया था। इनमें से एक तमिलनाडु के डिंडीगुल स्थित एआर डेयरी फूड्स भी है। इसके प्रोडक्ट में इसी साल जुलाई में गड़बड़ी मिली थी।

TDP सरकार आई, जुलाई में सैंपल की जांच, चर्बी की पुष्टि TDP सरकार ने जून २०२४ में सीनियर IAS अधिकारी जे श्यामला राव को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (TTD) का नया एग्जीक्यूटिव ऑफिसर अपॉइंट किया था। उन्होंने प्रसादम (लड्डू)

की क्वॉलिटी जांच का आदेश दिया। इसके लिए एक कमेटी बनाई।

प्रसाद के टेस्ट और क्वॉलिटी को बेहतर बनाने के लिए कमेटी ने कई सुझाव दिए। साथ ही घी की जांच के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (NDDB), गुजरात में सैंपल भेजे। जुलाई में सामने आई रिपोर्ट में फैट का जिक्र था।

इसके बाद TTD ने तमिलनाडु के डिंडीगुल की एआर डेयरी फूड्स की तरफ से भेजे गए घी के स्टॉक को वापस कर दिया और ठेकेदार को ब्लैक लिस्ट में डाल दिया। इसके बाद TTD ने कर्नाटक मिल्क फेडरेशन से घी खरीदना शुरू कर दिया।

पुराने सप्लायर से घी ३२० रुपए प्रति किलोग्राम के रेट से खरीदा जाता था। अब तिरुपति ट्रस्ट कर्नाटक को-ऑपरेटिव मिल्क फेडरेशन (KMF) से ४७५ रुपए प्रति किलोग्राम के रेट से घी खरीद रहा है।

घी की शुद्धता जांचने वाली लैब NDDB CALF (आणंद, गुजरात) ने तिरुपति को घी की शुद्धता की जांच करने के लिए एक मशीन दान करने पर सहमति दी है। इसकी लागत ७५ लाख रुपए है।

CM नायडू ने लैब रिपोर्ट सार्वजनिक की, विवाद बढ़ा जुलाई में सामने आई रिपोर्ट में लड्डुओं में चर्बी की पुष्टि हो गई थी। हालांकि, टीडीपी ने दो महीने बाद रिपोर्ट सार्वजनिक की। CM नायडू ने १८ सितंबर को आरोप लगाया था कि पूर्व जगन सरकार में तिरुपति मंदिर के लड्डू में इस्तेमाल होने वाले घी में जानवरों की चर्बी और फिश ऑयल मिलाया गया था। TDP ने एक लैब रिपोर्ट दिखाकर अपने आरोपों की पुष्टि का दावा भी किया।

नायडू ने कहा, जब बाजार में ५०० रुपए किलो घी मिल रहा था, तब जगन सरकार ने ३२० रु. किलो घी खरीदा। ऐसे में घी में सप्लायर की ओर से मिलावट होनी ही थी। जगन सरकार द्वारा कम दाम वाले घी को खरीदने की जांच होगी। पशु चर्बी वाले घी से बने लड्डुओं से तिरुपति मंदिर की पवित्रता पर दाग लगाया है।

तिरुपति मंदिर में महाशांति यज्ञ के बाद सभी जगहों पर पंचगव्य से शुद्धि की गई। यज्ञ के बाद ये तस्वीर देवस्थानम बोर्ड ने X पर शेयर की।

तिरुपति मंदिर की शुद्धि के लिए महाशांति यज्ञ तिरुपति मंदिर की शुद्धि के लिए महाशांति यज्ञ किया गया। २३ सितंबर को सुबह ६ से १० बजे तक चले पंचगव्य प्रोक्षण (शुद्धिकरण) में तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (TTD) बोर्ड के अधिकारी समेत २० पुजारी शामिल हुए। अनुष्ठान में लड्डू और अन्नप्रसादम रसोई की शुद्धि की गई।

मंदिर के मुख्य पुजारियों में से एक कृष्ण शेषाचल दीक्षितुलु ने कहा, 'सरकार एक प्रस्ताव लेकर आई कि मंदिर को शुद्ध करने के लिए क्या किया जाए। इसलिए हम शांति होम करने के प्रस्ताव के साथ प्रबंधन के पास गए। सुबह ६ बजे हम सभी भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद और अनुमति लेने के लिए गर्भगृह में गए। अब सब कुछ शुद्ध हो गया है, मैं सभी भक्तों से अनुरोध करता हूं कि उन्हें अब चिंता करने की जरूरत नहीं है। भगवान बालाजी के दर्शन करें और प्रसाद घर ले जाएं।'

३०० साल पुराना किचन, ब्राह्मण ही बनाते हैं ३.५ लाख लड्डूं। तिरुपति मंदिर में करीब २०० ब्राह्मण ३०० साल पुराने किचन में शुद्ध देसी घी से लड्डू बनाते हैं।

तिरुपति मंदिर दुनिया के सबसे लोकप्रिय और अमीर धर्मस्थलों में से है। यहां हर दिन करीब ७० हजार श्रद्धालु भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हैं। इसका प्रशासन तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम (TTD) संभालता है।

मंदिर परिसर में बनी ३०० साल पुराने किचन 'पोटू' में शुद्ध देसी घी के रोज ३.५० लाख लड्डू बनते हैं। यह मंदिर का मुख्य प्रसाद है, जिसे करीब २०० ब्राह्मण बनाते हैं।

लड्डू में शुद्ध बेसन, बूंदी, चीनी, काजू और शुद्ध घी होता है। ट्रस्ट ने करीब एक लाख लड्डू जनवरी २०२४ में हुई राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के वक्त अयोध्या भेजे थे।

सामग्री :

२५० ग्राम पनीर (चौकोर कटा हुआ),
१/२ कप शिमला मिर्च (मीडियम कटी हुई)
२ कप दही,
१/४ टीस्पून लाल मिर्च पाउडर,
१ टीस्पून गरम मसाला,
१/४ टीस्पून हल्दी पाउडर,
१ टेबलस्पून बेसन,
१ टीस्पून नींबू का रस
नमक स्वादानुसार
१ प्याज कटी हुई,
२ टमाटर की प्यूरी,
१/४ कप काजू का पेस्ट
१/४ टीस्पून लाल मिर्च पाउडर,
१ टीस्पून गरम मसाला,
१/४ टीस्पून हल्दी पाउडर,
१ टीस्पून गरम मसाला,
१ टीस्पून कसूरी मेथी तेल जरुरत के अनुसार

विधि : सबसे पहले मैरीनेशन की सामग्री एक कटोरी में डालकर मिला लें। फिर पनीर, शिमला मिर्च और प्याज डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर आधे घंटे के लिए अलग रख दें। मीडियम आंच पर तवे पे तेल डाल कर गरम करने के लिए रख दें।- इसमें मैरीनेट किया हुआ पनीर, शिमला मिर्च और प्याज डालकर फ्राई कर लें। दूसरी ओर पैन में तेल डालकर गरम करने के लिए रख दें। इसमें प्याज डालकर भून लें। इसके बाद टमाटर प्यूरी डालकर पकाएं। अब इसमें काजू का पेस्ट डाल कर मिक्स करें। इसमें हल्दी पाउडर, गरम मसाला, लाल मिर्च और नमक डालकर भूनें। मसाले के तेल छोड़ने के बाद इसमें थोड़ा पानी डालकर एक उबाल आने तक पकाएं। फिर फ्राई किए हुए पनीर, शिमला मिर्च और प्याज डालकर मिक्स कर ५-१० मिनट तक पकाएं। आपका तवा पनीर टिक्का तैयार है।

सामग्रीः

100 ग्राम -काली साबुत उड़द दाल
50 ग्राम- काला चना या राजमा
1/4 खाने का सोडा
4-टमाटर
2-3- हरी मिर्च
थोड़ा सा - अदरक
2-3 टेबल स्पून -देशी घी
थोड़ी सी- हींग
1/2 चम्मच- जीरा
1/4 चम्मच -हल्दी पाउडर
1/4 चम्मच- लाल मिर्च पाउडर
1/4 चम्मच - गरम मसाला
स्वादुनासार -नमक
कटी हुयी हरी धनिया

विधिः

उड़द और चने या राजमा को धो कर 8 घंटे या रात में ही पानी में भिगो दें। इसके बाद दाल को धोकर कुकर में डालें। इसमें खाने वाला सोडा और नमक डाल कर पानी डालें और उबाल लें। अब टमाटर, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट तैयार कर लें। इसके बाद कढ़ाई में घी डालकर हींग और जीरा का तड़का लगाएं। इसके बाद इसमें कद्दूकस की हुई अदरक(थोड़ी सी), हल्दी पाउडर, धनियां पाउडर और लाल मिर्च पाउडर डाल कर अच्छे से मिक्स करें। अब मसाले में टमाटर, हरी मिर्च का पेस्ट और क्रीम या मक्खन डालें। इसके बाद इस पूरे मिश्रण को अच्छे से भूनें। जब मसाला अच्छे से भुन जाए तो इसमें दाल डालकर मिक्स करें और आवश्यकतानुसार पानी मिलाएं। दाल को उबाल आने तक अच्छे से धीमी आंच पर पकाएं। इसके बाद हरी धनिया से गार्निश करके सर्व करें।

सामग्री

¼ कप मक्खन, नरम
6 लहसुन, ग्रेट किया हुआ
2 टेबल स्पून धनिया पत्ती,
1 टी स्पून मिक्स्ड हर्ब्स
1 टी स्पून चिल्ली फ़्लेक्स
¼ टी स्पून सफेद मिर्च पाउडर
¼ टी स्पून नमक
4 स्लाइस ब्रेड, सफेद या भूरा

विधिः सबसे पहले, एक छोटे कटोरे में ¼ कप मक्खन और ६ लहसुन लें। २ टेबल स्पून धनिया पत्ती, १ टीस्पून मिक्स्ड हर्ब्स, १ टीस्पून चिल्ली फ़्लेक्स, ¼ टीस्पून सफेद मिर्च पाउडर और ¼ टीस्पून नमक मिलाएं। अच्छी तरह से मिश्रण करें। अब ब्रेड के साइड्स को स्ट्रिप्स में काट लें। ब्रेड स्ट्रिप्स पर लहसुन मक्खन फैलाएं। तवे पर ब्रेडस्टिक्स को टोस्ट करें। ब्रेड को गोल्डन ब्राउन होने तक पलट-पलट कर पकाएं। अंत में, अधिक चिल्ली फ़्लेक्स के साथ चिली गार्लिक ब्रेडस्टिक्स का आनंद लें।

चटपटी मसूर दाल

सामग्रीः

- हरा धनियां - २५० ग्राम (१ छोटा बन्च)
- मसूर की दाल - एक छोटी कटोरी
- प्याज़ - १ बारीक कटा हुआ
- तेल - २ टेबल स्पून
- जीरा - आधा छोटी चम्मच
- हींग पाउडर - २ पिंच
- हरी मिर्च - १-२ कटी हुई
- अदरक - २ इंच का टुकड़ा
- धनिया पाउडर - १ छोटी चम्मच
- नमक - स्वादानुसार
- हल्दी पाउडर - १/४ छोटी चम्मच
- गरम मसाला - १छोटी चम्मच
- लाल मिर्च - १/४ छोटी चम्मच
- टमाटर -१ कटा हुआ

विधिः

दाल को १ घंटे पहले पानी मे भिगो दीजिये। दाल को अच्छी तरह से धौ लीजिये, कुकर मे दाल डाल दीजिये और पानी के मात्रा उतनी हो की सारी दाल अच्छी तरह से भीग जाए और थोड़ा सा पानी दाल के ऊपर दिखने लगे, फिर ३ सीटी लगवाएँ। मिक्सी में टमाटर, हरी मिर्च, लहसुन और १ इंच अदरक को मिक्सी मे पीस लीजिये। अदरक को बारीक और पतला काट लीजिये। प्याज़ को भी बारीक काट लीजिये। कढ़ाई में तेल डालकर गरम कीजिये, जीरा और हींग डालिये, जीरा भुनने पर, प्याज़, और बारीक कटी हुई अदरक डाल दीजिये। जब प्याज़ हल्के भूरे हो जाए तब मिक्सी का पिसा मसाल डाल दीजिये। हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर, लालमिर्च पाउडर, नमक, गरम मसाला, और नमक डालकर मसाले को अच्छी तरह चम्मच से चलाते हुये तब तक भूनिये जब तक कि मसाले की कोटिंग न आ जाये। कुकर मे से दाल को कड़ाही मे डाल दीजिये, ५ मिनट के लिए गैस पर धीमी आग पर पकने दीजिये। दाल बनकर तैयार है।

वेज बर्गर

सामग्री

पाव - ०४ नग,
मैदा - ०१ कप,
ब्रेड का चूरा - ०१ कप,
आलू- ०३ नग (उबले हुए),
टमाटर - ०१ मध्यम
खीरा - ०१ मध्यम
प्याज - ०१ मध्यम
पत्तागोभी - ०१ कप
हरी मिर्च - २-३ नग
अदरक - ०१ चम्मच
मक्खन - आवश्यकतानुसार,
तेल - आवश्यकतानुसार,
नमक - स्वादानुसार।

विधि :

सबसे पहले एक बर्तन में पानी डालकर उसमें पत्तागोभी को उबाल लें। उबलने के बाद का इसका पानी निकाल दें और अलग रख दें। अब उबले आलू और पत्ता गोभी को मैश कर लें। मिश्रण में हरी मिर्च, अदरक और नमक डालें और अच्छी तरह मिला लें। तैयार मिश्रण को ४ भागों में बांट लें और हथेली की मदद से इसकी गोल टिक्की बना लें। साथ ही मैदा को छान कर पानी की मदद से उसका गाढ़ा घोल तैयार कर लें। अब कड़ाही में तेल गर्म करें। आलू की टिक्कियों को मैदे के घोल में डुबोकर ब्रेड के चूरे में लपेट लें। तेल गर्म होने पर और टिक्कियों को तेल में डालें और मीडियम आंच पर ब्राउन होने तक तल लें। अब चाकू की मदद से पाव/बन को बीच से काटकर दो भाग कर लें। दोनों टुकड़ों पर अंदर की ओर मक्खन लगा लें। फिर नीचे वाले टुकडे के ऊपर टोमैटो सॉस की एक पर्त लगायें। उसके ऊपर आलू की एक टिक्की रख दें। टिक्की के ऊपर १ टमाटर की स्लाइस, २ खीरे की स्लाइस और २ प्याज की स्लाइस रखें। उसके ऊपर थोड़ा सा टोमैटो सॉस डालें और फिर ऊपर से पाव/बन का दूसरा हिस्सा रख दें। इसी तरह से सारे बर्गर तैयार कर लें। स्वादिष्ट वेज बर्गर तैयार है।

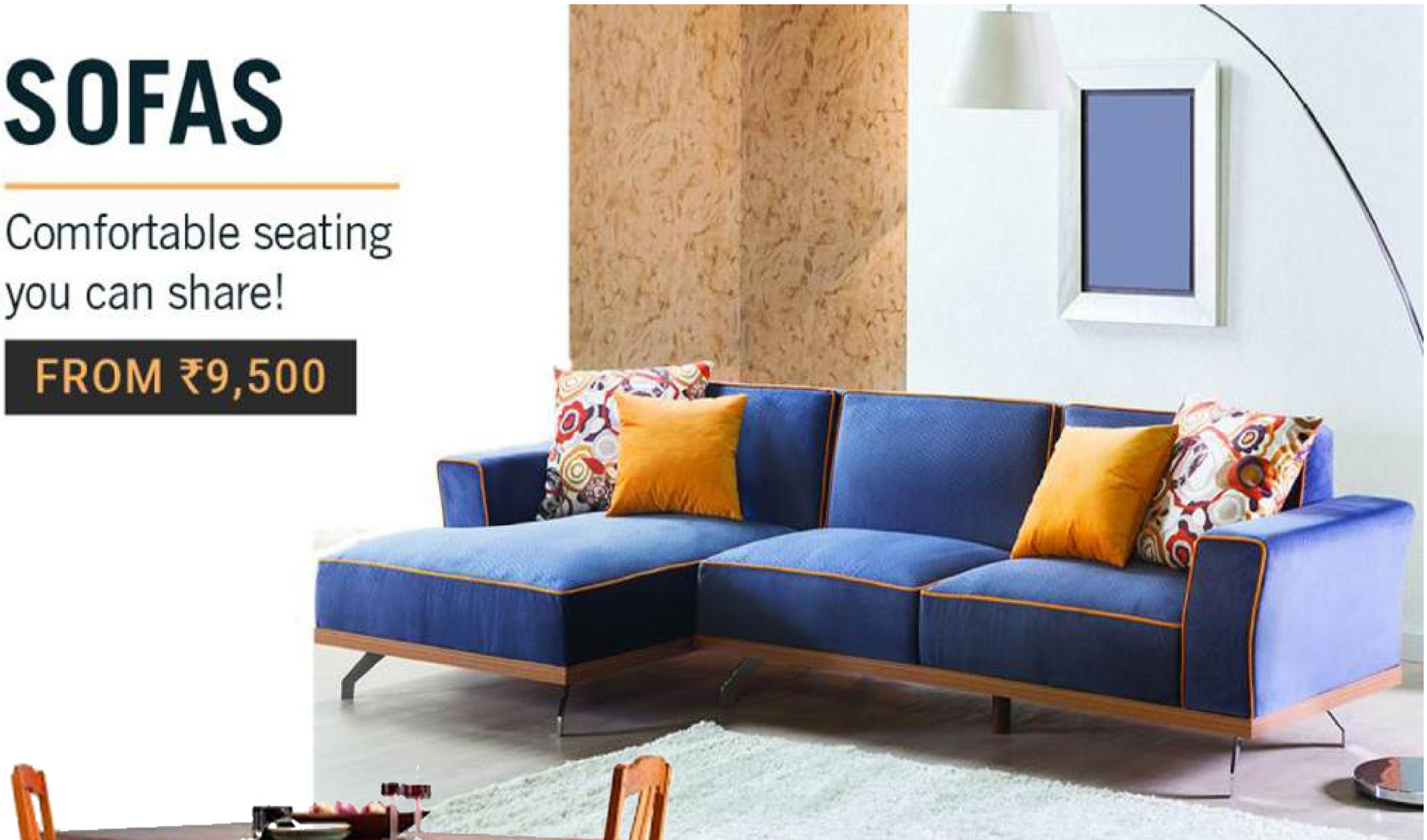

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

राशिफल

मेष राशि

रिश्ते-नाते की दृष्टि से अक्तूबर के मध्य का समय थोड़ा प्रतिकूल रह सकता है। इस दौरान परिवार के किसी प्रिय सदस्य अथवा लव पार्टनर से मतभेद हो सकता है। पहले सप्ताह में आप करियर-कारोबार अथवा पर्यटन आदि के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी यात्रा पर निकल सकते हैं। इस दौरान आपको स्वजनों से पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगी। कार्यक्षेत्र में परिस्थितियां आपके अनुकूल रहेंगी तथा घर-परिवार में सुखशांति बनी रहेगी। माह के तीसरे सप्ताह में आपको थोड़ा सचेत रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान आपको सोचे हुए कार्यों को पूरा करने में अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को इस दौरान अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है, लेकिन यह स्थिति लंबे समय तक नहीं रहेगी और माह के उत्तरार्ध तक एक बार फिर सभी चीजें आपके पक्ष में आती हुई नजर आएंगी।

वृषभ राशि-

वृषभ राशि के जातकों के लिए अक्तूबर महीने की शुरुआत थोड़ी चुनौती भरी रह सकती है। माह की शुरूआत में आपके सिर पर अचानक से जिम्मेदारी का पहाड़ गिर सकता है, जिसे उठाने के लिए तन-मन और धन से खुद को मजबूत बनाए रखने की आवश्यकता रहेगी। जीवन से जुड़े कठिन समय में आपके शुभचिंतक परछाईं की तरह से हमेशा साथ खड़े रहेंगे। जिनकी मदद से आप कठिन से कठिन परिस्थितियों का आसानी से सामना करने में कामयाब हो जाएंगे। इस दौरान आपको ससुराल पक्ष से भी विशेष सहयोग मिलने की संभावना है। माह के पूर्वार्ध में कार्यक्षेत्र में आने वाली कुछेक दिक्कतों के चलते आप अपनी नौकरी में बदलाव का मन बना सकते हैं।अक्तूबर महीने का उत्तरार्ध आपके लिए राहत भरा रहेगा। इस दौरान आपको आपकी मेहनत और प्रयास का पूरा फल प्राप्त होगा। प्रेम-प्रसंग की दृष्टि से भी माह के पूर्वार्ध के मुकाबले उत्तरार्ध ज्यादा सुखद एवं अनुकूल रहने वाला है।

मिथुन राशि-

अक्तूबर महीने के उत्तरार्ध में आपको पूर्व में किए गये निवेश से बड़ा लाभ मिल सकता है। यह समय विदेश से जुड़े कारोबार करने वालों के लिए तथा वहां पर करियर की तलाश में जुटे नौजवानों के लिए अत्यंत ही शुभ साबित होगा। मिथुन राशि के जातकों के लिए यदि अक्तूबर के मध्य का थोड़ा समय छोड़ दिया जाए तो पूरा महीना शुभता और सौभाग्य लिए हुए है। इस माह आपके सोचे हुए कार्य तेजी से मनमाफिक तरीके से पूरे होते हुए नजर आएंगे। आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलेगा और आपके विरोधियों की हर चाल नाकाम होगी। मिथुन राशि के जातक अक्तूबर के महीने में कुछ बड़ा कार्य करने का निर्णय ले सकते हैं। यदि आप व्यवसायी हैं तो आप माह की शुरुआत में अपने कारोबार के विस्तार को अमलीजामा पहना सकते हैं। करियर-कारोबार में तरक्की के लिहाज से यह समय आपके लिए पूरी तरह से अनुकूल रहने वाला है। इस माह आपको जहां विभिन्न स्रोतों से आय होगी तो वहीं आप अपनी सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर खुले हाथ से धन लुटाते हुए भी नजर आएंगे।

कर्क राशि-

माह की शुरुआत में आपको अपने करियर और कारोबार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी अन्यथा आपके द्वारा किया गया परिश्रम और प्रयास व्यर्थ जा सकता है। कर्क राशि के जातकों को अक्तूबर महीने में हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम - सद्वाक्य को हमेशा याद रखना होगा क्योंकि लगभग पूरे महीने आपको जीवन से जुड़ी तमाम तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। करियर-कारोबार और निजी संबंधों की दृष्टि से दखें तो आपके लिए यह महीना काफी उतार-चढ़ाव लिए है। ऐसे में आपको पूरे महीने अपनी उर्जा, समय और धन का प्रबंधन करके चलना होगा। इस माह दूसरों पर आश्रित रहने की बजाय आपको खुद पर भरोसा करके चलना होगा, तभी आपके सोचे हुए काम समय पर पूरे हो पाएंगे। नौकरीपेशा लोगों को इस दौरान अपने सीनियर के साथ जूनियर से भी अच्छा तालमेल बिठाकर चलने की जरूरत बनी रहेगी। माह के मध्य में कर्क राशि के जातकों को चीजों को कल पर टालने की आदत से बचना होगा अन्यथा धन एवं मान दोनों की हानि होने की आशंका रहेगी।

सिंह राशि-

सिंह राशि के जातकों के लिए यह महीना थोड़ा ज्यादा भागदौड़ और थोड़ा ज्यादा सौभाग्य लिए रहने वाला है। इस माह आपको जीवन में आगे बढ़ने के खूब अवसर प्राप्त होंगे और आप अपने शुभचिंतकों की मदद से उसका लाभ उठाने में भी काफी हद तक सफल भी साबित होंगे। माह की शुरुआत में आप किसी विशेष प्रोजेक्ट से जुड़कर कार्य कर सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों के पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होने की संभावना है। इस दौरान आपका अधिकांश समय किसी कार्य विशेष को पूरा करने में बीतेगा। माह का दूसरा सप्ताह विदेश से जुड़कर काम करने वालों के लिए अत्यंत ही शुभता लिए हुए है। इस दौरान उनकी विदेश यात्रा और संबंधित कार्यों से मनचाही लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। माह के मध्य में आप अपनी वाणी और व्यवहार की मदद से लोगों का दिल जीतने में कामयाब रहेंगे। आपको कदम-कदम पर स्वजनों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। यह समय मीडिया एवं संचार से जुड़कर कार्य करने वालों के लिए अत्यंत ही शुभ साबित होगा।

कन्या राशि-

कन्या राशि के जातकों के लिए अक्तूबर का महीना काफी उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस माह आपको कभी घी घना तो कभी सूखा चना जैसी वाली स्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। माह की शुरुआत में आपको कामकाज में आने वाली दिक्कतों से जूझना

पड़ सकता है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी सक्रिय रहेंगे और आपको स्वजनों से अपेक्षाकृत सहयोग कम मिल पाएगा। कारोबार में आपको बहुत प्रयास करने पर ही लाभ की प्राप्ति संभव हो पाएगी। यदि आप अपने व्यवसाय में विस्तार करने की सोच रहे हैं तो आपको इस दिशा में बहुत सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाने की आवश्यकता रहेगी। माह का दूसरा सप्ताह थोड़ा राहत भरा रह सकता है। इस दौरान जीवन से जुड़ी तमाम समस्याओं का समाधान खोजने में मित्रगण मददगार साबित होंगे। घर-परिवार से जुड़ा बड़ा निर्णय लेते समय आपको पिता का विशेष सहयोग और समर्थन मिलेगा। माह के मध्य तक आपकी आर्थिक स्थिति में खासा सुधार देखने को मिलेगा। इस दौरान घर-परिवार के साथ हंसी-खुशी समय बिताने का अवसर प्राप्त होगा।

तुला राशि-

तुला राशि के जातकों को माह के मध्य में किसी भी कार्य को जल्दबाजी में करने से बचना चाहिए। तुला राशि के जातकों के लिए अक्तूबर का महीना शुभता और सौभाग्य लिए हुए है। इस माह आपके अधूरे सपने पूरे हो जाएंगे। करियर-कारोबार में विशेष लाभ और प्रगति के योग बनेंगे। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आप अपनी आय को बढ़ाने के लिए नये स्रोत तलाश करेंगे। माह के पूर्वार्ध में करियर और कारोबार में अनुकूलता बनी रहने और मनचाही सफलता मिलने से आपके भीतर एक अलग उर्जा और आत्मविश्वास नजर आएगा। इस दौरान आप अपने स्टेटस को बेहतर बनाने के लिए कुछेक बड़े कदम भी उठा सकते हैं। माह के दूसरे सप्ताह में करियर और कारोबार के सिलसिले में की गई यात्रा सुखद एवं अत्यधिक लाभदायी साबित होगी। आर्थिक दृष्टि से यह समय आपके लिए अत्यंत ही अनुकूल रहने वाला है। भूमि-भवन अथवा वाहन आदि के क्रय-विक्रय की कामना पूरी हो सकती है। यदि आप अभी तक सिंगल हैं तो इस माह आपके जीवन में मनचाहे व्यक्ति की इंट्री संभव है। तुला राशि के जातकों को इस दौरान धन के लेनदेन में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

वृश्चिक राशि-

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए अक्तूबर का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस माह आपको कोई भी छोटा-बड़ा कदम खूब सोच-विचार कर उठाने की आवश्यकता रहेगी। यदि आपकी एक छोटी सी गलती आपके लिए जी का जंजाल बन सकती है। वृश्चिक राशि के जातकों को दूसरों पर जरूरत से ज्यादा विश्वास करने पर धोखा मिलने की आशंका बनी रहेगी। माह की शुरुआत में आपको पूर्व में की गई किसी गलती अथवा लापरवाही के कारण परेशानियां झेलनी पड़ सकती है। भूमि-भवन से जुड़े विवाद का समाधान खोजने के लिए कोर्ट-कचहरी के चक्कर तक लगाने पड़ सकते हैं। इस दौरान निजी जीवन में खर्च की अधिकता बनी रहेगी, जिससे आपका बना-बनाया बजट गड़बड़ा सकता है। माह के दूसरे सप्ताह में आपके कामकाज में थोड़ी गति तो आएगी लेकिन लाभ का प्रतिशत खर्च के मुकाबले कम रहेगा। रिश्ते-नाते की दृष्टि से यह समय आपके लिए थोड़ा प्रतिकूल रह सकता है। लोग आपकी बात का गलत अर्थ निकालेंगे और आपका स्वजनों के साथ मतभेद मनभेद में बदल सकता है। वृश्चिक राशि के जातकों को माह के मध्य में लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है। इस दौरान आपको जीवन में प्रगति एवं लाभ प्राप्ति के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे।

धनु राशि-

अक्तूबर महीने के पूर्वार्ध में आपको कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर से अपेक्षाकृत कम सहयोग मिल पाएगा। जिसके चलते आपका मन खिन्न रहेगा। व्यवसाय की दृष्टि से भी यह समय प्रतिकूल रहने वाला है और आपको बाजार में अपनी साख बचाए रखने के लिए माह के पूर्वार्ध में कठिन परिश्रम और प्रयास करने होंगे। यदि आप पार्टनरशिप में कारोबार करते हैं तो माह के मध्य में साझेदार के साथ किसी बात को लेकर अनबन हो सकती है। रिश्ते-नाते को बेहतर बनाए रखने के लिए आपको माह के पूर्वार्ध में कई चीजों को लेकर समझौता करना पड़ सकता है। धनु राशि के जातकों के लिए अक्तूबर के महीने की शुरुआत कभी खुशी कभी गम लिए रहेगी लेकिन माह के मध्य के बाद चीजें आपके अनुकूल होती हुई नजर आएंगी। ऐसे में आपको तमाम तरह की परेशानियों से बचने के लिए माह की शुरुआत से ही अपने समय, धन एवं उर्जा का प्रबंधन करके चलना बेहतर रहेगा। माह की शुरुआत में धनु राशि के जातकों को किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने से बचना होगा।

मकर राशि-

मकर राशि के जातकों के लिए अक्तूबर महीने की शुरुआत किसी शुभ समाचार से होगी और उनके जीवन में यह शुभता लगभग माह के मध्य तक कायम रहेगी। नतीजतन इस दौरान आपको करियर-कारोबार आदि में मनचाहे फल की प्राप्ति होगी। इस दौरान आपके संगी-साथी आपके सहयोग और समर्थन में तन-मन और धन के साथ खड़े नजर आएंगे। माह के पहले सप्ताह में आप किसी विशिष्ट व्यक्ति की मदद से अटके कार्य को गति देने में कामयाब हो जाएंगे। इस दौरान करियर-कारोबार के सिलसिले में की गई यात्रा अत्यंत ही शुभ और लाभदायी साबित होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों का कारोबार खूब फलेगा-फूलेगा और आप बाजार में आई तेजी का लाभ उठाने में कामयाब रहेंगे। यदि आप किसी कार्य को प्रारंभ करने के लिए आर्थिक संकट से गुजर रहे थे तो इस दौरान आप वित्तीय संकट से उबरने से कामयाब हो जाएंगे। यदि आप विदेश से जुड़े कार्य करते हैं तो माह के पूर्वार्ध में विदेश यात्रा के भी योग बन सकते हैं। विदेश में करियर-कारोबार के संबंध में किये गये प्रयासों में सफलता मिलने की संभावना है।

कुंभ राशि-

कुंभ राशि के जातकों के लिए अक्तूबर का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस महीने आप कई बार खुद को सम स्थिति में पा सकते हैं। कहने का अर्थ यह कि लाभ और हानि का प्रतिशत बराबर रहेगा। हालांकि महीने की शुरुआत आपके करियर और कारोबार की दृष्टि से शुभ रहने वाली है। इस दौरान नाराज चल रहे लोगों के साथ एक बार फिर आपका मेलजोल बढ़ सकता है। किसी वरिष्ठ व्यक्ति के माध्यम से स्वजनों के साथ पैदा हुई गलतफहमियां दूर होंगी। माह के दूसरे सप्ताह में विभिन्न स्रोतों से आमदनी होने की संभावना है लेकिन उसके मुकाबले खर्च की अधिकता रहेगी। ऐसे में आपको अपनी आय और व्यय के बीच संतुलन साधने में थोड़ी मुश्किलें आ सकती हैं। इस दौरान आपके मन में अपने करियर-कारोबार एवं घर-परिवार आदि को लेकर मन में चिंताएं बनी रहेंगी। रिश्ते-नाते की दृष्टि से आपको माह के मध्य में थोड़ा सचेत रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान किसी तीसरे व्यक्ति के कारण लव पार्टनर के साथ गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं।

मीन राशि-

मीन राशि के जातकों के लिए अक्तूबर महीने की शुरुआत थोड़ा आपाधापी भरी रह सकती है। इस दौरान आपको सोचे हुए कार्यों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास और परिश्रम करने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों पर इस दौरान कामकाज का दबाव बना रहेगा। विशेष रूप से टारगेट ओरिएंटेड काम करने वालों के लिए यह समय काफी चुनौती भरा रह सकता है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको बाजार में अपनी साख बचाने और मार्केट में फंसे धन निकालने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। कारोबार को अच्छे से चलाने और मनचाहे लाभ की प्राप्ति के लिए आपको अपनी योजनाओं तथा कार्यपद्धति में आमूलचूल बदलाव लाना होगा। मीन राशि के जातकों को माह के पूर्वार्ध में यदि एक कदम पीछे करने पर दो कदम आगे बढ़ने की संभावना नजर आए तो उन्हें ऐसा करने से बिल्कुल नहीं चूकना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से माह के मध्य का समय आपके लिए चुनौती भरा रह सकता है।

सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक महाकालेश्वर मंदिर

उज्जैन स्थित शानदार जगह...

समय के देवता, शिव अपने सभी वैभव में, उज्जैन में शाश्वत शासन करते हैं। महाकालेश्वर का मंदर, इसका शिखर आसमान में चढ़ता है, आकाश के खिलाफ एक भव्य अग्रभग, अपनी भव्यता के साथ आदिकालीन विस्मय और श्रद्धा को उजागर करता है। महाकाल शहर और उसके लोगों के जीवन पर हावी है, यहां तक कि आधुनिक व्यस्तताओं के व्यस्त दिनचर्या के बीच भी, और पिछली परंपराओं के साथ एक अटूट लिंक प्रदान करता है। भारत के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक, महाकाल में लिंगम (स्वयं से पैदा हुआ), स्वयं के भीतर से शक्ति (शक्ति) को प्राप्त करने के लिए माना जाता है, अन्य छवियों और लिंगों के खिलाफ, जो औपचारिक रूप से स्थापित हैं और मंत्र के साथ निवेश किए जाते हैं- शक्ति। महाकालेश्वर की मूर्ति दक्षिणमुखी होने के कारण दक्षिणामूर्ति मानी जाती है।

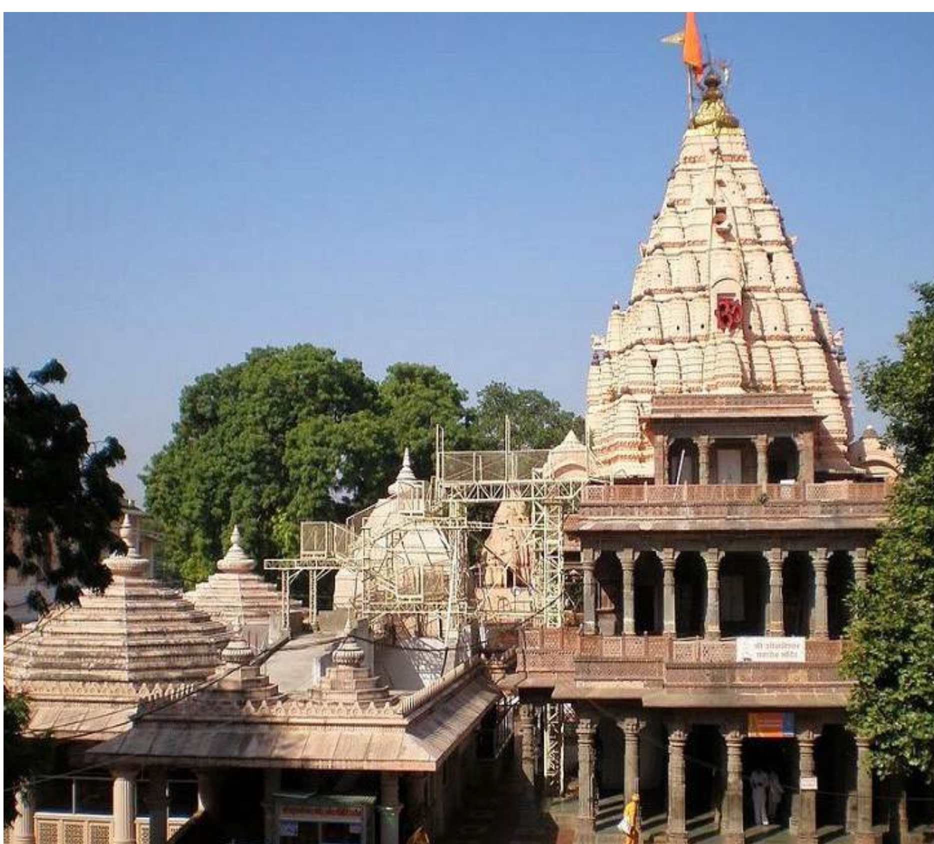

महाकालेश्वर मंदिर भारत के सबसे प्रतिष्ठित पवित्र मंदिरों में से एक है। भारत में स्थित १२ प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों में से एक, महाकालेश्वर मंदिर की महिमा का विभिन्न पुराणों में विशद वर्णन किया गया है। महाकवि कालिदास से शुरू करते हुए, कई अन्य संस्कृत कवियों ने इस मंदिर को अपने काव्य में उच्चा स्थान दिया है। मध्य प्रदेश टूरिज्म वेबसाइट के अनुसार, 'उज्जैन भारतीय समय की गणना के लिए केंद्रीय बिंदु हुआ करता था और महाकाल को उज्जैन का विशिष्ट पीठासीन देवता माना जाता था। समय के देवता, शिव अपने सभी वैभव में, उज्जैन में शाश्वत शासन करते हैं। महाकालेश्वर का मंदर, इसका शिखर आसमान में चढ़ता है, आकाश के खिलाफ एक भव्य अग्रभग, अपनी भव्यता के साथ आदिकालीन विस्मय और श्रद्धा को उजागर करता है। महाकाल शहर और उसके लोगों के जीवन पर हावी है, यहां तक कि आधुनिक व्यस्तताओं के व्यस्त दिनचर्या के बीच भी, और पिछली परंपराओं के साथ एक अटूट लि ंक प्रदान करता है। भारत के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक, महाकाल में लिंगम (स्वयं से पैदा हुआ), स्वयं के भीतर से शक्ति (शक्ति) को प्राप्त करने के लि ए माना जाता है, अन्य छवियों और लिंगों के खिल ाफ, जो औपचारिक रूप से स्थापित हैं और मंत्र के साथ निवेश किए जाते हैं- शक्ति। महाकालेश्वर की मूर्ति दक्षिणमुखी होने के कारण दक्षिणामूर्ति मानी जाती है। यह एक अनूठी विशेषता है, जिसे तांत्रिक परंपरा द्वारा केवल १२ ज्योतिर्लिंगों में से महाकाल ेश्वर में पाया जाता है। महाकाल मंदिर के ऊपर गर्भगृह में ओंकारेश्वर शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में गणेश, पार्वती और कार्तिकेय के चित्र स्थापित हैं। दक्षिण में नंदी की प्रतिमा है। तीसरी मंजिल पर नागचंद्रेश्वर की मूर्ति केवल नागपंचमी के दिन दर्शन के लिए खुली होती है। महाशिवरात्रि के दिन, मंदिर के पास एक विशाल मेला लगता है, और रात में पूजा होती है।'

काल भैरव मंदिर के दर्शन करें

श्रद्धालुओं के लिए एक और पवित्र स्थान उज्जैन में काल भैरव मंदिर है। लोगों की गहरी आस्थाओं के कारण यह मंदिर कई वर्षों से पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। मंदिर में लोगों की बेहद आस्था है; शहर और इसके लोगों के बारे में अधिक जानने के लिए आपको इसे अवश्य देखना चाहिए।

राम घाट पर जाएं

यदि आप सैकड़ों हजारों लोगों में से एक हैं जो कुंभ मेले के भव्य आयोजन का हिस्सा हैं, तो आपको राम घाट की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। यह वह बिंदु है जहां भोर के समय और सूर्यास्त के दौरान कई आरती आयोजित की जाती हैं। गंगा नदी के पानी में सुंदर आरती और आग की लपटों का प्रतिबिंब देखने लायक है। इस प्रकार, उज्जैन में राम घाट घूमने के स्थानों की सूची में होना ही चाहिए।

कालियादेह पैलेसः स्रोतः **Pinterest**

कालियादेह पैलेस को देखने जाएं

यदि आप क्षेत्र में उज्जैन के ऐतिहासिक महत्व के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो आपको कालिदेह महल की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। महल राजाओं और राजकुमारों के साथ उज्जैन के सांस्कृतिक महत्व और उसके इतिहास का प्रतीक है। आप दिन के किसी भी समय कालियादेह पैलेस में जा सकते हैं। इसे घूमने के लिए टिकट का पैसा भी नहीं खर्च करना पड़ेगा।

हरसिद्धि मंदिर के दर्शन करें

उज्जैन में महत्वपूर्ण मंदिरों की सूची में एक और रत्न, हरसिद्धि मंदिर, का प्रमुख महत्व है। मंदिर में हर महीने हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। मंदिर पत्थर से बना है और प्राचीन भारतीय डिजाइन में बनाया गया है। इसलिए, यदि आप अभी भी उज्जैन के टॉप दर्शनीय स्थलों की तलाश कर रहे हैं, तो हरसिद्धि मंदिर को अपनी लिस्ट में अवश्य शामिल करें।

मंगलनाथ मंदिर के दर्शन करें

मंगलनाथ मंदिर उज्जैन शहर का एक और प्रमुख मंदिर है। मंदिर भगवान शिव की पूजा के लिए समर्पित है, और कई भक्त मंदिर में प्रार्थना करने और मंदिर में देवताओं को प्रसाद चढ़ाने के लिए आते हैं।

संदीपनी आश्रम, उज्जैन

शिप्रा नदी के तट पर स्थित इस आश्रम का धार्मिक महत्व बहुत है. माना जाता है कि इस आश्रम में ही भगवान श्रीकृष्ण ने अपने भाई बलराम और मित्र सुदामा के साथ मिकर गुरु संदीपनी से शिक्षा गृहण की थी. इस आश्रम के पास एक पत्थर भी है जिसमें १ से लेकर १०० तक की संख्या उकेरी गई हैं. माना जाता है कि इन संख्याओं को खुद गुरु संदीपनी ने उकेरा था. इस आश्रम के पास एक गोमती कुंड भी है जिसका बड़ा धार्मिक महत्व है. माना जाता है कि इस कुंड में भगवान श्रीकृष्ण सभी तरह के पवित्र पानी का आवाह्र करते थे ताकि

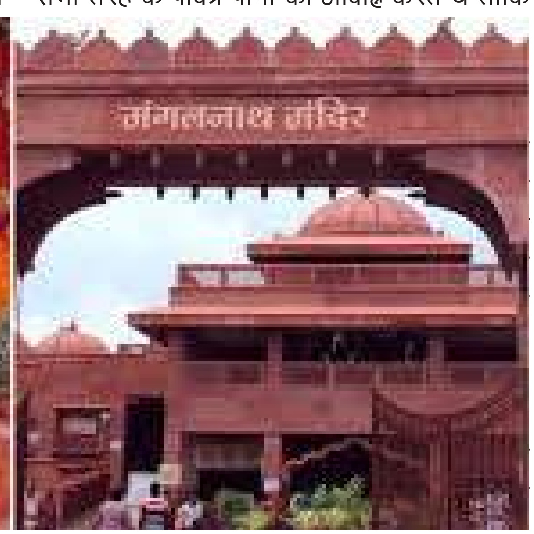

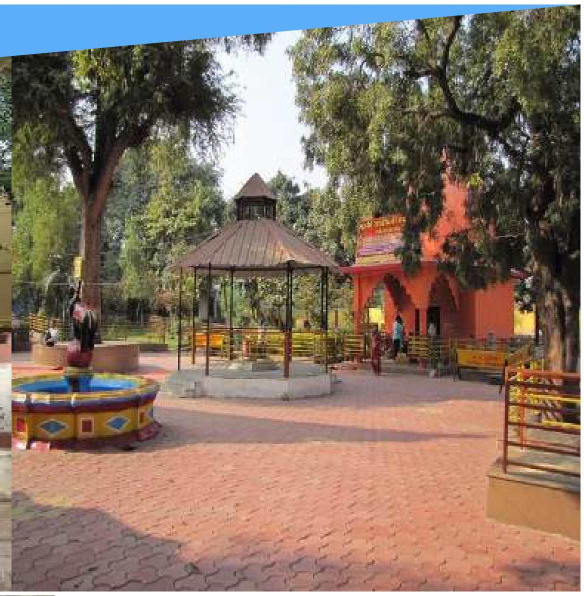

को सुंदर बनाने वाले २४ स्तंभों से मंदिर को अपना नाम मिला। प्रवेश द्वार पर मंदिर की संरक्षक देवी - महालया, और महामाया की छवियों को दिखाया गया है, जिनके नाम मंदिर के फुटस्टेप पर उकेरे गए हैं। शुक्ल पक्ष की अष्टमी और नवरात्रि के शुभ दिन यहां सबसे खास होते हैं और इन दिनों में बड़ी संख्या में भक्त यहां दर्शन के लिए आते हैं।

जंतर मंतर पर पिकनिक

जंतर मंतर उज्जैन का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहां आप एक शाम घूमने और पिकनिक पर बैठकर बिता सकते हैं। आप जंतर मंतर के आसपास स्वादिष्ट स्ट्रीट फूड का भी लुत्फ ले सकते हैं और अपने प्रियजनों के साथ कुछ आराम का समय बिता सकते हैं। जंतर मंतर पर आप सप्ताह के किसी भी दिन सुबह ७:०० बजे से शाम ७:०० बजे के बीच जा सकते हैं। भारतीय पर्यटकों के लिए एंट्री की टिकट फीस रु. ४० प्रति व्यक्ति है जबकि विदेशी पर्यटकों के लिए यह रु. २०० प्रति हेड है। आप एक ऑडियो गाइड को १५० रुपये में खरीदकर सुन सकते हैं।

रालामंडल वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी

उज्जैन से लगभग ६९ किमी दूर, इंदौर में स्थित रालामंडल वन्यजीव अभयारण्य भारत में सबसे ल ोकप्रिय वन्यजीव अभयारण्यों में से एक है। १९८९ में स्थापित यह अभयारण्य २३४.५५० हेक्टेयर में फैला हुआ है। यह देश के इस हिस्से के मूल निवासी कुछ वनस्पतियों और जीवों का निवास स्थान है। यहां किराए पर उपलब्ध चार पहिया वाहनों का आनंद लें और तेंदुए, काले हिरण, चीतल, नीले बैल, लकड़बग्घा, भौंकने वाले हिरण, मोर, पाम-सिवेट, साही और खरगोश की झलक देखें। सागौन, साजा, ग्लिरिसिडिया, शीशम और यूकेलिप्टस की सुगंध आपको और अधिक लुभाएगी।

मिथुन चक्रवर्ती को दादासाहेब फाल्के पुरस्कार...

'डिस्को डांसर' और 'डांस डांस' जैसी फिल्मों के मशहूर अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती को सिनेमा के क्षेत्र में सरकार के सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार के लिए सोमवार को नामित किया गया. कुछ महीने पहले ही चक्रवर्ती को भारत सरकार के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था. मिथुन दा को ८ अक्टूबर को ७०वीं नेशनल फिल्म अवॉर्ड सेरेमनी में सम्मानित किया जाएगा। मिथुन करीब ५ दशक के करियर में बांग्ला, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, ओडिया और भोजपुरी की ३५० से ज्यादा फिल्मों में काम कर चुके हैं। भावुक मिथुन चक्रवर्ती ने कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि फुटपाथ के किसी लड़के को इतना बड़ा सम्मान मिलेगा. मैं कोलकाता की गलियों में बड़ा हुआ हूं. मुंबई की सड़कों के फुटपाथ पर रहा हूं. मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इतना बड़ा सम्मान मिलेगा. मेरा विश्वास करो, मैं सचमुच स्तब्ध हूं. मैं न हंस सकता हूं, न रो सकता हूं. ऐसा सम्मान मिलने पर मेरे लिये कहने के लिये शब्द नहीं है. मैं यह पुरस्कार अपने परिवार और दुनिया भर के अनगिनत प्रशंसकों को समर्पित करता हूं.

रजनीकांत की तबीयत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

सुपरस्टार रजनीकांत को ३० सितंबर की देर रात चेन्नई के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्हें पेट दर्द की शिकायत बताई जा रही है। उधर अस्पताल के सूत्रों ने बताया कि आज रजनीकांत की दिल से जुड़ी सर्जरी की जाएगी। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। रजनीकांत की सेहत के बारे में जानकारी देते हुए उनकी पत्नी लता ने एक मीडिया चैनल से कहा , सब ठीक है। पिछले कई सालों में रजनीकांत की तबियत कई बार खराब हुई है। रजनीकांत का २०१६ में अमेरिका में किडनी ट्रांसप्लांट भी हुआ था।

पेरिस ओलंपिक और पैरालिंपिक में भाग लेने वाले KIIT एथलीटों का किया सम्मान

ओलंपियनों को ७ लाख रुपये के नकद पुरस्कार से किया गया सम्मानित

भुवनेश्वर। KIIT-DU ने रविवार को एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम के दौरान हाल ही में संपन्न पेरिस ओलंपिक और पैरालिंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले विश्वविद्यालय के छात्रों को सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने समारोह का नेतृत्व किया, जिसमें इन उल्लेखनीय एथलीटों की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया और शिक्षा में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

प्रत्येक एथलीट को उनकी उपलब्धियों के सम्मान में ७ लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। इनमें १५ ओलंपियन और २ पैरालिंपियन शामिल थे। डॉ. सामंत ने इस बात पर जोर दिया कि एथलीट खेलों में KIIT की सफलता की आधारशिला हैं उन्होंने कहा कि केआईआईटी को ओलंपिक में एथलीटों का सबसे बड़ा दल भेजने पर गर्व है, जिसमें संस्थान से कुल २० ओलंपियन और २ पैरालिंपियन निकले हैं। ओलंपिक में पदक जीतने वाले प्रदर्शन के लिए अमित रोहिदास और प्रवीण कुमार को विशेष पुरस्कार दिए गए। आज सम्मानित किए गए एथलीटों में अमित रोहिदास (हॉकी), किशोर कुमार जेना और अन्नू रानी (भाला फेंक), तजिंदरपाल सिंह तूर (शॉट पुट), पारुल चौधरी (५००० मीटर स्टीपलचेज़), ज्योति याराजी

(१०० मीटर बाधा दौड़), प्रियंका (२० किमी रेस वॉक), प्राची और एमआर पूवम्मा (४×४०० मीटर रिले), परमजीत सिंह बिष्ट, अक्षदीप सिंह और विकास सिंह (२० किमी रेस वॉक), अंकिता (५००० मीटर दौड़), रामपाल और प्रवीण कुमार (हाई जंप में पैरा-एथलीट) शामिल हैं। इस कार्यक्रम में उन एथलीटों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने हाल ही में २०२४ दक्षिण एशियाई चैंपियनशिप और राज्य स्तरीय भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में पदक जीते हैं।

अमित रोहिदास ने डॉ. सामंत द्वारा बिना तनाव के प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रोत्साहित करने को याद करते हुए अपना आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, 'KIIT और KISS के पास खेलों के लिए सबसे बेहतरीन बुनियादी ढाँचे हैं, जो भारत में कहीं भी बेजोड़ हैं,' उन्होंने संस्थानों द्वारा अपने एथलीटों को दिए जाने वाले समर्थन पर प्रकाश डाला।

ओलंपियन दुती चंद, जो साधारण शुरुआत से आगे बढ़ीं, ने अपनी यात्रा और ओलंपिक मंच तक पहुँचने के लिए उन्होंने जिन चुनौतियों का सामना किया, उनके बारे में बात की।

इस कार्यक्रम में ओडिशा की स्टार एथलीट अनुराधा बिस्वाल और अन्य सहित कई उल्लेखनीय हस्तियाँ शामिल हुईं। KIIT में खेल और योग विभाग के निदेशक डॉ. गगनेंदु दाश ने एथलीटों का परिचय कराया। KIIT और KISS स्पोर्ट्स के सलाहकार उपेंद्र मोहंती भी मौजूद थे।

केआईआईटी के कुलपति प्रोफेसर सरनजीत सिंह, प्रो-कुलपति प्रोफेसर देबाशीष बंद्योपाध्याय और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने एथलेटिक उत्कृष्टता के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने में डॉ. सामंत के प्रयासों की प्रशंसा की।

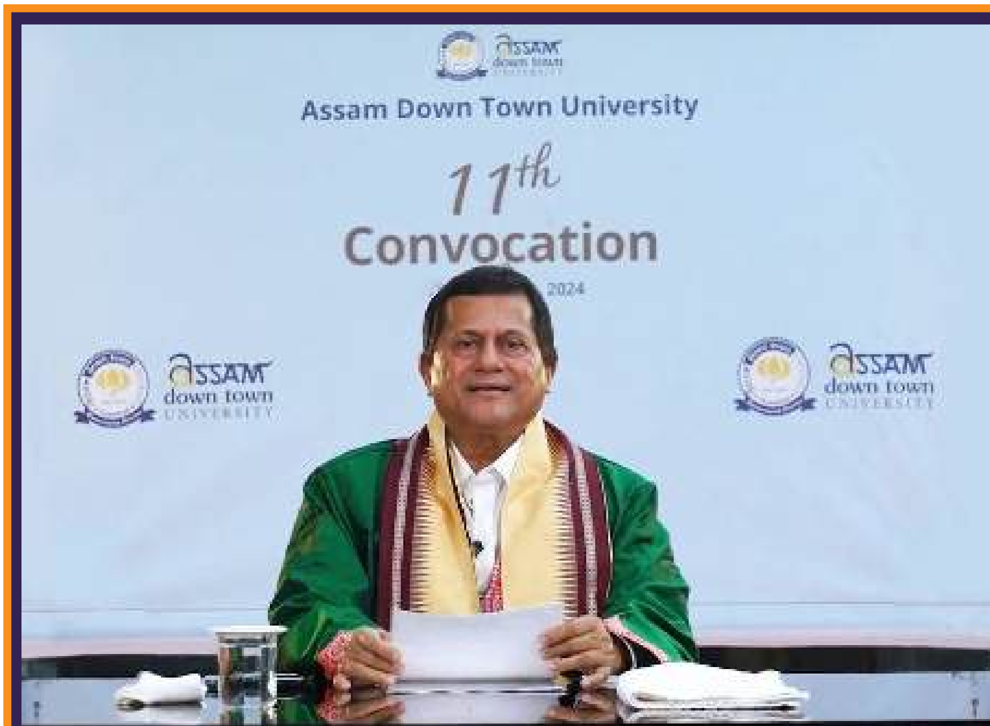

असम डाउन टाउन विश्वविद्यालय से प्रो.अच्युत सामंत को मिली ६०वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री

भुवनेश्वर, २५ सितंबरः भारत के जाने-माने समाजसेवी,महान् शिक्षाविद् तथा ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस दो नामी शैक्षिक संस्थाओं के संस्थापक प्रो.डॉ अच्युत सामंत को आज गुवाहाटी में असम डाउन टाउन विश्वविद्यालय द्वाराविश्वविद्यालय के ११वें दीक्षांत समारोह में प्रो.सामंत की कीट-कीस जैसी विश्वविख्यात पहल तथा निःस्वार्थ समाजसेवा के लिए उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई जो प्रो डॉ.सामंत के नाम कीर्तिमान रुप में ६०वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री रही।गौरतलब है कि प्रो.डॉ. अच्युत सामंत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, आदिवासी कल्याण,कला, संस्कृति, साहित्य और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में उल्लेखनीय तथा प्रशंसनीय कार्य किया है जिनके बदौलत उनके नाम अबतक कुल ६० मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है जो भारत के किसी भी शिक्षाविद् के लिए एक कीर्तिमान मानद डॉक्टरेट की डिग्रियां हैं। विश्वविद्यालय ने सम्मान प्रदान करते समय इन क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट प्रयासों को स्वीकार किया।गौरतलब है कि व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं के कारण, प्रो.डॉ.अच्युत सामंत व्यक्तिगत रूप से समारोह में शामिल नहीं हो सकेलेकिन उनके एक प्रतिनिधि ने उनकी ओर से पुरस्कार स्वीकार किया। प्रो.डॉ. अच्युत सामंत ने सम्मान के लिए विश्वविद्यालय के प्रति हार्दिक आभार जताते हुए मीडिया को यह जानकारी दी कि वे इस सम्मान को संजो कर रखेंगे क्योंकि यह उन्हें प्रदान की गई ६०वीं मानद डॉक्टरेट है। उन्होंने कहा, 'पिछले ३३ सालों से वे समाज के लोगों के लिए अथक रुप से अनेक क्षेत्रों में निःस्वार्थ सेवा काम कर रहे हैं।यह ६०वीं मानद डॉक्टरेट की उपाधि उन्हें हमेशा याद रहेगी।' उन्होंने जल्द ही असम डाउन टाउन विश्वविद्यालय का दौरा करने का वादा किया। प्रो.डॉ. सामंत को समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अनुकरणीय कार्यों के लिए दुनिया भर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और संस्थानों से कई मानद डॉक्टरेट की उपाधियाँ मिली हैं। २००९ में, उन्हें कंबोडिया नेशनल यूनिवर्सिटी से अपनी पहली मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिली थी। प्रो.डॉ.अच्युत सामंत को उनके समस्त शुभचिंतकों तथा हितैषियों की ओर से उनको बहुत-बहुत बधाई और शुभ कामनाएं।

कीट-कीस के संस्थापक महान शिक्षाविद् प्रो अच्युत सामंत 'महात्मा पुरस्कार' पुरस्कार से सम्मानित

भुवनेश्वर। नई दिल्ली में गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर कीट और कीस के संस्थापक प्रो डॉ. अच्युत सामंत को प्रतिष्ठित 'महात्मा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आदित्य बिड़ला समूह द्वारा प्रदान किया जाने वाला यह पुरस्कार उन व्यक्तियों को सम्मानित करता है जिन्होंने शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रो डॉ. सामंत को इन क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय प्रयासों के लिए यह पुरस्कार मिला। प्रसिद्ध CSR कार्यकर्ता अमित सचदेवा द्वारा शुरू किया गया महात्मा पुरस्कार २०१६ से समाज विकास में योगदान देने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों और संगठनों को दिया जाता है। पिछले प्राप्तकर्ताओं में रतन टाटा, अजीम प्रेमजी, बिंदेश्वर पाठक और शबाना आज़मी जैसे दिग्गज शामिल हुए।

पुरस्कार देने से पहले एक चयन समिति प्रत्येक नामांकित व्यक्ति के योगदान का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करती है। प्रो डॉ. सामंत, जिन्होंने शिक्षा और सामाजिक कार्यों के लिए ३३ वर्षों से अधिक समय समर्पित किया है, ने असमानता को मिटाने के महात्मा गांधी के दृष्टिकोण के अनुरूप हाशिए पर पड़े और आदिवासी समुदायों के उत्थान पर ध्यान केंद्रित किया है। कीट के माध्यम से प्रो डॉ. सामंत ने पिछले तीन दशकों में इन प्रयासों को गति दी है। इस वर्ष के समारोह में विद्वान और लेखिका सुधा मूर्ति, प्रसिद्ध ओडिसी और भरतनाट्यम नृत्यांगना सोनल मानसिंह जैसी प्रमुख हस्तियों को भी सम्मानित किया गया। पुदुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल किरण बेदी और सामाजिक कार्यकर्ता राजश्री बिड़ला भी इस कार्यक्रम में मौजूद थीं। अपने भाषण में प्रो डॉ. सामंत ने आभार व्यक्त किया और पुरस्कार को कीट और कीस परिवार को समर्पित किया। उन्होंने CSR गुड बुक की संपादिका और महात्मा पुरस्कार की निदेशिका मुग्धा अरोड़ा के साथ-साथ आयोजन समिति को भी इस सम्मान के लिए धन्यवाद दिया।

प्रो डॉ. सामंत को इन क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय प्रयासों के लिए यह पुरस्कार मिला। प्रसिद्ध CSR कार्यकर्ता अमित सचदेवा द्वारा शुरू किया गया महात्मा पुरस्कार २०१६ से समाज विकास में योगदान देने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों और संगठनों को दिया जाता है। पिछले प्राप्तकर्ताओं में रतन टाटा, अजीम प्रेमजी, बिंदेश्वर पाठक और शबाना आज़मी जैसे दिग्गज शामिल हुए। पुरस्कार देने से पहले एक चयन समिति प्रत्येक नामांकित व्यक्ति के योगदान का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करती है। प्रो डॉ. सामंत, जिन्होंने शिक्षा और सामाजिक कार्यों के लिए ३३ वर्षों से अधिक समय समर्पित किया है...

देश के टॉप १० राज्यों में शामिल हुआ Odisha, इन योजनाओं ने निभाया अहम रोल

देश के श्रेष्ठ १० राज्यों में ओडिशा का भी नाम शामिल हो चुका है और इसकी जानकारी नीति आयोग की साल २०२३-२४ की सतत विकास रिपोर्ट से मिली है। बता दें कि ओडिशा को ६६ अंक मिले हैं। प्रदेश में बीएसकेवाई कालिया मुक्ता मनरेगा योजनाओं से प्रति व्यक्ति आय बढ़ने और प्रदेश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में अहम भूमिका निभाई है। प्रदेश में पिछली सरकार द्वारा लागू की गई बीएसकेवाई, कालि या, मुक्ता, मनरेगा योजनाएं प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के साथ ही प्रदेश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बहुआयामी गरीबी उन्मूल न में ओडिशा ने रिकॉर्ड स्थापित किया है। ओडिशा गरीबी राज्यों की सूची से निकलकर अग्रिम पंक्ति के राज्यों में शामिल हो गया है। राज्य को शीर्ष १० राज्यों में स्थान दिया गया है। नवीन सरकार के दौरान, बीजू स्वास्थ्य कल्याण योजना, किसानों के लिए कालिया सहायता ने गरीबों की मेहनत की कमाई को बचाने में मदद की है। इसके साथ ही कोविड के बाद मुफ्त राशन से गरीबों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। नवीन सरकार ने ग्रामीण और शहरी लोगों के लिए विशेष रोजगार योजनाएं और बेघरों के लिए आवास प्रदान करने में देश में एक अनूठी मिसाल कायम की थी। पिछली सरकार के तहत, राजस्व संग्रह में रिकॉर्ड उपलब्धि थी, जबकि सरकार अन्य राज्यों की तुलना में ऋण के बोझ को काफी कम रखने में सक्षम थी।

अर्थशास्त्री दिलीप बिसोई ने कहा है कि २०१७-१८ तक ओडिशा एक महत्वाकांक्षी राज्य के रूप में जाना जाने लगा था और २०२३-२४ तक प्रदेश अग्रणी राज्यों में अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। कोविड के बाद नवीन सरकार ने प्रवासी श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कई योजनाएं लागू की। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष योजनाओं ने गरीबों की प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में बहुत योगदान दिया है।ओडिशा अब ऐसी स्थिति में आ गया है कि आने वाले दिनों में एक विकसित राज्य का रोडमैप तैयार हो सकता है। राज्य ने एक गरीब राज्य से उन्नत राज्य बनने तक का ल बा सफर तय किया है। इस संबंध में पिछली सरकार का योगदान असाधारण है। सतत विकास के लिए बनाए गए ११३ मापदंडों में ओडिशा पहले ही सफलता हासिल कर चुका है।

अच्छी नीयत, सफल नीति और कुशल नेतृत्व के यथार्थ आदर्श स्वर्गीय दीनदयाल उपाध्याय जी

अच्छी नीयत, सफल नीति और कुशल नेतृत्व के यथार्थ आदर्श स्वर्गीय दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म २५ सितंबर, १९१६ में हुआ था। उनकी पूरी जीवनी पढ़ने के उपरांत मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मात्र एक सफल चिंतक ही नहीं थे अपितु संगठनकर्ता भी थे। वे एकात्मक मानववादी तथा अन्त्योदय के जन्मदाता भी थे। उनके खुले विचार समावेशी थे।

लेकिन बड़े ही दुख के साथ कहना पड़ता है कि भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी के प्रवर्तक की हत्या ११फरवरी,१९६८ में मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर रात के पावने चार बजे कर दी गई। मेरा ऐसा मानना है कि अगर वे आज ज़िन्दा रहते तो विश्व मंच पर भारत राष्ट्र का नक्शा ही कुछ विशेष रहता। उनकी पावन जयंती पर उनको हार्दिक श्रद्धांजलि और उनके अंत्योदय कार्यक्रम को संकल्पित भाव से आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा के साथ

-अशोक पाण्डेय.

हिन्दी माह के समापन पर उत्कल अनुज हिन्दी पुस्तकालय, भुवनेश्वर में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन २९ सितंबर,शाम को आयोजित। जमशेदपुर से पधारीं हिन्दी कवयित्री सोनी सुगंधा तथा डॉ रागिनी भूषण आदि ने अपने अपने स्वरचित कविता पाठ से उपस्थित सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है शहद

शहद में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुण होने के कारण इसके नियमित सेवन से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है. सुबह खाली पेट गुनगुने पानी में शहद के साथ नींबू का रस मिलाकर पीने से चर्बी कम करने और पाचन संबंधी कई समस्याएं ठीक हो सकती हैं. पाचन ठीक होने से कब्ज, गैस, अपच जैसी पेट संबंधी समस्याएं नहीं होने पाती हैं.शहद ग्लूकोज से भरपूर होता है। शरीर इसे जल्दी अवशोषित कर लेता है, जिससे व्यक्ति को ऊर्जा मिलती है. इसके अतिरिक्त व्यायाम करने से पहले आधा चम्मच शहद खाने से थकान महसूस नहीं होती. यदि चाय या कॉफी पीना पसंद करते हैं, तो चीनी के स्थान पर शहद का इस्तेमाल करें. शहद के अद्भुत गुण बीपी को संतुलित रखने का कार्य करते हैं. इसके लिए रोज १ चम्मच शहद गर्म पानी में मिलाकर पिएं. रोजाना २ चम्मच शहद का सेवन करने से खांसी से आराम मिलता है. इसमें एंटीमाइक्रोबियल गुण होते हैं, जिसके कारण इसका सेवन करने से इंफेक्शन पैदा करने वाले बैक्टीरिया भी खत्म हो जाते हैं. शहद वाकई में त्वचा की सुंदरता बढ़ने की प्राकृतिक दवा है. शहद से चेहरे पर आधे घंटे तक मसाज करें, इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें. यही नहीं शहद स्किन के लिए नेचुरल मॉइश्चराइजर की तरह काम करता है, जिससे स्किन में नमी बनी रहती है. इससे चेहरे के मुंहासे, दाग-धब्बे और रुखेपन की समस्या दूर होती है. इसके अतिरिक्त शहद में एंटी-एजिंग गुण भी पाए जाते हैं, जो त्वचा की झुर्रियों को कम करता है.

थ्रेडिंग के बाद स्किन हो जाती है लाल तो...

चेहरे की खूबसूरती को निखारने के लिए महिलाएं थ्रेडिंग (Threading) करवाती करती हैं. हालांकि कई महिलाओं को इससे कई तरह की दिक्कतें हो जाती हैं. दरअसल, धागे की मदद से बालों को हटाने की यह प्रक्रिया कई बार स्किन (Skin) को नुकसान पहुंचा देती है. कई बार सेंसेटिव स्किन (Sensitive Skin) वाली महिलाओं को आइब्रो (Eyebrow) बनवाने के बाद दर्द और जलन की समस्या हो जाती है. कुछ महिलाओं को थ्रेडिंग की वजह से स्किन पर रेडनेस हो जाती है, तो किसी को दाने तक निकल आते हैं. हालांकि थ्रेडिंग के बाद होने वाली जलन, दाने आदि ऐसी ही समस्याओं को आप आसानी से दूर कर सकती हैं.

स्किन के लिए एलोवेरा बहुत फायदेमंद माना जाता है. एलोवेरा में ऐसे गुण होते हैं, जो स्किन को ठंडक और राहत पहुंचाते हैं. इसके अलावा स्किन पर होने वाली रेडनेस और दानों को भी यह ठीक करता है. अगर आप भी थ्रेडिंग के बाद होने वाली इस समस्या से जूझ रही हैं तो अपनी स्किन पर एलोवेरा जरूर लगाएं. थ्रेडिंग के बाद अपनी स्किन पर केमिकल टोनर न लगाएं. चेहरे की नाजुक स्किन को यह नुकसान पहुंचा सकता है. इसकी बजाय अपनी स्किन पर गुलाब जल लगाएं. इससे आपकी स्किन में ताजगी आएगी और दानों की समस्या नहीं होगी.

कई महिलाओं को थ्रेडिंग करवाने के बाद स्किन पर जलन की समस्या हो जाती है. इसके लिए आसान उपाय है कि आप जलन वाली स्किन पर कुछ मिनट के लिए खीरे की स्लाइस रख लें. इससे स्किन को ठंडक का एहसास होगा और जलन दूर हो जाएगी.स्किन के लिए कच्चा दूध बहुत अच्छा माना जाता है. इससे स्किन की ड्राइनेस भी दूर होती है. थ्रेडिंग के बाद भी आप अपनी स्किन पर कच्चे दूध को कॉटन की मदद से लगाएं. इससे स्किन पर होने वाली जलन से राहत मिलेगी और स्किन का रूखापन भी दूर हो जाएगा.

रोज करें खास योगासन...

खराब जीवनशैली या तनाव के कारण त्वचा पर समय से पहले झुर्रियां नजर आने लगती हैं. अस्वस्थ आहार, धूम्रपान, शराब का सेवन जैसी आदतें भी त्वचा की चमक को कम करती हैं. त्वचा की एक और आम समस्या मुंहासे **(Pimples)** हैं. ये कभी शरीर में होने वाले हार्मोनल बदलावों के कारण विकसित होते हैं, तो कभी खराब पाचन का परिणाम होते हैं. कारण जो भी हो, लेकिन त्वचा से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा पाने और इसकी चमक वापस लाने के लिए योग फायदेमंद हो सकता है. कुछ ऐसे योगासन हैं जिनके जरिए खूबसूरत और दमकती त्वचा पाने में मदद मिल सकती है. इन योगासनों का अभ्यास करने से सिर और चेहरे के हिस्से में ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जो प्राकृतिक रूप से त्वचा में निखार लाएंगे. वहीं उल्टे या सिर के बल करने वाले आसन करने से मस्तिष्क में ऑक्सीजन और खून का बहाव ज्यादा होता है. इससे तंत्रिका तंत्र में सुधार होता है, मेटाबॉलिक दर बढ़ता है और ऊर्जा का स्तर ऊंचा होता है.

सर्वांगासन करने से त्वचा में ढीलापन और झुर्रियों को कम करने में मदद मिलती है. यह आसन सिर को रक्त की आपूर्ति करके डलनेस से छुटकारा पाने में मदद करता है. इससे मुंहासे से निपटने में मदद मिलती है. उर्ध्व धनुरासन को चक्रासन भी कहते हैं. इसमें शरीर धनुष के आकार में होता है. इस आसन में सिर को नीचे लटकाया जाता है जिससे रक्त का प्रवाह ज्यादा होता है. यह चेहरे पर निखार लाने में मदद करता है. यह आसन कठिन जरूर है लेकिन इसका नियमित रूप से अभ्यास करने पर कमर में लचीलापन आता है. यह आसन फेफड़ों में ऑक्सीजन के प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे पाचन तंत्र में सुधार आता है.

शीर्षासन को सभी आसनों का राजा माना जाता है. इसे करना शुरुआत में कठिन जरूर है लेकिन इसके बहुत लाभ है. यह सुंदरता और त्वचा के स्वास्थ्य को बनाए रखता है. इस आसन को करने से सिर नीचे की ओर मुड़ जाता है, जिसकी वजह से ऑक्सीजन चेहरे की तरफ संचारित होता है और खून का संचार अच्छा होता है. इससे चेहरे पर चमक आती है और इसके अभ्यास से झुर्रियां गायब होती हैं. खड़े-खड़े आगे झुकने वाले इस आसन में चेहरे पर रक्त प्रवाह बढ़ता है जो त्वचा को चमकाने का काम करता है. यह आसन त्वचा की नई कोशिकाओं को बनाने में मदद करता है.शरीर में ज्यादा गर्मी होने से मुंहासे की परेशानी होती है और इससे त्वचा पर असर पड़ता है. प्राणायाम शरीर को ठंडक देता है. चमकदार त्वचा के लिए अनुलोम-विलोम, शीतली और शीतकारी प्राणायाम व कपालभाती किया जा सकता है. ये नाड़ियों में शुद्ध ऑक्सीजन प्रवाहित करते हैं जिससे त्वचा की चमक बनी रहती है.

हेल्थ का खजाना खजूर

सर्दियों के मौसम में आपने खजूर तो खाया ही होगा. खजूर न सिर्फ स्वादिष्ट बल्कि सेहत के खजाने से भरपूर भी होता है. खजूर की सबसे खास बात है इसमें उन तमाम विटामिन, मिनरल्स की भरपूर मात्रा, जो शरीर के लिए रामबाण औषधि की तरह काम करता है.भरपूर प्रोटीन (Protein) और विटामिन (Vitamins) से लैस खजूर संतुलित तरीके से वजन बढ़ाने में मदद कर सकता है. आप इसे घी के साथ खा सकते हैं और खीरे के साथ भी. सेवन विधि अलग है, क्योंकि ये शरीर के तीन प्रकार यानि वायु, कफ और पित्त प्रधान को देखकर तय किया जाता है. खजूर में आयरन भरपूर मात्रा में होता है. आयरन की कमी शरीर में कई तरह की परेशानियों को जन्म दे सकती है. जैसे सांस का छोटा होना, एनीमिया, थकान आदि. साथ ही ये आपके खून को साफ करने में भी मदद करता है.

खजूर के इस्तेमाल से गठिया रोग में लाभ मिलता है. खजूर में मौजूद मैंग्नीज, सेलेनियम, कॉपर, मैग्नीशियम जैसे तत्व आपकी हड्डियों की तदंरुस्ती के लिए काफी कारगर होते हैं.

अगर आप रोजाना सुबह पानी भिगो के रखी खजूर का सेवन करते हैं तो इसमें मौजूद फाइबर आपके पाचन तंत्र को बेहतर करता है. कब्ज के रोगियों को खजूर के सेवन की सलाह दी जाती है.

खजूर में कोलेस्ट्रोल और यहां तक की शुगर की मात्रा भी बहुत कम होती है. जिससे दिल की सेहत अच्छी रहती है. शुगर की मात्रा कम होने से भी ये बेहद फायदेमंद है. खजूर दुनिया भर में सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले फल में से एक है.

आयुर्वेद (Ayurveda) के अनुसार, खजूर एक चमत्कारी औषधि है और इससे कई रोगों का इलाज किया जा सकता है. शारीरिक कमजोरी हो या शरीर में खून की कमी, हृदय रोग हों. या ज्यादा प्यास लगने की समस्या. इन सबको ठीक करने में खजूर आपकी मदद कर सकता है.

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८८

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १. आंध्र प्रदेश का लोक नृत्य क्या है?

प्रश्न २. भारत के गृह मंत्री कौन है?

प्रश्न ३. भारत के वित्त मंत्री कौन है?

प्रश्न ४. भारत के RBI गवर्नर कौन हैं?

प्रश्न ५. किस भारतीय ने 'प्रबुद्ध भारत' पत्रिका शुरू की?

प्रश्न ६. भारत के शिक्षा मंत्री कौन है?

प्रश्न ७. भारत के रक्षा मंत्री कौन है?

प्रश्न ८. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री कौन हैं?

प्रश्न ९. तमिलनाडु के शासक कौन है?

उ

प्रश्न १०. दुनिया में २०२० से कौन सी वैश्विक महामारी चल रही है?

प्रश्न ११. फेसबुक के संस्थापक कौन है?

प्रश्न १२. भारत में पहला फोन कब लॉन्च किया गया था?

प्रश्न १३. Leverage Edu के संस्थापक कौन है?

प्रश्न १४. CA का फुल फ़ॉर्म क्या है?

प्रश्न १५. भारत में लाइसेंस प्राप्त करने की आयु क्या है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

**Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com**

नामः...

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

बैन की गई दवाएं

पैरासिटामॉल सहित ५३ दवाएं क्वालिटी टेस्ट में फेल

पैरासिटामॉल सहित ५३ दवाएं क्वालिटी टेस्ट में फेल पाई गई हैं। इनमें विटामिन, शुगर और ब्लड प्रेशर की दवाओं के अलावा एंटीबायोटिक्स भी शामिल हैं। देश की सबसे बड़ी ड्रग रेगुलेटरी बॉडी सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (CDSCO) ने इसकी लिस्ट जारी की है।

CDSCO की लिस्ट में कैल्शियम और विटामिन डी३ सप्लीमेंट्स, एंटी डायबिटीज की गोलियां और हाई ब्लड प्रेशर की दवाएं शामिल हैं। बैन की गई दवाओं की लिस्ट में दौरे और एंग्जाइटी में इस्तेमाल की जाने वाली क्लोनाजेपाम टैबलेट, दर्द निवारक डिक्लोफेनेक, सांस की बीमारी के लिए इस्तेमाल होने वाली एंब्रॉक्सोल, एंटी फंगल फ्लुकोनाजोल और कुछ मल्टी विटामिन और कैल्शियम की गोलियां भी हैं।

ये दवाएं हेटेरो ड्रग्स, अल्केम लेबोरेट्रीज, हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स लिमिटेड (HAL), कर्नाटक एंटीबायोटिक्स एंड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड जैसी बड़ी कंपनियों द्वारा बनाई जाती हैं।

CDSCO ने ४८ दवाओं की सूची जारी की

पेट के इंफेक्शन के लिए दी जाने वाली दवा मेट्रोनिडाजोल भी इस जांच में फेल हो गई है, जिसे हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स लिमिटेड बनाती है। इसी तरह टॉरेंट फार्मास्युटिकल्स की शेलकाल टैबलेट्स भी जांच में असफल रहीं।

CDSCO ने ५३ दवाओं की क्वालिटी टेस्ट किया था, लेकिन ४८ दवाओं की ही सूची जारी की। क्योंकि ५३ में से ५ दवाइयां बनाने वाली कंपनियों ने कहा कि ये उनकी मेडिसिन नहीं हैं, बल्कि मार्केट में उनके नाम से नकली दवाइयां बेची जा रही हैं। इसके बाद उन्हें लिस्ट से हटा दिया गया।

अगस्त में १५६ फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन दवाओं पर रोक लगाई

केंद्र सरकार ने इसी साल अगस्त में १५६ फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन (FDC) दवाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था। ये आमतौर पर बुखार और सर्दी के अलावा पेन किलर, मल्टी-विटामिन और एंटीबायोटिक्स के रूप में इस्तेमाल की जा रही थीं।

सरकार ने कहा कि इनके इस्तेमाल से इंसानों को खतरा होने की आशंका है। इसलिए देशभर में इन दवाओं के प्रोडक्शन, कंजम्पशन और डिस्ट्रीब्यूशन पर रोक रहेगी।

सरकार ने ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड की सिफारिशों पर यह आदेश जारी किया था। बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि इन FDC दवाओं में मौजूद इन्ग्रेडिएंट्स का कोई मेडिकल जस्टिफिकेशन नहीं है।

एक ही गोली में एक से ज्यादा दवाओं को मिलाकर बनाई गई दवाएं फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन ड्रग्स (FDC) कहलाती हैं, इन दवाओं को कॉकटेल ड्रग्स के नाम से भी जाना जाता है।

केंद्र सरकार की ओर से जारी आदेश के मुताबिक एमाइलेज, प्रोटीएज, ग्लूकोएमाइलेज, पेक्टिनेज, अल्फा गैलेक्टोसिडेज, लैक्टेज, बीटा-ग्लूकोनेज, सेल्युलेस, लाइपेज, ब्रोमेलैन, जाइलेनस, हेमिकेल्यूलेस, माल्ट डायस्टेज, इनवर्टेज और पापेन के इस्तेमाल से इंसानों को खतरा होने की आशंका है।

बैन की गई दवाओं की लिस्ट में हेयर ट्रीटमेंट, एंटीपैरासिटिक (परजीवियों के इन्फेक्शन में इस्तेमाल), स्किनकेयर, एंटी-एलर्जिक के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं भी शामिल हैं। सरकार ने कहा इन दवाओं के बदले दूसरी दवाएं मार्केट में उपलब्ध हैं। उन पर कोई रोक नहीं रहेगी।

इसी साल मई में राजस्थान में मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना के तहत सप्लाई होने वाली १० दवाइयों के सैंपल फेल हो गए हैं। राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन (आरएमएससी) ने ८ कंपनियों की १० दवाइयों की सप्लाई पर रोक लगा दी है। इन दवाइयों में फंगल इन्फेक्शन में काम आने वाली गोलियां, मलेरिया के गंभीर मरीजों को लगाए जाने वाले इंजेक्शन, आई ड्रॉप और सांस में तकलीफ होने पर काम आने वाली दवाई अस्थलीन शामिल है।

CDSCO
Central Drugs Standard Control Organization

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

उपहार

कमल ने लक्ष्य किया विमला खुद़ भी भूखी है। समय भी अधिक हो गया। इसी स्थिति में उसने बनाया है। कितनी देर से वह प्रतीक्षा में बैठी है। और अब जब कि मुझे उसके साथ बैठकर खाना चाहिए, मैं उससे इस प्रकार का प्रस्ताव कर रहा हूँ। उसने एक बार फिर जो विमला के उत्तप्त अरुण मुख की ओर ध्यान से देखा तो उसे अपना प्रस्ताव सर्वथा अप्रीतिकर प्रतीत हुआ। वह लौट पड़ा। लौटते हुए कह गया–अच्छा, तो मैं अभी आया। उन्हें कमरे में आदर के साथ बिठा आऊँ और साथ ही दस मिनट तक और अधिक प्रतीक्षा करने की अनुमति ले आऊँ। 'आह!' तुम आए हो मेरे राधाकांत बाबू–यह डेप्यूटेशन लेकर, अच्छा! लेकिन यार बहुत दिनों में मिले हो और फिर इस डेप्यूटेशन के साथ। खैऱ, मैं अभी आया। मैंने अभी तक भोजन नहीं किया है। कुछ इतने आवश्यक कार्यों में लगा रहा कि भोजन करने तक को समय पर न उठ सका। जा ही रहा था कि पता चला आप लोग तशरीफ़ लाए हैं।' कमल ने स्वाभाविक उल्लास-मुखरित ढंग से कहा।

विमला खाना परोस रही थी। कमल बैठा पत्र लिख रहा था। वह सोचता था कि जब इसे समाप्त कर लूँगा, तब उठूँगा। देर ही क्या है, कुछ भी तो और अधिक नहीं लिखना है। बस, यही दो-तीन, हाँ दो ही पंक्तियाँ और लिखने को हैं कि फिर मैं हूँ और भोजन।

और विमला मन-ही-मन झुँझला रही थी कि जब तक मैं शाक पकाऊँ-पकाऊँ तब तक तो आफ़त मचा दी। दो-दो मिनट में विकल हो-होकर पूछते रहे कि कितनी देर है–कितनी देर है। और अब जब मैं खाना परोसने लगी तो 'आया, आया, बस अभी आया' कह रहे हैं–मगर आते नहीं! बस, इनकी यही प्रकृति मुझे अच्छी नहीं लगती। कितनी तक़लीफ़ होती है खाना पकाने में! बनाना पड़े तो मालूम हो जाए। और मालूम क्या हो जाए। खुद़ भी तो न खा सके उसे। फिर भी किसी तरह जो मर-खप के बना भी लूँ तो यह हाल है इनका कि मुझे बेवक़ूफ़ बनना पड़ता है। कुछ कहो, तो झट जवाब दे बैठेंगे कि फिर बनाती ही बेकार हो–मैंने तो हज़ार बार कहा कि महराजिन रख लो।...मैं भी बैठी रहूँगी इसी तरह। जब बुलाना व्यर्थ है तो बुलाया ही क्यों जाए? न, मैं अब नहीं बुलाऊँगी, नहीं, किसी तरह नहीं।

'अरे सुनती हो?'

विमला को ही लक्ष्य करके कमल ने कहा था। लेकिन विमला ने सुनकर भी नहीं सुना। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह क्यों उत्तर दे? किसका उत्तर दे? किसे उसके उत्तर की अपेक्षा है? जब कहते-

कहते हार गई, तब नहीं आए। और अब इतनी देर के बाद भी वहीं से कहते हैं–सुनती हो? कौन सुनती है? कोई नहीं सुनती। क्यों सुने कोई? क्या पड़ी है उसे जो सुने? वह नहीं सुनती है। कोई नहीं सुन रहा है। कोई सुनने क्यों लगा? वह सुनती तो है मगर नहीं सुनती, हाँ, नहीं सुनती।

कमल अब उठकर उसके पास चला आया। वह चला तो आया पर निकट खड़ा रहकर बोला–कुछ लोग आ गए हैं और उनसे इसी समय दो बातें कर लेनी है। बेचारे बड़ी दूर से आए हैं। मुझसे यह नहीं हो सकता कि उन्हें बेरंग वापस लौटा दूँ। कुछ वक़्त देना ही पड़ेगा। कुछ ऐसी ही आवश्यकता है। समझती हो न? तुम अब खाना खा लो। मुझे शायद देर ही लग जाए।...शायद क्या बल्कि निश्चित है देर लग जाना।

विमला ने पहले तो चाहा कि वह चुप ही रहे अब भी, उनकी इस बात का कोई उत्तर न दे। किंतु वह वास्तव में इस प्रकार की नारी नहीं है। परिस्थिति और कारण को लेकर उसकी मर्यादा की अवमानना करना उसकी प्रकृति के प्रतिकूल है। वह अतीत से उलझती रहती है क्योंकि उसी का प्रभाव लेकर भविष्य को देखती है; किंतु वर्तमान की उपेक्षा उसे स्वीकार नहीं होती। अतएव उसने कहा–किंतु क्या दस-पाँच मिनट के लिए उन्हें रोक नहीं सकते? वे लोग क्या तुम्हारा इस समय भोजन करना भी रोक देना उचित समझेंगे? तुम्हारी असुविधा का क्या उन्हें कुछ भी खय़ाल न होगा?

कमल ने लक्ष्य किया विमला खुद़ भी भूखी है। समय भी अधिक हो गया। इसी स्थिति में उसने बनाया है। कितनी देर से वह प्रतीक्षा में बैठी है। और अब जब कि मुझे उसके साथ बैठकर खाना चाहिए, मैं उससे इस प्रकार का प्रस्ताव कर रहा हूँ।

उसने एक बार फिर जो विमला के उत्तप्त अरुण मुख की ओर ध्यान से देखा तो उसे अपना प्रस्ताव सर्वथा अप्रीतिकर प्रतीत हुआ। वह लौट पड़ा। लौटते हुए कह गया–अच्छा, तो मैं अभी आया। उन्हें कमरे में आदर के साथ बिठा आऊँ और साथ ही दस मिनट तक और अधिक प्रतीक्षा करने की अनुमति ले आऊँ।

'आह!' तुम आए हो मेरे राधाकांत बाबू–यह डेपुटेशन लेकर, अच्छा! लेकिन यार बहुत दिनों में मिले हो और फिर इस डेपुटेशन के साथ। खैऱ, मैं अभी आया। मैंने अभी तक भोजन नहीं किया है। कुछ इतने आवश्यक कार्यों में लगा रहा कि भोजन करने तक को समय पर न उठ सका। जा ही रहा था कि पता चला आप लोग तशरीफ़ लाए हैं।' कमल ने स्वाभाविक उल्लास-मुखरित ढंग से कहा।

'अच्छा तो है! कर आओ भोजन, लेकिन अकेले-ही-अकेले भोजन कर लोगे?' राधा बाबू ने हँस के मृदुल दोलन में साधारणतया कह दिया–उसी प्रकार जैसे कोई भी मित्र दूसरे से ऐसी स्थिति में प्रायः कह ही देता है।

'अच्छी बात है, मेरा सौभाग्य! चलो, तुम भी चलो।' कमल के उत्तर के साथ उसका हार्दिक उल्लास भी मिश्रित होकर फूट निकला।

'ऐसे नहीं जाता। इस तरह तुमको तो कुछ मालूम न होगा, किंतु दूसरी आत्मा को जो आकस्मिक कष्ट होगा उसे मैं कैसे सहन करूँगा? न यार कमलेश, मुझे इस समय भोजन नहीं करना है, मैं तो यूँ ही कह उठा था। मैं भोजन कर चुका हूँ।' राधा बाबू कहते-कहते गंभीर हो उठे।

कमल ने लक्ष्य किया यह राधाकांत एक समय कितना चटुल था? क्लास-भर इसके मारे परेशान, बल्कि एक प्रकार से आंदोलित रहता था। और आज देखता हूँ कि इस कालांतर में ही वह कैसा विवेकशील बन गया है।

तब उस राधाकांत के प्रति कमल पहले अजेय आदरभाव से देखकर रह गया, फिर कुछ सोच-समझकर बोला–नहीं राधे, असुविधा की कोई बात न होगी। कम पड़ेगा तो कुछ और बाज़ार से मँगवा लूँगा। चलो! चलो! अब तुम्हें चलना पड़ेगा।

मेरे एक मित्र भी खाएँगे विमला! बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं। इच्छामात्र करने से सफलता इनके चरण चूमती रही है। मुझे इनका क्लासफ़ेलो रहने का गौरव प्राप्त हो चुका है। मुझे पता ही न था कि जेल जाकर भी यह शैतान बजाए दुर्बल पड़ने के इतना मोटा पड़ जाएगा। देखती क्या हो, वज़न में तीन मन से कम न होगा। यह जो कुछ भी तुमने बना रखा है, मैं तो समझता हूँ केवल इसके लिए भी काफ़ी न होगा।' कमल ढूँढ़-ढूँढ़कर ऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहा है जिससे विमला को पता चल जाए कि उसका यह मित्र ऐसा-वैसा साधारण व्यक्ति नहीं है। बड़ा आदमी तो वह है ही, साथ ही उसका घनिष्ठ मित्र

विमला चाहती तो उत्तर में कुछ कह सकती थी। किंतु वह कुछ कह न सकी। हाँ, विकल्प में थोड़ी मुड़कर, कढ़ाई में रखे हुए शाक को एक कटोरे में संभाल कर रखने में व्यस्त अवश्य हो गई। तब राधे ने उस समय न विमला को ही कुछ कहने का अवसर दिया, न कमलेश को। अब वह उसकी उस बात पर आ गया जिस पर उसे मतभेद था। वह बोला- हाँ, तुम्हारी उस बात को तो मैं भूल ही गया था–प्रकृति-परिवर्तन के संबंध में जो तुमने अभी कही थी। 'हाँ, हाँ, कहो कहो। मैं जानना चाहता हूँ इस विषय में तुमने क्या अनुभव किया है, तुम्हारे विचार क्या हैं?' कमल ने कहा ही था कि राधे बोल उठा–असल बात यह है कमलेश भाई कि मनुष्य की प्रकृति ही को पहले ज़रा समझ लेने की ज़रूरत है। क्या उसकी प्रकृति है, और क्या अप्रकृति, वास्तव में इसी को समझ लेना आवश्यक है। लोग प्रायः कहा करते हैं फलाँ आदमी तो बिल्कुल ही बदल गया। लोग उसकी रूप-रेखा, उसके आकार-प्रकार को देखकर ही प्रायः इस तरह की बातें कह डालते हैं। पर परिस्थितियों के चक्र में घूमने और छिन्न-भिन्न होते हुए उसके क्षण-क्षण के जीवन को देखकर वे यह नहीं सोचते कि प्रकाश सदा प्रकाश ही रहता है। यह बात दूसरी है कि कोई प्रकाश दिन का हो, कोई निशा का। अब यहाँ प्रश्न यह है कि दिन का प्रकाश तो प्रकाश है और उसे संसार स्वीकार करता है। किंतु जो प्रकाश रजनी के अंतर से फटा हुआ है वह अंधकार क्यों है?

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

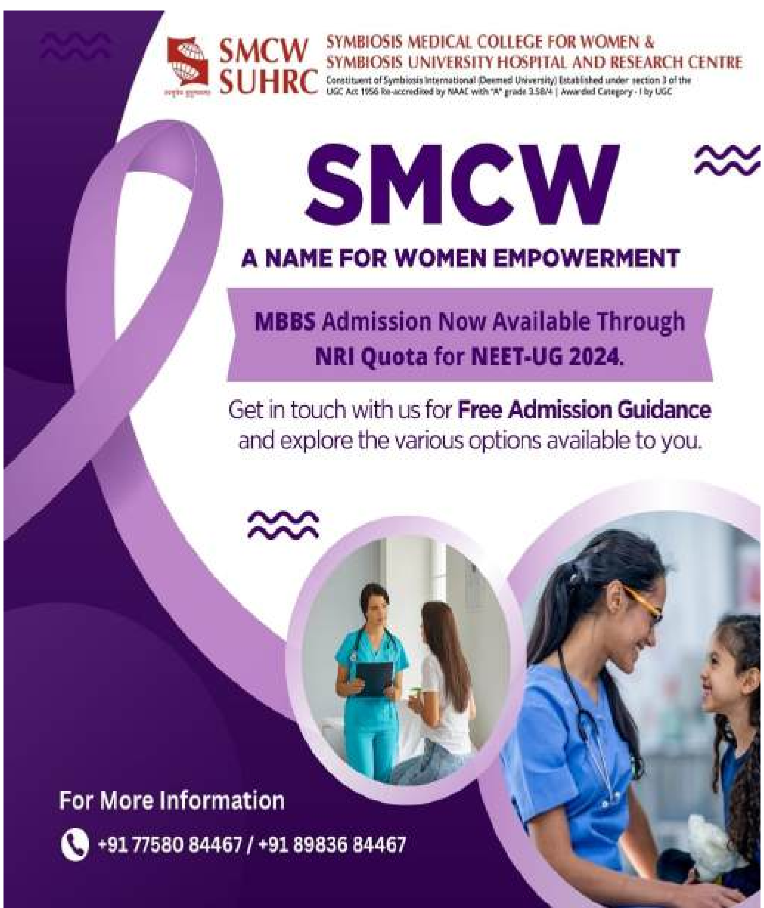

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

भी है।

तब विमला ने स्वामी के इस घनिष्ठ मित्र को केवल एक-दृष्टि से देखकर साड़ी को सिर पर आगे तक कुछ और अधिक खिसका लिया है। दो थालियों में भोजन जैसा परोसकर रखा था, उसे पूर्ववत न रखकर उसमें थोड़ा-थोड़ा कम कर लिया है, क्योंकि आकस्मिक आतिथ्य और समय-असमय के जल पान के लिए जो मिष्ट और सलोने खाद्य पदार्थ उसने बना रखे हैं, उनका भी उपयोग उसे अब करना है। बाज़ार से ही कुछ मँगाना पड़ा, तो फिर गृहस्थी की मर्यादा ही क्या रही?

परंतु उसने कहा–आइए।

तब कमल अपने राधे को लेकर भोजन करने बैठ गया। वह भोजन कर रहा है और साथ ही कुछ सोचता भी जाता है। यो निरंतर उसे कुछ-न-कुछ सोचना ही पड़ता है। बात कम काम अधिक यही उसकी प्रकृति है। किंतु जब कोई मित्र आया हो और साथ में भोजन कर रहा हो तब भी मौन ही बने रहना तो कुछ अधिक उत्तम या आवश्यक प्रीतिकर या शोभन प्रतीत नहीं होता। मानों इसी बात को लक्ष्यकर कमल ने कह दिया–और कहो राधे, खूब़ अच्छी तरह से हो न? किसी प्रकार की कोई असुविधा या कष्ट या...और क्या कहूँ? अंतिम शब्द कहते-कहते कमल राधे के मुँह की ओर देखकर हँस पड़ा।

'देखता हूँ, तुम बहुत बड़े आदमी हो गए। यहाँ तक कि तुमने इतना वैभव अर्जित कर लिया, इतना कि तुम्हें देखकर मुझे ईर्ष्या होती है तो भी तुम्हारा वह असाधारण सारल्य ज्यों-का-त्यों बना है।' राधे भोजन करते हुए अपनी ये बातें इतने मंद क्रम से करता जाता है कि न तो उसकी आहार गति प्रतिहत होने पाती है, न वार्ता-विनोद में ही किसी प्रकार की अरोचक गति का संयोग हो पाता है। साथ-ही-साथ वह कभी-कभी विमला पर भी एक दृष्टि डाल देता है।

'तो तुम्हारा खय़ाल यह है कि काल-गति से हमारी प्रकृति भी बदल जाती है। लेकिन भाई राधे, मैं ऐसा नहीं मानता! जीवन के प्रकपित अवधान हमारी गति बदल सकते हैं, हमारे आचार-व्यवहार की रूपरेखा को भी उलट-पुलट डालते हैं। मैं यह मानता हूँ। किंतु, किंतु हमारी नैसर्गिक प्रकृति पर उनका अनुशासन कभी चल नहीं सकता, क्षणिक परिवर्तन करने में भले ही वे यदा-कदा सफल होते रहें।'

राधे कमल की इस बात को सुनकर मुस्कराने लगा।

और कमल ने उसके इस हास को यथार्थता को लक्ष्य करके कहा–जान पड़ता है मेरे साथ तुम्हारा मतभेद पूर्ववत बना है।

विमला दोनों को बातें करते छोड़कर भंडार में चली गई थी। लौटकर उसने दो-दो कटोरियों में मिष्ठान्न और नमकीन पदार्थ दोनों थालियों के निकट रख दिए। तब उसी समय एक कटोरी से कुछ खुऱमे एक साथ उठाकर मुँह में डालने के पूर्व राधे बोला–तुम्हारे गृहस्थ्य-जीवन के इस सफल स्वरूप के लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूँ कमलेश!

कमल हँसने लगा। बोला–अच्छा-अच्छा, यह बात है! धन्यवाद।

फिर विमला की ओर उत्फुल्ल लोचनों से देखकर कहने लगा–सुनती हो विमला, राधे तुम्हें बधाई दे रहा है।

विमला चाहती तो उत्तर में कुछ कह सकती थी। किंतु वह कुछ कह न सकी। हाँ, विकल्प में थोड़ी मुड़कर, कढ़ाई में रखे हुए शाक को एक कटोरे में संभालकर रखने में व्यस्त अवश्य हो गई।

तब राधे ने उस समय न विमला को ही कुछ कहने का अवसर दिया, न कमलेश को। अब वह उसकी उस बात पर आ गया जिस पर उसे मतभेद था। वह बोला- हाँ, तुम्हारी उस बात को तो मैं भूल ही गया था–प्रकृति-परिवर्तन के संबंध में जो तुमने अभी कही थी।

'हाँ, हाँ, कहो कहो। मैं जानना चाहता हूँ इस विषय में तुमने क्या अनुभव किया है, तुम्हारे विचार क्या है?' कमल ने कहा ही था कि राधे बोल उठा–असल बात यह है कमलेश भाई कि मनुष्य की प्रकृति ही को पहले ज़रा समझ लेने की ज़रूरत है। क्या उसकी प्रकृति है, और क्या अप्रकृति, वास्तव में इसी को समझ लेना आवश्यक है। लोग प्रायः कहा करते हैं फलाँ आदमी तो बिल्कुल ही बदल गया। लोग उसकी रूप-रेखा, उसके आकार-प्रकार को देखकर ही प्रायः इस तरह की बातें कह डाल ते हैं। पर परिस्थितियों के चक्र में घूमने और छिन्न-भिन्न होते हुए उसके क्षण-क्षण के जीवन को देखकर वे यह नहीं सोचते कि प्रकाश सदा प्रकाश ही रहता है। यह बात दूसरी है कि कोई प्रकाश दिन का हो, कोई निशा का। अब यहाँ प्रश्न यह है कि दिन का प्रकाश तो प्रकाश है और उसे संसार स्वीकार करता है। किंतु जो प्रकाश रजनी के अंतर से फटा हुआ है वह अंधकार क्यों है?

तब तत्काल उत्तरंग मानस से कमलेश बोल उठा–वंडरफुल! कितनी अच्छी बात तुमने अनायास कह डाली! वाह!!

विमला ने उसी समय एक बार राधे के उस तेजोमय मुख की ओर दृष्टिक्षेप किया। थोड़ी देर से उसकी छाती के भीतर भूकंप-कालीन रत्नाकर की भाँति जो भीम विस्फूर्जन प्रतिध्वनित हो रहा था राधे के इस कथन को लेकर और फिर एक बार उसकी ओर देखकर आप-से-आप वह बिल्कुल शिथिल, ध्वस्त हो उठा। जिस त्यक्त अतीत ने आज अभी उसके मन-प्राण तक को बार-बार स्तंभित, विकल-विकंपित कर-करके एक अव्यक्त अभियोग से अतिशय अस्थिर किंवा विमूढ़ कर डाला था, निमेषमात्र के इस वैकल्पिक उपायन से उसके पराभूत चित्त की सारी दुर्बलता बात-की-बात में निष्प्रभ प्रशांत हो उठी।

इसी समय भोजन करके दोनों मित्र उठ खड़े हुए।

रात के ग्यारह बजे हैं? कमलेश सो रहा है। पास ही विमला भी लेटी हुई करवटें बदल रही है। कुछ स्वप्न उसके मानसपट पर उतर आए हैं।

'तुम्हारी यह आदत अच्छी नहीं है, भैया!'

'कौन-सी?'

'पूछते हो कौन-सी!'

'लो, जब मालूम नहीं है तब पूछना भी गुनाह है।'

'हाँ, गुनाह। मैं तुमसे भैया जो कहती हूँ।'

वह चुप रह गया। उसका मुख यकायक उतर गया। कोई बात वह फिर न कह सका। तब वह चल ने लगी। कुछ उद्विग्न होकर अपना तिरस्कार अपने ऊपर लादकर। किंतु उसी समय उसने सुना, वह कह रहा है–मेरी इस बुरी आदत के अनुभव करने का तुम्हें अब कभी अवसर न मिलेगा विमला! मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

वह लौट पड़ी। अपनी मर्यादित गंभीरता से विचालत होकर वह बोली– सचमुच, क्या तुम कानपुर छोड़ दोगे?

'छोड़ना ही पड़ेगा विमला क्योंकि मनुष्य की प्रकृति बदल नहीं सकती। उत्तर में वह कुछ न कह सकी थी। यद्यपि उन निर्वाक निःस्पद, निष्ठुर क्षणों

ने उसके इस जीवन को हो व्यर्थ कर डाला, तो भी उन क्षणों को वह फिर कभी न पा सकी। आज तक न पा सकी।

किंतु वह था कितना दृढ़प्रतिज्ञ! उसने कानपुर छोड़ ही दिया। यद्यपि उसने कोई अपराध नहीं किया था। एकमात्र यही आदत थी उसकी कि वह मुझे देखकर पुलकित हो उठता था। उसके उस हास्य-मुखरित आनन की उद्दीप्त आभा, उसकी उल्लास-तृप्त आँखें, अपना आंतरिक भाव प्रकट करने का लोभ संवरण न कर सकती थी। मुहल्ले की बात ठहरी। वह कभी-कभी अपनी सखियों के साथ निकलती, कभी माँ-भाभी के साथ। और इन सबके साथ निकलने पर भी वह उसकी ओर एक बार देखे बिना मानता न था। फलतः एक अदम्य बहिर्मुखी लज्जा से वह बिल्कुल संकुचित तथा अभिभूत हो उठती थी।

बस यही उसका अपराध था–और उससे सलग्न यही उसकी असुविधा।

और उसके बाद यह आज का दिन है।

'तुम्हारे गार्हस्थ्य-जीवन के इस सफल स्वरूप के लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।' और मेरे गार्हस्थ्य-जीवन का यह कैसा सफल स्वरूप है! किंतु जो प्रकाश रजनी के अंतर से फूटा हुआ है वह अंधकार क्यों है? कौन कहता है कि वह अंधकार है! क्या अब भी किसी में इतना साहस है कि वह उसे अंधकार कह सके? किंतु यह बात तो तुमने अपने आपको देखकर कह डाली है क्योंकि तुम एक प्रकार के अकल्पित स्वप्न हो। किंतु यह तो एक कविता हुई। और इस विमला के भीतर जो नारी है वह तो वैसी उस प्रकार की निरी कविता नहीं है, उसका एक शरीर है, एक पिंड! कभी उसे छूकर देखते तो जान पाते कि बाहर से प्रकाशमयी झलक मारने वाली इस विमला के भीतर का अंधकार अभी तक पूर्ववत् स्थिर है। अपने स्थान से वह टस-से-मस भी नहीं है। अभी तक उसके भीतर की गर्वित नारी उसी प्रकार तृषित है, जैसी वह कभी पहले थी। उसके प्रकृत स्वरूप का सांगोपांग अर्थ किया ही नहीं जा सका–यहाँ तक कि वह अभी तक माँ भी नहीं हो सकी! और फिर भी तुम उसके गार्हस्थ्य-जीवन का साफल्य देखने चले थे। ओह! इस परिवार का अंतरंग न देखकर, उसके बाह्य स्वरूप पर तुम ऐसे मुग्ध हो उठे कि बधाई भी उसे दे डाली। किंतु तुम्हारी यह बधाई तो उन्हीं के लिए थी। मेरे साथ उसका संबंध क्या? वह बधाई मेरे लिए नहीं है, नहीं है।

किंतु ठीक तो है। उन्होंने कह डाला था–सुनती हो विमला, राधे तुम्हें बधाई दे रहा है।

लेकिन उनके कहने से भी वह बधाई मेरे लिए नहीं हो सकती। वह उनके लिए थी, हाँ, उन्हीं के लिए। तो क्या वास्तव में वे बधाई के पात्र हैं? क्यों भला? क्या वे बधाई के पात्र केवल इसलिए हैं कि मेरे जीवन की यह धारा भी उन्हीं के साथ-साथ प्रवाहित हो रही है? तो तुम सोचते हो कि यह विमला अभी तक इसमें समर्थ है कि उसकी संगति का योगमात्र किसी को भी बधाई का पात्र बना सकता है? उफ़, तुम ऐसा क्यों मानते हो राधे भैया? क्या तुम अपनी प्रतिज्ञा भूल गए? क्या तुम्हें याद नहीं रहा तुमने किसी को कुछ कहा था? कहा था कि मेरी इस बुरी आदत के अनुभव करने का अब तुम्हें कभी अवसर न मिलेगा...तो फिर इतने दिनों के बाद तुमने यह अवसर क्यों दिया?

झर, झर, झर!

ये आँसुओं की बूँदें हैं कि सुधार्णव के मोती?

ओह! जीवन के ये दस वर्ष यूँ ही बीत गए। युग पलटा, कितने भूकंप आए। कितनी रिमझिम रातें, कितनी शारदी निशाएँ, कितने वासंतिक दोलन आए और गए, किंतु राधे की छाया भी कहीं न देख पड़ी। और एक युग के बाद जानबूझकर भी नहीं अनायास वे जो इस कुटीर में आ ही पड़े, तो यह विमला, यह मूर्त कालिमा अपने आपको न देखकर दोष देती है उसे, जो दिवाकर की भाँति वरेण्य और मनस्वी है!

तो तुम मुझसे बोले क्यों नहीं? कुछ विस्मय और कुछ दुलार से ओत-प्रोत होकर तुमने मुझे निकट पाकर मेरा नाम लेकर पुकारा क्यों नहीं? तुम्हारी मुद्रा इतनी गंभीर क्यों बनी रही? एक बार भी सिर उठाकर तुमने मुझे ध्यान से देखा क्यों नहीं? हूँ, मुझसे छूटकर जाओगे कहाँ?

झर! झर! झर!

ये अमृत की बूँदें क्रमागत रूप से क्यों आ रही हैं? झरने से बूँदें तो यूँ निरंतर आ सकती है; किंतु इस प्रकार के अमृत बूँदों को वह कहाँ से लाएगा? और उनके निःस्त्राव के साथ यह निःस्वन कैसा है! ये रुदन की सिसकियाँ हैं कि निर्झर की उत्ताल ऊर्मिमालाओं का अजस्र मुखरित महोल्लास।

'ऐं! तुम रोती हो विमला?'

एकाएक उठकर झट से विद्युत प्रकाश प्रस्फुटित कर कमल विमला के पलंग पर आकर उससे मिश्रित होकर बैठ गया। फिर उसके सिर की कुंतलराशि, वेणी और उसके अंतिम छोर तक अपना वाम हस्त फेरते हुए बोला–'रोती क्यों हो विमला? बतलाओ। मैं जानना चाहता हूँ, क्या मुझसे कोई अपराध हुआ है?'

अब विमला आँसू पोंछकर स्थिर होकर बैठ गई। उसका एक हाथ अब भी कमल के हाथों में था। उसके रुद्र-गंभीर मुख की अप्रकृत भंगिमा देखकर कमल यकायक स्तब्ध हो उठा और उसी समय विमला बोली–अपराध? अपराध की बात पूछते हो?

'हाँ!'

'तो इस राधे को तुम अंदर क्यों ले आए? किससे पूछकर ले आए?

'कमलेश अवाक हो उठा। तुरंत तो वह कोई भी उत्तर न दे सका। किंतु क्षण भर के बाद बोला–वह मेरा एक मित्र था, चिरपरिचित मित्र। उसका स्वागत-सत्कार करना मेरे लिए आवश्यक था, किंतु वह कोई भी हो उसके संबंध में इतना सोचने की आवश्यकता ही क्या है?

'वह क्यों आया था?'

'एक प्रस्ताव लेकर।'

'क्या उत्तर दिया?'

'उसकी बात मान लेना ही मैंने उचित समझा। स्वदेश के पीछे उसने अपना जीवन उत्सर्ग कर रखा है। उसे निर्विरोध कौंसिल में जाना चाहिए। उसके पक्ष में मैंने अपने आपको रोक लिया है।'

'जी–व–न–उ–त्स–र्ग कर रखा है।' विमला ने अतिशय मद स्वर में अटक-अटककर इस तरह कहा कि कमल उसकी अपरूप मुद्रा देखकर चकित-स्तंभित हो उठा। क्षण-भर रुककर बोला–बात क्या है विमला? मैं ज़रा साफ़-साफ़ जानना चाहता हूँ।

'वह मेरा शत्रु है। मेरी जीवन-धारा को उसने व्यर्थ ही में विकृत करने को चेष्टा की है। मुहल्ले के नाते से मैं उसकी बहन होती हूँ। फिर भी जान-बूझकर उसने मेरी अवहेलना की। मैं इसे कैसे सहन कर सकती हूँ?

'अरी पगली–यह मेरी ही भूल है? लेकिन तुम जानती हो विमला मैं कुछ आज का नया भुलक्कड़ नहीं हूँ। खैर् मुझे इसका दुःख है।' चलते-चलते वह अपनी सोने की घड़ी तुम्हें भेंट-स्वरूप दे गया है। उसने कहा भी था–'यह घड़ी मेरी बहन को दे देना। तुम उसे ले लो अभी। वह मेरे कोट के भीतरी जेब में पड़ी है।'

और विमला सोचती है–यह उपहार है कि मृत्यु?

भगवतीप्रसाद वाजपेयी

-साभारः हिंदवी

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

जल्लाद

'मैं जल्लाद हूँ बाबू' लड़के को पीठ पर लादते हुए खूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा-'मैं कुछ रुपयों का सरकारी गुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेंत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ और प्राण लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपये।' 'फाँसी की सजा पाने वालों से तो नहीं, बेंत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिश्वत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है- बहुत कम सरकारी नौकरों की गुजर हो सकती है। इसी से सभी अपने-अपने इलाकों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं गरीब छोटा सा गुलाम हूँ, मेरी रिश्वत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सबसे कहता हूँ कि कोई मुझे पूजे तो मैं उसके सगे-सम्बन्धियों को 'सुच्चे' बेंत न लगा कर 'हलके' लगाऊँ। और नहीं...तो सड़ासड़...सड़ासड़...।

प्रातः आठ साढ़े आठ बजे का समय था। रात को किसी पारसी कम्पनी का कोई रद्दी तमाशा अपने पैसे वसूल करने के लिए दो बजे तक झख मार-मार कर देखते रहने के कारण सुबह नींद कुछ विलम्ब से टूटी। इसी से उस दिन हवाखोरी के लिए निकलने में कुछ देर हो गई थी और लौटने में भी।

मैं वायु सेवन के लिए अपने घर से कोई चार मील की दूरी तक रोज ही आया-जाया करता था। मेरे घर और उस रास्ते के बीच में हमारे शहर का जिला जेल भी पड़ता था, जिसकी मटमैली, लम्बी-चौड़ी और उदास चहारदीवारियाँ रोज मेरी आँखों के आगे पड़ती और मेरे मन में एक प्रकार की अप्रिय और भयावनी सिहर पैदा किया करती थी।

मगर उस दिन उसी जेल के दक्षिणी कोने पर अनेक घने और विस्तृत वृक्षों की अनुज्ज्वल छाया में मैंने जो कुछ देखा, उसे मैं बहुत दिनों तक चेष्टा करने पर भी शायद न भूल सकूँगा। मैंने देखा कि मुश्किल से तेरह-चौदह वर्ष का कोई रूखा पर सुन्दर लड़का, एक पेड़ की जड़ के पास अर्धनग्नावस्था में पड़ा तड़प रहा है और हिचक-हिचक कर बिलख रहा है। उसी लड़के के सामने एक कोई परम भयानक पुरुष असुन्दर भाव से खड़ा हुआ, रूखे शब्दों में उससे कुछ पूछ-ताछ कर रहा था। यह सब मैंने उस छोटी सड़क पर से देखा, जो उस स्थान से कोई पचीस-तीस गज की दूरी पर थी। यद्यपि दिन की बाढ़ के साथ-साथ तपन की गरमी भी बढ़ रही थी और यद्यपि मैं थका और अनमना सा भी था, पर मेरे मन की उत्सुकता उस दयनीय दृश्य का भेद जानने को मचल उठी। मैं धीरे-धीरे उन दोनों की नज़र बचाता हुआ उनकी तरफ बढ़ा।

अब मुझे ज्ञात हुआ कि लड़का क्यों बिलख रहा था। मैंने देखा, उसके शरीर के मध्य-भाग पर, जो खुला हुआ था, प्रहार के अनेक काले और भयावने चिह्न थे। उसको बेंत लगाए गए थे। उस कोमल-मति गरीब बालक को अदालत की आज्ञा से। मेरा दिल धक् से होकर रह गया। न्याय ऐसा अहृदय, ऐसा क्रूर होता है? अब मैं आड़ में लुक कर उस तमाशे को न देख सका। झट मैं उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ और उस भयानक प्राणी से प्रश्न करने लगा-क्या इसको बेंत लगाए गए हैं? हाँ, उत्तर देने से अधिक गुर्रा कर उस व्यक्ति ने कहा-देखते नहीं हैं आप? ससुरे ने जमींदार के बाग से दो कटहल चुराए थे।

लड़का फिर पीड़ा और अपमान से बिलबिला उठा। इस समय वह छाती के बल पड़ा हुआ था, क्योंकि उसके घाव उसे आराम से बेहोश भी नहीं होने देना चाहते थे। वह एक बार तड़पा और दाहिनी करवट होकर मेरी ओर देखने की कोशिश करने लगा। पर अभागा वैसा न कर सका। लाचार फिर पहले ही सा लेट कर अवरुद्ध कण्ठ से कहने लगा-नहीं बाबू, चुरा कहाँ सका? भूख से व्याकुल होकर लोभ में पड़ कर मैं उन्हें चुरा जरूर रहा था, पर जमींदार के रखवालों ने मुझे तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लिया। 'गिरफ़्तार कर लिया तो तेरे घर वाले उस वक्त कहाँ थे? 'नीरस और शासन के स्वर में उस भयानक पुरुष ने उससे पूछा-'क्या वे मर गए थे? तुझे बचाने-जमींदार से, पुलीस से, बेंत से-क्यों नहीं आए?'

'तुम विश्वास ही नहीं करते?' लड़के ने रोते-रोते उत्तर दिया-'मैंने कहा नहीं, मैं विक्रमपुर गाँव का एक अनाथ भिखमंगा बालक हूँ। मेरे माता-पिता मुझे छोड़ कर कब और कहाँ चले गए, मुझे मालूम नहीं। वे थे भी या नहीं, मैं नहीं जानता। छुटपन से अब तक दूसरों की जूठन और फटकारों में पला हूँ। मेरे

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF
GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

अगर कोई होता तो मैं उस गाँव के जमींदार का चोर क्यों बनता? मेरी यह दुर्गति क्यों होती?... आह...बाप रे...बाप...।'

वह गरीब फिर अपनी पुकारों से मेरे कलेजे को बेधने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा कि किस रूप से मैं इस बेचारे की कोई सहायता करूँ। मगर उसी समय मेरी दृष्टि उस भयानक पुरुष पर पड़ी, जो जरा तेजी से उस लड़के की ओर बढ़ रहा था। उसने हाथ पकड़ कर अपना बल देकर उसको खड़ा किया।

'तू मेरी पीठ पर सवार हो जा।' उसी रूखे स्वर में उसने कहा-'मैं तुझे अपने घर ले चलूँगा।'

'अपने घर?' मैंने विवश भाव से उस रूखे राक्षस से पूछा-- 'तुम कौन हो? कहाँ है तुम्हारा घर?...और इसको अब वहाँ क्यों लिए जाते हो?'

'मैं जल्लाद हूँ बाबू' लड़के को पीठ पर लादते हुए खूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा-'मैं कुछ रुपयों का सरकारी गुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेंत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ और प्राण लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपये।' 'फाँसी की सजा पाने वालों से तो नहीं, बेंत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिश्वत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है- बहुत कम सरकारी नौकरों की गुज़र हो सकती है। इसी से सभी अपने-अपने इलाकों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं गरीब छोटा सा गुलाम हूँ, मेरी रिश्वत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सबसे कहता हूँ कि कोई मुझे पूजे तो मैं उसके सगे-सम्बन्धियों को 'सुच्चे' बेंत न लगा कर 'हलके' लगाऊँ। और नहीं...तो सड़ासड़...सड़ासड़...।

उसने ऐसी मुद्रा बना ली जैसे किसी को बेंत लगा रहा हो। वह भूल गया कि उसकी पीठ पर उसकी 'सड़ासड़' का एक गरीब शिकार काँप रहा है।

'मगर इस अनाथ को 'सुच्चे' बेंत लगा कर मैंने ठीक काम नहीं किया। इसने जेल में ही बताया था कि मेरे कोई नहीं है। मगर मैंने विश्वास नहीं किया। मैं अपने जिस शिकार का विश्वास नहीं करता, उसके प्रति भयानक हो उठता हूँ, और मेरा भयानक होना कैसा वीभत्स होता है, इसे आप इस लड़के की पीठ पर देखें। मगर इसे काट कर मैंने गलती की। यही न जाने क्यों मेरा मन कह रहा है।

'इसी से बाबू मैं इसे अपने घर ले जा रहा हूँ, वहाँ इसके घाव पर केले का रस लगाऊँगा और इसको थोड़ा आराम देने के लिए 'दारू' पिलाऊँगा, बिना इसको चंगा किए मेरा मन सन्तुष्ट न होगा, यह मैं खूब जानता हूँ।'

भैंसे की तरह अपनी कठोर और रूखी पीठ पर उस अनाथ अपराधी को लाद कर वह एक ओर बढ़ चला। मगर मैंने उसे बाधा दी-

'सुनो तो, मुझसे भी यह एक रुपया लेते जाओ। मुझको भी इस लड़के की दुर्दशा पर दया आती है।'

'क्या होगा रुपया बाबू? भयानकता से मुस्करा कर उसने रुपये की ओर देखा और उसको मेरी उँगलियों से छीन कर अपनी उंगलियों में ले लिया।'

'उसको दारू पिलाना, पीड़ा कम हो जाएगी। अभी एक ही रुपया जेब में था, मैं शाम को इसके लिए कुछ और देना चाहता हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है? नाम क्या है?' 'मैं शहर के पूरब उस कबरिस्तान के पास के डोमाने में रहता हूँ, डोमों का चौधरी हूँ, मेरा नाम रामरूप है। पूछ लीजिएगा।'

उस अनाथ लड़के का नाम 'अलियार' था, यह मुझे उस घटना के सातवें या आठवें दिन मालूम हुआ। ग्रामीणों में अलियार शब्द 'कूड़ा-कर्कट' के पर्याय रूप में प्रचलित है। उस लड़के ने मुझे बताया। उसके गाँव वालों का कहना है कि उसे पहले-पहल गाँव के एक 'भर' ने अलियार पर पड़ा पाया था। उसी ने कई वर्षों तक उसे पाला भी और उसका उक्त नामकरण भी किया। अलियार के अंग पर के बेंतों के घाव, बधिक रामरूप के सफल उपायों से तीन-चार दिनों के भीतर ही सूख चले, मगर वह बालक बड़ा दुर्बल-तन और दुर्बल-हृदय था। सम्भव है, उसको बारह बेंतों की सजा सुनाने वाले मजिस्ट्रेट ने, पुलिस की मायामयी डायरियों पर विश्वास कर, उसकी उम्र अठारह या बीस वर्ष मान ली हो, मगर मेरी नज़रों में तो वह बेचारा चौदह-पन्द्रह वर्षों से अधिक वयस का नहीं मालूम पड़ा। तिस पर उसकी यह रूखी-सूखी काया, आश्चर्य, किसी डाक्टर ने किस तरह उसको बेंत खाने योग्य घोषित किया होगा। जेल के किसी जिम्मेदार और शरीफ अधिकारी ने किस तरह अपने सामने उस बेचारे को बेंतों से कटवाया होगा।

जब तक अलियार खाट पर पड़ा-पड़ा कराहता रहा, अपने उसे बेंत खाने के भयानक अनुभव का स्वप्न देख-देख कर अपनी रक्षा के लिए करुण दुहाइयाँ देता रहा, तब तक मैं बराबर, एक बार रोज, रामरूप की गन्दी झोपड़ी में जाता था और अपनी शक्ति के अनुसार प्रभु के उस असहाय प्राणी की मन और धन से सेवा करता था, मगर मेरे इस अनुराग में एक आकर्षण था और यह था जल्लाद रामरूप।

न जाने क्यों उसका यह 'अलकतरा' रंग, उसकी भयानक नैपालियों-सी नाटी काया, उसका वह मोटा, वीभत्स अधर और पतला ओंठ, जिस पर घनी काली, भयावनी तथा अव्यवस्थित मूँछों का भार अशोभायमान था, मुझे कुछ अपूर्ण सा मालूम पड़ता था। न जाने क्यों उसकी बड़ी-बड़ी, डोरीली, नीरस और रक्तपूर्ण आँखें मेरे मन में एक तरह की सिहर सी पैदा कर देती थीं। पर आश्चर्य, इतने पर भी मैं उसे अधिक से अधिक देखना और समझना चाहता था।

उसकी मिट्टी की झोपड़ी में उसके अलावा उसकी प्रौढ़ा स्त्री भी थी। एक दिन जब मैंने रामरूप से उसकी जीवनी पूछी और यह पूछा कि उसके परिवार का कोई और भी कहीं है या नहीं, तो उसने अपनी विचित्र कहानी मुझे सुनाई।

'बाबू' उसने बताया-'पुश्त दो पुश्त से नहीं, मेरे खानदान में तेरह पुश्तों से यही जल्लादी का काम होता है। हाँ, उसके पहले मुसलमानी राज में मेरे पुरखे डाके डाला करते थे। मेरे दादा के दादा ऐसे प्रतापी थे कि सन् ५७ के गदर में उन्होंने इसी शहर के उस दक्षिणी मैदान में सरकार बहादुर के हुकुम से पाँच सौ और तीन पचीस और दो दस आदमियों को चन्द दिनों के भीतर ही फाँसी पर लटका दिया था। उन दिनों वह आठों पहर शराब छाने रहा करते थे। ...और कैसी शराब? मामूली नहीं बाबू, गोरों के पीने वाली-अंगरेजी।'

मैंने उसे टोका-रामरूप, क्या अब भी फाँसी देने से पूर्व तुम लोगों को शराब मिलती है?

'हाँ, हाँ, मिलती क्यों नहीं बाबू, मगर देसी की एक बोतल का दाम मिलता है, विलायती का नहीं, जिसको छान-छान कर मेरे दादा के दादा गाहियों के गाही लोगों को काल के पालने पर सुला देते थे। यही मेरे खानदान में सबसे अधिक धनी और जबरदस्त भी थे। लम्बे-चौड़े तो वह ऐसे थे कि बड़े-बड़े पलटनिये साहब उनका मुँह बकर-बकर ताका करते थे। मगर उनमें एक दोष भी बहुत बड़ा था। वह शराब बहुत पीते थे। इसी में वह तबाह हो गए और मरते-मरते गदर की सारी कमाई फूँक-ताप गए। हाँ, मैं भूल कर गया बाबू, वह मरे नहीं, बल्कि शराब के नशे में एक दिन बड़ी नदी में कूद पड़े और तब से लापता हो गए। नदी के उस ऊँचे घाट पर हमारे दादा ने उनका 'चौरा' भी वनवाया है, जिसकी सैकड़ों डोम पूजा किया करते हैं और हमारे वंश के तो वह 'वीर' ही हैं।'

अपने वीर परदादा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए, उनकी कहानी समाप्त करते-करते रामरूप ने धीरे से अपने कान उमेठे।

'रामरूप', मैंने कहा-'जाने दो अपने पुरखों की कहानी। वह बड़ी ही भयानक है। अब तुम यह बताओ

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

कि तुम्हारे कोई बच्ची-बच्चा भी है?'

'नहीं बाबू', किंचित गम्भीर होकर उसने कहा-'मेरी औरतिया को, कोई सात बरस हुए-एक लड़का हुआ ज़रूर था, मगर वह दो साल का होकर जाता रहा। बच्चे तो वैसे भी मेरे खानदान में बहुत कम जीते हैं। न जाने क्यों, जहाँ तक मुझे मालूम है, मेरे किसी भी पुरखे का एक से ज्यादा बच्चा नहीं बचा। मुझको तो वह भी नसीब नहीं। मेरी लुगैया तो अब बूढ़ी हो जाने पर भी बच्चा-बच्चा रिरियाती रहती है। मगर यह मेरे बस की बात तो है नहीं। मैं तो आप ही चाहता हूँ कि मेरे एक वीर बच्चा हो, जो हमारे इस पुश्तैनी रोजगार को मेरे बाद संभाले, पर जब दाता देता ही नहीं तब कोई क्या करे?'

'जब तक तुम्हारे और कोई नहीं है' मैंने उस जल्लाद के हृदय की थाह ली-'तब तक तुम इसी भिखमंगे को क्यों नहीं पालते-पोसते? तुमने कुछ अन्दाज लगाया है? कैसा है उसका मिजाज? यह तुम्हारे यहाँ खप जाने लायक है?' 'है तो, और मेरी लुगइया उसको चाहती भी है।' रामरूप ने ज़रा मुस्करा कर कहा-'पर मेरे अन्दाज से वह अलियार कुछ दब्बू और डर्रू है। और मेरे लड़के को तो ऐसा निडर होना चाहिए कि जरूरत पड़े तो बिना डरे काल की भी खाल खींच ले और जान निकाल ले। यह मंगन छोकरा भला मेरे रोजगार को क्या सँभालेगा?'

'कोई दूसरा रोजगार देखो रामरूप', मैंने कहा-'छोड़ो इस हत्यारे व्यापार को, इसमें भला तुम्हें क्या आनन्द मिलता होगा। ग़ज़ब की है तुम्हारी छाती, जो तुम लोगों को प्रसन्न भाव से बेंत लगाते हो और फाँसी के तख्ते पर चढ़ा कर अपने परदादा के शब्दों में काल के पालने में सुला देते हो, मगर यह सुन्दर नही।' 'हा, हा, हा, हा' रामरूप ठठाया- 'आप कहते हैं यह सुन्दर नहीं। नहीं बाबू, हमारे लिए यह परम सुन्दर है। आप जानते ही हैं कि मैं आप लोगों की 'नीच जाति' का एक तुच्छ प्राणी हूँ। आप तो नए ख़याल के आदमी हैं, इसलिए न जाने क्या समझ कर इस लड़के के प्रेम में मेरी झोपड़ी तक आए भी हैं, नहीं तो मैं और मेरी जाति इस इज्जत के योग्य कहाँ? मेरे घर वाले जल्लादी न करते, तो आप लोगों के मैले साफ करते और कुत्तों को मारते। मगर-हा, हा, हा, हा- कुत्तों को मारने से तो आदमी मारना कहीं अच्छा है, इसे आप भी मानेंगे, यद्यपि मेरी समझ से कुत्ता मारना और आदमी मारना, जल्लाद के लिए एक ही बात है। हमारे लिए वे भी अपरिचित और निरपराध और ये भी। दूसरों के कहने पर हम कुत्तों को भी मारते हैं और कुत्तों से ज्यादा समझदारों-आदमियों- को भी।'

इसके बाद मुझे एक काम के सिलसिले में बम्बई जाना पड़ा और वहीं पूरे दो महीने रुकना पड़ा। लौटने पर भूल गया उस जल्लाद को और परिचित उस अलियार को। प्रायः दो बरस तक उनकी कोई खबर न ली। फुर्सत भी अपनी मानविक हाय-हायों से, इतनी न थी कि उनकी ओर ध्यान देता।

मगर उस दिन अचानक अलियार दिखाई पड़ा, और मैंने नहीं, उसी ने मुझको पहचाना भी। मुझे इस बार वह कुछ अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और सुन्दर मालूम पड़ा। 'कहां रहते हो आजकल अलियार?' मैंने दरियाफ़्त किया, 'और वह अद्भुत मित्र कैसे हैं, जिनको तुम शायद सपने में भी न भूल सकते होगे।'

'वह मजे में है,' उसने उत्तर दिया- 'और मैं तभी से उसी के साथ रहता हूँ। तभी से उसकी वह स्त्री मुझको अपने बेटे की तरह मानती और पालती है।'

'तो क्या अब तुम भी वही व्यापार सीख रहे हो और रामरूप की गद्दी के हकदार बनने के यत्न में हो?'

'मुझे स्वयं तो पसन्द नहीं है उसका वह हत्या-व्यापार, मगर उसकी रोटी खाता हूँ तो बातें भी माननी पड़ती हैं। वह अब अक्सर मुझे फाँसी या बेंत लगाने के वक्त अपने साथ जेल में ले जाता है और अपने निर्दय व्यापार को बार-बार मुझे दिखा कर अपना ही सा बनाना चाहता है।' 'तुम जेल में जाने कैसे पाते हो?' मैंने पूछा-'वहाँ तो बिना अफसरों की आज्ञा के कोई भी जाने नहीं पाता है। फिर खास कर बेंत मारने और फाँसी के वक्त तो और भी बाहरी लोगों की मनाही रहती है।' 'मगर' उसने उत्तर दिया- 'अब तो मैं उसे मामा कह कर पुकारता हूँ और वह मुझे बहिन का लड़का और अपना गोद लिया हुआ बेटा कहकर अफसरों के आगे पेश करता है। कहता है, हमारे खानदान के सभी लड़कों ने इसी तरह देख-देख कर इस विद्या का अभ्यास किया था।' 'तो तुम भी अब,' मैंने एक उदास साँस ली-'जल्लाद बनने की धुन में हो? वही जल्लाद, जिसके अस्तित्व के कारण उस दिन जेल के उस कोने में पड़े तुम तड़प रहे थे और अपने भावी मामा की ओर देख-देख कर उसकी क्रूरता को कोस रहे थे। बाप रे... तुम उस भयानक रामरूप को प्यार करते हो- कर सकते हो?'

मेरे इस प्रश्न पर कुछ देर तक अलियार चुप और गम्भीर रहा। फिर बोला- 'नहीं बाबू जी मैं उस पशु को कदापि नहीं प्यार करता, बलिक आपसे सच कहता हूँ, उससे घृणा करता हूँ। जब-जब मेरी नजर उस पर पड़ती है, तब-तब मैं उसे उसी रूप में देखता हूँ, जिस रूप में उस दिन देखा था, जिसकी आप अभी चर्चा कर रहे थे। पर मैं उसकी स्त्री का आदर करता हूँ, जो हत्यारे की औरत होने पर भी हत्यारिणी नहीं, माँ है। बस उसी कारण मैं वहाँ रुका हूँ, नहीं तो मेरा बस चले तो मैं उस रामरूप को एक ही दिन इस पृथ्वी पर से उठा दूँ, जो लोगों की हत्या करके अपनी जीविका चलाता है। और आपसे छिपाता नहीं, मैं शीघ्र ही किसी न किसी तरह उसको इस व्यापार से अलग करूँगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।' 'वह ऐसा कपड़ा नहीं है अलियार' मैंने कहा- 'जिस पर कोई दूसरा रंग भी चढ़ सके। रामरूप को, जहाँ तक मैंने समझा है, स्वयं भगवान भी उसके व्यापार से अलग नहीं कर सकते। दूसरे जल्लाद चाहे कुछ कच्चे अधिक हों, मगर तुम्हारा यह मामा तो जरूर ही सभी जल्लादों का दादा गुरू है। बचना तुम उससे ...और उसको उसके पथ से विरत करना नहीं सो सावधान, वह ऐसा निर्दय है कि कुछ उलटी-सीधी समझते ही तुम्हारे प्राणों तक को मसल डालेगा।'

'पर बाबू' अलियार ने सच-सच कहा-'अब तो वह भी मुझको प्यार करने लग गया है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा ही मालूम पड़ता है। आश्चर्य से चकित हो कर कभी-कभी मेरी वह नई माँ भी ऐसा ही कहा और सोचा करती है। वह क्रुद्ध होने पर अब भी अक्सर मेरी माँ को बुरी तरह मारने लगता है, पर मेरी ओर-बड़ा से बड़ा अपराध होने पर भी - न जाने क्यों, तर्जनी उँगली तक नहीं उठाता। मुझे अपने ही साथ खिलाता भी है, और यहाँ-वहाँ-जेल में और छोटे-मोटे अफसरों के पास-ले भी जाता है। मगर इतने पर भी मैं उससे घृणा करता हूँ। उसका अमंगल और सर्वनाश चाहता हूँ।' 'क्यों...न जाने क्यों?' मैंने आश्चर्य से पूछा। उसने उत्तर दिया-'मैं उस पशु को कभी प्यार नहीं कर सकता। अच्छा बाबू, आपको भी देर हो रही है, मुझे भी। यहाँ रहा तो फिर कभी सलाम करने आ जाऊँगा। इस वक्त जाने दीजिए-सलाम।'

मुझको यह विश्वास नहीं था कि वह दुबला-पतला भिखमंगा बालक अपने निश्चय का ऐसा पक्का निकलेगा कि एक दिन सारे शहर में तहलका मचा कर छोड़ेगा पर वह विचित्र निकला। एक दिन प्रातःकाल होते ही शहर में जोरों की सनसनी फैली कि आज स्थानीय जिला-जेल से कोई बड़ा मशहूर फाँसी का कैदी भाग निकला है। यद्यपि उसके भागने के वक्त पहरेदार वार्डरों को कुछ आहट मिल गई थी, पर उससे कोई फायदा नहीं हो सका। भागने वाला तो भाग ही गया। हाँ, भगाने वालों में से एक नवयुवक पकड़ा गया है। समाचार तो आकर्षक था, इसलिए कि फाँसी का कोई कैदी भागा था। मेरे जी में आया कि जरा जेल की ओर टहलता हुआ चलूँ। देखूँ, वहाँ शायद रामरूप या अलियार मिलें। उन दोनों में से किसी के भी मिलने से बहुत सी भीतरी बातों का पता चल सकेगा। कपड़े पहन और टहलने की छड़ी हाथ में लेकर जब मैं जेल के पास पहुँचा तो वहाँ का हँगामा देखकर एक बार आश्चर्य में आ गया। फाटक के बाहर अपने क्वार्टरों के सामने मैदान में ड्यूटी से बचे हुए अनेक वार्डर हताश और उदास खड़े गत रात्रि की घटना पर मनोरंजक ढंग से वाद-विवाद कर रहे थे। 'भीतर बड़े साहब और कलेक्टर' एक ने दरियाफ़्त किया- 'उसका बयान ले रहे हैं, गज़ब कर दिया उस लौंडे ने। ऐसे जालिम आदमी को भगा दिया, जिसे कि, अब सरकार पा ही नहीं

3 Austrian Diamond Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

सकती। मैंने पहले इस छोकरे को ऐसा नहीं समझा था।' 'अरे उसको छोकरा कहते हो?' दूसरे मुसलमान वार्डर ने कहा- 'साला चाहे तो बड़े-बड़ों को चरा के छोड़ दे। मगर उस पाजी की वजह से बेचारा रामरूप पिस जाएगा, क्योंकि अपना-अपना बोझ हलका हल्का करने के लिए सभी गरीब रामरूप पर टूटेंगे। उसी की वजह से वह जेल में आने-जाने और उसके भेद पाने लायक हुआ था। अब देखना है, रामरूप की डोंगी किस घाट लगती है।' 'वह भी अफसरों के सामने जेलर साहब द्वारा बुल ाया गया है। शायद उसको भी बयान देना होगा।'

'नहीं', किसी गम्भीर वार्डर ने कहा-'जेल के कर्मचारियों से जब कोई गलती हो जाती है, तब अपनी सारी ताकत लगा कर वह उसे छिपाने की कोशिश करते हैं। मुझे ठीक मालूम है कि उस लड़के के सिलसिले में रामरूप का नाम लिया ही न जाय और यह साबित ही न होने दिया जाय कि वह पहले से यहाँ आता-जाता था। यह बात रामरूप को और उस लौंडे को भी समझा दी गई है।' 'मगर वह पाजी छोकरा, जिसने उस मशहूर डाकू को भगा कर हमारे सर पर आफत का पहाड़ ढा दिया है, जेलर की सलाह मानेगा ही क्यों? अगर अपने बयान में वही कुछ कह दे?' 'अजी कहेगा ज़रूर ही', किसी बूढ़े वार्डर ने राय दी- 'आखिर इस भगाई में एक खून भी तो हुआ है। माना कि खून लड़के ने नहीं, उस डाकू के किसी साथी ने किया होगा, पर अगर दूसरे न पकड़े गए तो उस वार्डर का खून तो इसी छोकरे के माथे मढ़ा जाएगा। उफ, बड़े जीवट की यह घटना हुई है। मैं तो तीस साल से इस नौकरी में हूँ। इस बीच में पचासों कैदियों के भागने की बातें मैंने सुनीं, मगर उनमें ऐसी घटना एक भी नहीं। फाँसी के कैदी का भाग जाना और भाग जाने पाना-कमाल है। अरे, इस मामले में जेल का सारा स्टाफ बदल दिया जाएगा- बड़े साहब से लेकर छोटे जमादार तक। लोग तनज़्ज़ुल होंगे, सो अलग।'

इसी समय रामरूप जेल के फाटक से बाहर आता दिखाई पड़ा। सबकी नज़र उस पर पड़ी।

'वह देखो', एक ने कहा- 'वह बाहर आया, ओह, कैसी लाल हैं आज उसकी आँखें। कैसे उसके होंठ फड़क रहे हैं। जरा बुलाओ तो इधर। पूछा जाय कि भीतर क्या हो रहा है।' 'क्या हो रहा है रामरूप?' अपनी ओर बुलाकर वार्डरों ने उससे दरियाफ्त किया- 'क्या कलेक्टर के आगे तुम्हारा नाम भी लिया जा रहा है?'

'नहीं बाबू,' उसने दाँत किटकिटा कर कहा- 'आप लोगों की दया से मेरा नाम तो नहीं लिया जा रहा है। वह छोकरा भी इस बारे में चुप है। कुछ बोलता ही नहीं, सिवा इसके कि- हाँ, मैंने ही उस डाकू को भगा दिया है। मैंने ही मारा भी है उस वार्डर को। मेरी सहायता में और लोग भी थे, मगर मैं उन्हें इस बारे में नहीं फँसाना चाहता। मेरी सज़ा हो, मुझको फाँसी दी जाय, मैं तैयार हूँ।' 'फिर क्या होगा, रामरूप' एक ने पूछा- 'लच्छन कैसे दिखाई पड़ते हैं।'

'क्या होगा, इसे आज ही कौन बता सकता है जमादार साहब?' उसने नीरस उत्तर दिया- 'अभी तो सरकार उस डाकू और उसके साथियों को पकड़ने की कोशिश करेगी। इसके बाद उस साले भिखमंगे को फाँसी दी जाएगी, इसमें कोई सन्देह नहीं, वह पाजी जरूर फाँसी पर ल टकाया जाएगा। मैं फाँसी पाने वालों की आँखें पहचान जाता हूँ और सच कहता हूँ कि भैरव बाबा की दया से मैं उस शैतान के बच्चे को मृत्यु के झूले पर टांगूँगा।' न जाने क्या विचार कर रामरूप एकाएक उत्तेजित हो उठा- 'इन्हीं हाथों से मैंने अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़ों को फाँसी पर टाँग दिया है। सच मानना जमादार साहब, आज तक चार बीस और सात आदमियों को लटका चुका हूँ। अब यह साला आठवाँ होगा, हाँ, हाँ, आठवाँ होगा-आठवाँ होगा।' उत्तेजित रामरूप उस भीड़ से दूर एक ओर तेजी से बड़बड़ाता हुआ बढ़ गया। उस समय उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई। मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि धीरे-धीरे वह क्रूर हृदय जल्लाद उस अलियार को प्यार करने लग गया था। अलियार उस दिन बिलकुल सच कह रहा था। क्योंकि सेशन अदाल त से, और किसी प्रामाणिक मुजरिम के अभाव में और प्रमाणों के आधिक्य से, अलियार को फाँसी की सजा सुनाई गई, तब वही रामरूप कुछ ऐसा उत्तेजित हो उठा कि पागल सा हो गया।

'हा हा हा हा?' वह अदालत के बाहर ही निस्संकोच बड़बड़ाने लगा- 'अब लूँगा- अब बच्चू से लूँगा बदला। क्यों न लूँ बदला उससे? मैंन सरकारी हुक्म से उसको, उस दिन बेंत मारे थे, जिसका उसने मुझसे ऐसा भयानक बदला लिया है। मेरी रोजी मारते-मारते बचा। वह तो बचा ही, उस पापी ने मेरी औरत को अपने प्रेम में खाट पकड़वा दी है। अब भोगो बेटे, अब झूलो पालना बच्चू। हा हा हा हा।' यद्यपि अलियार की फाँसी की सजा सुन कर जल्लाद अट्टहास कर उठा, पर मेरा तो कल ेजा धक् से होकर रह गया। मुझको ऐसी आशा नहीं थी कि जिस कहानी का आरम्भ, उस दिन जेल के कोने में, अलियार और जल्लाद से मेरे परिचित होने से हुआ था, उसका अन्त ऐसा वीभत्स होगा। मैंने बड़े दुख के साथ, उस दिन यह निश्चय किया कि अब मैं कभी उस रामरूप के सामने न जाऊँगा।

मगर संयोग को कौन टाल सकता है? जिस दिन अलियार को दुनिया के उस पार फेंक देने का निश्चय हो गया था, उससे एक दिन पूर्व मैंने उसको अन्तिम बार पुनः देखा। हाथ में एक हाँडी लिए परम उत्तेजित भाव से वह शहर की एक चौमुहानी पर खड़ा था और उसको घेरे हुए लड़कों, युवकों और बेकारों की एक भीड़ खड़ी थी। अजीब-अजीब प्रश्न लोग उस पर बरसा रहे थे और वह उनके रोमांचकारी उत्तर दे रहा था। किसी ने पूछा-'तुम कौन हो भाई...' 'मैं?' वह मुस्कराया- 'मैं महापुरुष हूँ। आह, पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि मैं महापुरुष क्यों हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो खानदानी जल्लाद रामरूप हूँ। पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि प्रत्येक जल्लाद महापुरुष होता है।' 'अच्छा यार,'एक ने कहा-'हमने मान लिया कि तुम महापुरुष हो। पर यह तो बताओ कि आज यहाँ' इस तरह क्यों खड़े हो?'

'यह हाँडी,' उसने हाँडी का मुँह भीड़ के सामने किया- इसमें फाँसी की रस्सी है जरूर, यह असली नहीं है। असली रस्सी तो दुरुस्त करके आज ही जेल में ऐसे ही एक बरतन में रख आया हूँ। वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मजबूत है। इसको तो केवल अभ्यास के लि ए अपने साथ लेता आया हूँ।

आज रात भर इन उस्ताद हाथों को फाँसी देने का अभ्यास जोर-शोर से कराऊँगा। क्योंकि इस बार मामूली आदमी को नहीं लटकाना है। इस बार उसको लटकाना है, जिसके झूलते ही कोई आश्चर्य नहीं, जो मेरी औरतिया भी इस दुनिया से कूच कर जाये, क्योंकि वह उस पापी को प्यार करती है। किसी ने कहा-जरा अपने गले में इस रस्सी को लगा कर दिखाओ तो रामरूप कि फाँसी की गाँठ कैसे दी जाती है? 'हाँ, हाँ' उसने रस्सी को अपने गले में चारों ओर लपेट कर, गाँठ देना शुरू किया। 'यह देखो, यह गले का कण्ठ है और यह है मेरी मृत्यु-गाँठ। बस, अब केवल चबूतरे पर खड़ाकर झुला देने की कसर है। जहाँ एक झटका दिया कि बच्चू गए जग-धाम। यह देखो...यह देखो...।' अपने गले में उस रस्सी को उसी तरह लपेटे वह उन्मत्त रामरूप हाँडी फेंक कर, भीड़ को चीरता हुआ एक ओर बेतहाशा भाग गया।

दूसरे दिन अलियार को फाँसी देने के लिए जब सशस्त्र पुलिस, मैजिस्ट्रेट, जेल-सुपरिन्टेंडेंट और अन्य अधिकारी एकत्र हुए तो मालूम हुआ कि जल्लाद रामरूप हाजिर नहीं है। पुलिस दौड़ी, जेल के वार्डर दौड़े, उसको ढूँढने के लिए। मगर वह मिल न सका। न जाने कहाँ गायब हो गया। अलियार को उस दिन फाँसी नहीं हो सकी। मगर उसी दिन दोपहर को कुछ लोगों ने रामरूप को शहर के बाहर एक बरगद की डाल में, फाँसी पर टँगे देखा। उसकी गर्दन में वही रस्सी थी, जिसको कुछ घण्टे पूर्व शहर के अनेक लोगों ने उसके हाथ में देखा था। उस समय भी उसकी आँखें खुली, भयानक और नीरस थीं। जीभ मुँह से कोई बारह अंगुल बाहर निकल आई थी कि बड़े-बड़े हिम्मती तक उसकी ओर देख कर दहल उठते थे। ■

पांडेय शर्मा 'उग्र'

('चाँद' के फाँसी अंक से)

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

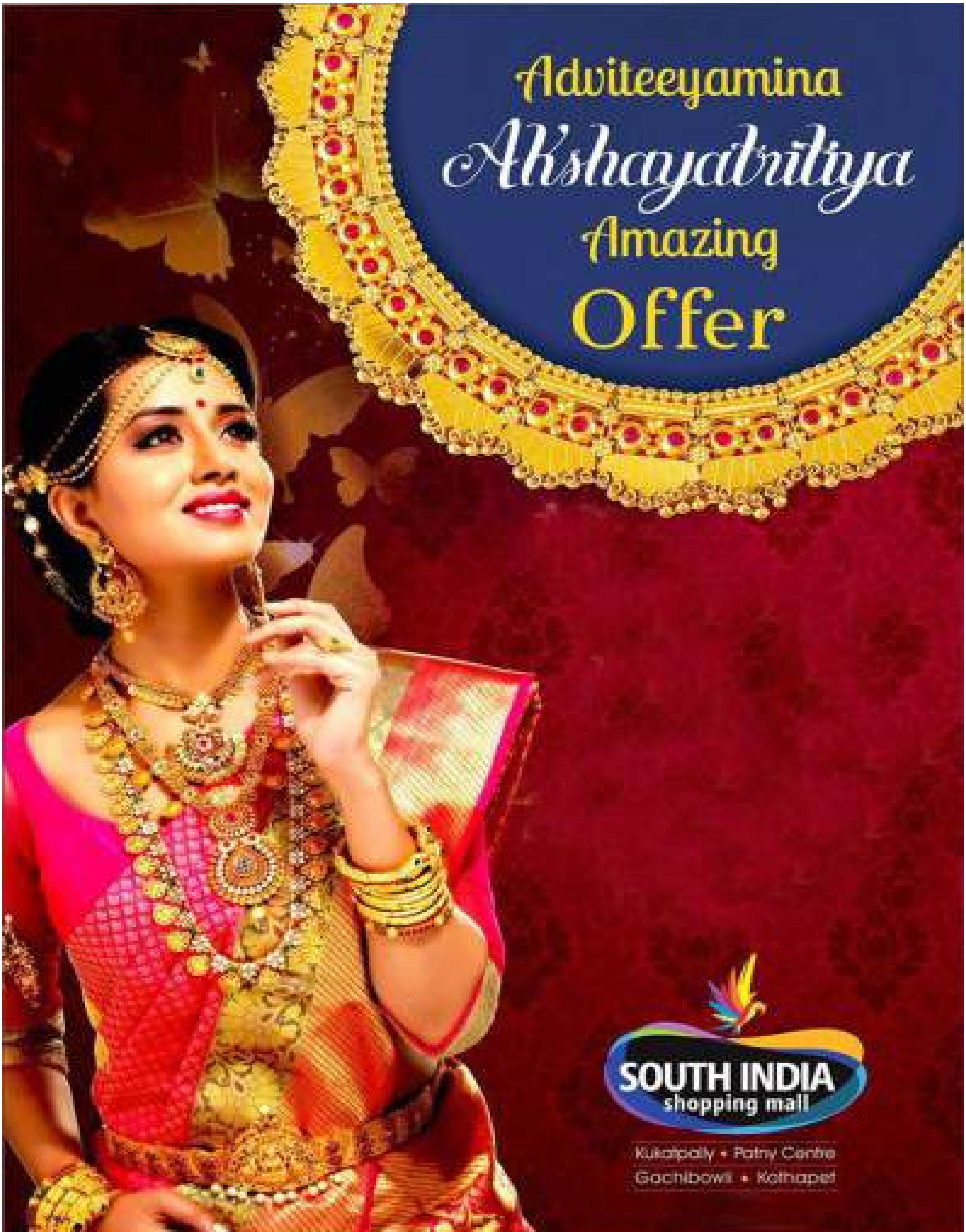
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. : ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

नींबू की खेती

भारत समेत दुनिया भर में इन दिनों नींबू की कीमत में आग लग गई है. आमतौर पर ५० से ₹७० किलो बिकने वाला नींबू अभी ₹४०० प्रति किलो के भाव को छूने लगा है. नींबू में कई तरह के औषधीय गुण होते हैं. नींबू की खेती किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकती है.

कई राज्यों के किसान नींबू को कैश क्रॉप की तरह इस्तेमाल करते हैं. दिल्ली और आसपास के इलाके में भी किसान पारंपरिक खेती को छोड़कर नींबू की खेती करने लगे हैं. अगर बात भारत के नींबू उत्पादक राज्यों की करें तो महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, पंजाब-हरियाणा, पूर्वी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के साथ अब दिल्ली के आसपास के इलाके में भी नींबू की उपज हो रही है.

नींबू में औषधीय गुण मौजूद होने के कारण इसके फलों का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है. नींबू में विटामिन 'सी' के अलावा विटामिन 'ए', विटामिन 'बी-१', लौह, फास्फोरस, कैल्शियम, प्रोटीन, रेशा, वसा, खनिज और शर्करा भी मौजूद होते हैं.

नींबू के फल में ४२ से ५० प्रतिशत तक रस निकलता है. नींबू रस का प्रयोग स्क्वैश, कोर्डियल और अम्ल आदि बनाने के साथ-साथ रोजाना के खाने में भी होता है. नींबू का रस पीने से शरीर में ताजगी एवं स्फूर्ति पैदा होती है. इसके फलों से स्वादिष्ट अचार भी बनाया जाता है. यही नहीं नींबू के छिलकों को सुखाकर विभिन्न तरह के सौंदर्य प्रसाधन भी बनाये जाते हैं. इन सभी विशेषताओं के कारण इसकी मांग सालों भर बनी रहती है.

नींबू की खेती में १ एकड़ में करीब ३०० पौधे ल गाए जाते हैं. नींबू का पौधा तीसरे साल से नींबू का फल देने लगता है. नींबू के पौधों में १ साल में तीन बार खाद डाला जाता है. आमतौर पर फरवरी, जून और सितंबर के महीने में ही नींबू में खाद डाल ा जाता है. नींबू का पेड़ जब पूरी तरह तैयार हो जाता है तो एक पेड़ में २० से ३० किलो तक फल मिल सकते हैं. मोटे छिलके वाले नींबू की उपज ४०

नींबू के औषधीय गुण
विभिन्न तरह के सौंदर्य प्रसाधन
नींबू में साल में दो फल
नींबू के पौधे के लिए मौसम

नींबू का पौधा सहिष्णु प्रवृत्ति का होता है, जो विपरीत स्थितियों में भी सहजता से पनप जाता है. अच्छा उपजे लेने के लिए उपोष्ण तथा उष्ण जलवायु सर्वोत्तम मानी गई है. ऐसे क्षेत्र जहां ठंड कम पड़े वहां नींबू के पौधे को आसानी से उगा सकते हैं. नींबू की खेती हर तरह की मिट्टी में की जा सकती है. इसके पौधों की समुचित बढ़त एवं पैदावार के लिए बलुई और बलुई दोमट मिट्टी उत्तम है.

नींबू के पौधे की सिंचाई

नींबू के पौधे रोने के बाद सिंचाई अवश्य करें. इसके बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी बनाये रखें, खासकर पौधों के रोपण के शुरुआती ३-४ हफ्ते तक. इसके बाद एक नियमित अंतराल पर सिंचाई करते रहें. नींबू के पौधों की सिंचाई थाला बनाकर अथवा टपक सिंचाई विधि से कर सकते हैं. सिंचाई करते समय यह ध्यान रखें कि पानी, पौधे के मुख्य तने के संपर्क में न आए. इसके लिए तने के आसपास हल्की ऊंची मिट्टी चढा दें.

खाद की सही मात्रा जरूरी

नींबू के पौधों में निकलने वाले फूलो का रंग सफ़ेद होता है, किन्तु पूर्ण विकसित हो जाने पर इसके फूल पीले रंग के हो जाते हैं. नींबू के पौधे में खाद एवं उर्वरक की मात्रा मिट्टी की उर्वरक क्षमता एवं पौधे की आयु पर निर्भर करती है. सही मात्रा का निर्धारण करने के लिए मिट्टी की जांच जरूरी है. यदि संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरक डाली जाए तो नींबू की अच्छी उपज के साथ-साथ खेत की मिट्टी के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जा सकता है

किलो तक हो सकती है, लेकिन उसकी कीमत कम होती है.

नींबू के पेड़ पर साल में दो बार फल लगते हैं. एक बार नवंबर में और दूसरी बार मई जून के महीने में. एक एकड़ में नींबू की खेती से सालाना ₹५-७ लाख तक कमाए जा सकते हैं.

नींबू के पेड़ को नुकसान पहुंचाने वाले कई कीड़े और बीमारियां हैं. नींबू के पेड़ों की कटाई छटाई करना अनिवार्य है. नींबू की सूखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर हटा दें. मुख्य तने पर लगे बोरर छिद्र को साफ कर उसमें पेट्रोल या मिट्टी तेल से भीगी हुई रुई ठूसकर बंद कर दें. मकड़ी के जाल ों तथा कैंसर से ग्रसित पत्तियों को साफ करें. डालि यों के कटे भाग पर बोर्डो पेंट लगाएं.

भारत में लगभग सभी घरों में नीबू का उपयोग किया जाता है नींबू की उत्पत्ति भी भारत में ही हुई थी इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों द्वारा यही माना जाता है कि नींबू की उत्पत्ति भारत में ही हुई नींबू की खेती (च्स्ंल्र व व्यूग) करके हमारे किसान भाई काफी अधिक मात्रा में मुनाफा कमा सकते हैं क्योंकि इसे अधिक मुनाफे वाली खेती के रूप में जाना जाता है। एक बार नींबू के पौधे तैयार हो जाने के बाद कई सालों तक लगातार फलों का उत्पादन देते हैं इसीलिए नींबू की खेती कम खर्च और अधिक मुनाफे वाली फसल होती है इसकी फसल केवल एक बार लगाकर किसान भाई १० से १२ साल तक लगातार उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं और यह भी माना जाता है कि दुनिया भर में सबसे अधिक नींबू का उत्पादन करने वाला देश भारत है नींबू का सबसे अधिक मात्रा में उपयोग खाने में किया जाता है। खाने के अलावा भी नींबू का उपयोग विभिन्न प्रकार के अचार बनाने में इस्तेमाल किया जाता है इस समय नींबू बहुत ही उपयोगी हो गया है क्योंकि इसका उपयोग कई प्रकार की कॉस्मेटिक कंपनियों और फार्मासिटीकल कंपनियां भी कर रही है यही कारण है कि किसान भाई नींबू की खेती करके कम लागत में काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं

नींबू की कलम किस महीने में लगाई जाती है

नींबू की कलम लगाने का सबसे अच्छा समय वसंत ऋतु (मार्च-अप्रैल) का होता है तथा गर्मियों के दिनों में इसकी कलम को (मई-जून) के महीनों में ल गानी चाहिए क्योंकि इस समय मौसम हल्का गर्म होता है तथा मौसम में नमी की भी अच्छी मात्रा पाई जाती है जो कलम को फूटने के लिए अनुकूल होती है। कलम से तैयार किए गए पौधों का एक बहुत बड़ा लाभ यह होता है कि पेड़ बहुत जल्दी फल देने लगते हैं और रोग प्रतिरोधी भी होते हैं।

कलम लगाने के लिए एक स्वास्थ्य और अच्छी विकसित पेड़ से ६ इंच लंबी तथा १/२ इंच मोटी कलम लेनी चाहिए।

इस कदम के नीचे की पत्तियों को हटा दें और ऊपर के हिस्से की पत्तियों को छोड़ दें.

इसके बाद कलम के नीचे के हिस्से को १/२ इंच की गहराई तक मिट्टी लगा देना चाहिए। इसके बाद मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए कलम को नियमित रूप से पानी देते रहते हैं.

आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि कलम लगाने से पहले मिट्टी में नमी होनी चाहिए।

कलम लगाने के २ से ३ महीने बाद जड़े निकलने लगती है. जिसके बाद अपने खेती वाले स्थान पर इसको रोपित किया जाता है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532